फोन : ६६८५

मैथिली-गीताञ्जलि ।

सम्पादक—

श्रीकालीकुमारदास ।

(लब्धराजकीयधौतप्रतिष्ठा)

ग्राम-भक्षी ।
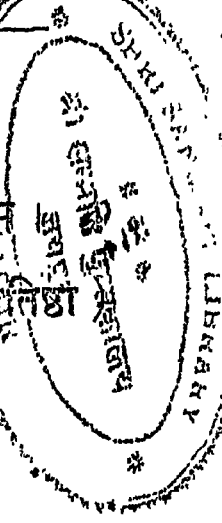
प्रकाशक—

श्रीआनन्दविहारी प्रसाद ।

हिन्दीसाहित्यकार्यालय,

लहेरियासराय ।

प्रथमवार] [मूल्य १।)

प्रकाशक—
श्रीआनन्दविहारी प्रसाद ।
हिन्दीसाहित्य कार्यालय,
लहेरियासराय ।

मुद्रक—
जयकृष्णदास गुप्तः—
विद्याविलास प्रेस, गोपालमन्दिर के उत्तर फाटक,
बनारस सिटी।

समर्पण

विद्वद्वर, धार्मिक, साहित्यप्रेमी परम स्नेहालु,

मैथिलीक एक

मात्र आशा

ओ,

कर्णधार-पारावार सँ,

बचौनहार—

श्रीमान् कामेश्वरसिंह, साहेब

महाराजकुमार,

दरभङ्गाक

पाणिसरोरुह में—

अत्यन्त विनीत, आदर भाव सँ

समर्पित ।
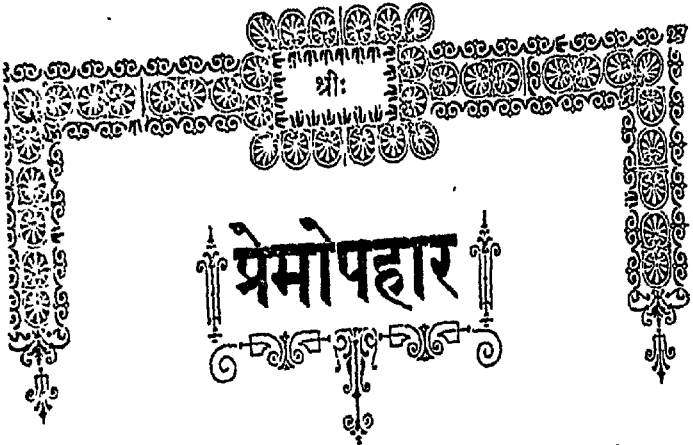
श्रीः
प्रेमोपहार
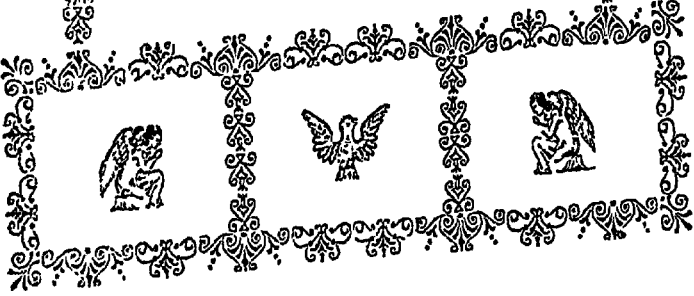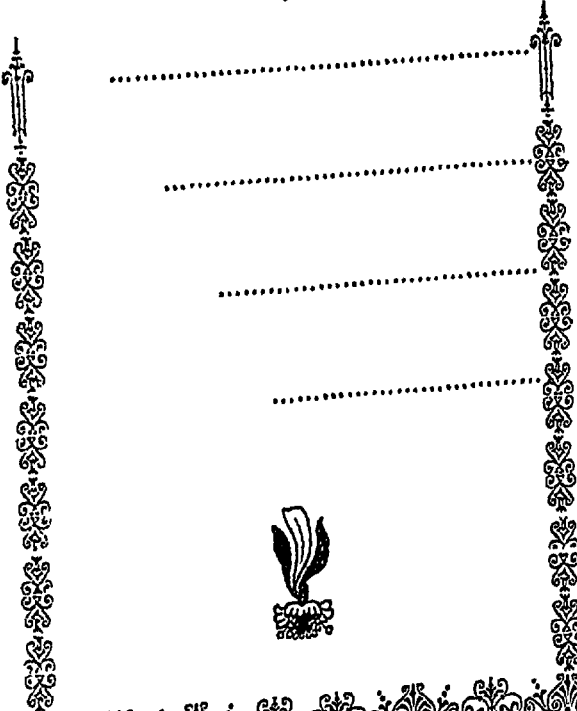
भूमिका।

प्रिय मैथिलवर्ग! अपने लोकनि कतेक मैथिल गीत एवं मैथिल गीतक छपल पुस्तक देखने होयब! किन्तु कहल जाय जे विद्यापति, विद्यापति पदावली, कोकिल प्रभृति ग्रन्थ केहन गीत अशुद्ध मिथिला भाषाक सहित अछि! श्री रामलोचन शरणक विद्यापति पदावली तँ सद्यः बाबू नगेन्द्रनाथ सेनक विद्यापति कें यथातथ्य संख्या में न्यूनाधिक कै, किछु चित्र, किछु नोटक सङ्ग प्रकाशित कैने छथि।

एहन २ पुस्तक क संस्करण सँ, ई निश्चय जानल जाय, जे मिथिला भाषाक मिथ्यारूप दैत, कुत्सित भाषा सिद्ध करैत तेकर दुर्दशे मात्र करब थिक। वैह ग्रन्थ यदि अपटु मैथिलक हाथ सँ सम्पादित होइत तँ अवश्य अधिक अंश में शुद्ध रहैत। लाभ एतबे, जे उपर्युक्त पुस्तक प्रकाश भेल! हानि भाषा क दृष्टियें जे भेल से अनुमान करिते होयब।

एहि सब में "मिथिला गीत संग्रह" ४रु भाग पुस्तक रखवाक योग्य अछि इतर देखैक योग्य। अस्तु,

मिथिला क स्त्रीगण विशेष २ अवसर पर मंडली बान्हि विशेष २ गीत गबैत छथि। विधि-व्यवहार-किंवा यथावसरक गीत सबकें जनले रहैत छन्हि, किन्तु से कखन जखन ओ पूर्ण युवती अथवा ताहू सँ उर्द्ध अवस्था पर पहुंचैत छथि

तखन। ताहू पर अशिक्षिता रहबाक कारणें रूपान्तरमें लिखने रहै छथि।

अतएव एक एहन पुस्तकक आवश्यकता बहुत दिन सँ देखि पड़ैत छल जे विधि-व्यवहार-यथावसरक गीत किंवा, अन्यान्यो पुरान की नव २ गीतक एक ग्रन्थ यथासाध्य शुद्ध मैथिलीक रूप में सुन्दर कागज, छपाई ओ कम दाम में सर्व साधारणक उपयुक्त प्रस्तुत हो।

प्रकाशक महाशय एहि आवश्यकता कें दूर करबा निमित्त चिरकाल सँ प्रयास में छलाह। यद्यपि ओ मैथिल होयबाक यैह दावी कै सकै छथि जे बहुत काल सँ लहेरियासराय में सपरिवार छथि-तथापि मैथिलीक परम भक्त ओ मिथिलाक हितेच्छु में सँ छथि। लेखक कें भार दै ओ स्वयं सेहो प्रयास में छलाह।

तें ३ सर्ग क ई ग्रन्थ मैथिलीगीताञ्जलि नामक प्रस्तुत कैल गेल॥

१—सर्गः—एहि सर्ग में विधिव्यवहार क पुरातन की नवीन गानोपयुक्त गीत सब संग्रहीत अछि जेकरा गाइन लोकनि अनायास सीखि यथावसर आनन्द उठा सकै छथि।

२—सर्गः—राधाकृष्ण ओर हुनक सखिसबक ब्याजें गानोपयुक्त कतिपय ललित गीत अछि।

३—सर्ग में विविधिप्रकार क भजन ओ गीत अछि।

यथासाध्य नोट कठिन २ गीतक हेतु दै देल गेल अछि जाहि सँ अपने किंवा पूज्या बहिनि लोकनिकाँ गीतक मर्म बुझि जेवा में भाँगठ नहि होइन्ह।

भूमिका।

प्रस्तुत ग्रन्थ क संपादन में विद्यापति, विद्यापति पदावली, कोकिल एवं मिथिलागीत संग्रहक साहाय्य लेल अछि। कतहु २ श्रीजयदेवक गीतगोविन्दक कतेक गीत मैथिली में तत्तराग में अनुवादित दै देल गेल अछि॥

सारांश जे तात्पर्य कें सफल करवाक पूर्ण प्रयत्न कैल गेल अछि। तथापि मैथिलीक गीतक विशेष संग्रह भेनहि एक दोसर महाभारत भै जायत क्यैक तँ साहित्य दृष्टियें ई अंश मैथिलक विशेष प्रकारें पूर्ण अछि। प्रायः एहेन भाग्य बहुत साहित्यकें एहि रूपें नहिं अछि॥

एहि हेतु उपर्युक्त ग्रन्थकार, सम्पादक लोकनि काँ हम परम अनुग्रहीत भेल धन्यवाद दैत छियैन्ह।

अन्ततः पूर्णांशा जे, सहृदय भाई बहिन, किछुओ लाभ क दृष्टि यें एकहु भजन क आलाप करताह तँ परिश्रम सभक सफल होयत॥ इत्यलम्॥

भत्ती।
ता: २९-५-२७।

"कुमर।"

केवल एक बात।

हम एक "मैथिल साहित्य माला" शीर्षक पुस्तकप्रकाशनक क्रम स्थिर करब निश्चित कैल अछि। तकर तात्पर्य की?—

१—शुद्ध मैथिली में ग्रन्थ बहरायल करय।

२—समयानुकूल ओ उपयोगी हो।

३—मैथिलत्वक रक्षा ओ स्मार्त्त धर्मक रक्षा हो।

४—यथोचित स्त्री शिक्षाक प्रचार हो।

५—आख्यायिका, प्रहसन, किंवा उपन्यास द्वारा मैथिल समाजक त्रुटिक दिग्दर्शन, कराय तकरा दूर करयबाक हेतु उत्साह दी॥

६—प्राचीन ग्रन्थ के द्रव्यहुँ लगौने प्रकाशित कैल करी।

सारांश, जे एहिक्रमें मैथिलीसाहित्यभाण्डार में अनेक लुप्तप्राय सामग्री पुनः संग्रहीत हो, सैह।

एहि हेतु हम समस्त मैथिल लोकनिसँ साञ्जलि प्रार्थना करबैन्ह, जे ओ लोकनि एहि कार्य में हमरा पूर्ण साहाय्य देथि। प्राचीन ग्रन्थ, काव्यग्रन्थ, उपन्यास, नाटक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक उपयोगी ग्रन्थ जँ प्रेषित करताह तँ तकर प्रकाशनक पूर्ण व्यवस्था-पूर्वक कैल जायत। देखल जाइछ, जे द्रव्याभाव सँ कतोक ग्रन्थ सड़िये रहल अछि।

केवल एक बात।

तावत् मालाक,

(१) बालक्रीड़ा (खेल)

(२) कामिनीक जीवन (सामाजिक आख्यायिका) एवं

(३) मैथिली गीताञ्जलि, प्रकाशित भेल अछि ।

आशा जे बहुत शीघ्र "मैथिलीव्याकरण" ओ "मैथिली-रचनाविचार" मैथिलोपयुक्त अपने सभक करकमलस्थ कैल जायत ।

इति।

विनीत—

प्रकाशक

मैथिलीगीताञ्जलि

(सटिप्पणि)

प्रथम सर्ग ॥

१—भगवतीक गीत ॥

जय जय भैरवि असुर भयाउनि-पशुपति भामिनि माया ।
सहज सुमति गति दिअ गोसाउनि-तुअ अनुगति गति पाया ॥
वासर रैनि शवासन. शोभित चरण चन्द्रमणि चूड़ा ।
कतोक दैत्य मारि मुख मेलल कतोक उगिल कैल कूड़ा ॥
सामर चरण नयन अनुरञ्जित जलद जोक फुल कोका ।
विकट कटाक्ष ओठ उठ पांडरि-लिधुर सहित उर फोका ॥
विद्यापति कवि तुअपद सेवक, पुत्र विसरु जनि माता ॥

असुर=राक्षस; भयाउनि=डेराओन; पशुपति=महादेव; भामिनि=स्त्री; पशुपतिभामिनि=उमा; गौरी ॥ अनुगति=प्रेम; पाया=पैर । वासर=दिन; रैनि=राति; शवासन=शव (मृतक) रूप महादेव पर चढलि; चरणचन्द्रमनिचूड़ा=पैर में चन्द्रमासन आभूषण; मेलल=गिड़लन्हि; सामर=कारी; चरण=रङ्ग; अनुराञ्जित=शोभित;

२ ऐजन ।

जगजननी मा गोचर मोर । भेल ने के शरणागत तोर ॥
सबहिं तुरत समुचित फल पाव । हमर विकल मन दशदिश धाव ॥
की तोहि पड़ल गरुअ अपराध । जैं मोर भेल मनोरथ बाध ॥
होउ प्रसन्न मा ! दुरि करु रोष । सहज छमिअ सब बालकदोष ॥
कर जोरि कर दामोदर भान । सदय मातु किछु दिय वरदान ॥

---

३ ऐजन ।

शवशिव चढ़लि शिवासौं घेरलि श्मशान बिच माता ।
कर खप्पर ओ तिख कृपान कर निशिचर सिर करु घाता ॥
तीनि नयन जनु कोक कोष थिक तिमिर सघन अलकाली ।
लहलह जीभ रुधिर सौं लोहित असुर लिधुर पिव गाली ॥
नील जलद तन तेज तेजवर अरि कर आंचर शोभा ।
मुनि जन वन्दि वन्दि शिर नावथि असुर सकल मन छोभा ॥
दक्षिणकाली सामरि शोभा जगजननी मम माता ।
सदय मातु रहु निज अघमय मन कुमर अरप तुअ हाथा ॥

जगजननी=जगदम्बा; गोचर=विनय; गरुअ=कठिन; बाध=हानि; सदय=दयालु ।

शव शिव=मृतक रूप महादेव; शिवा=गीदड़; कर=हाथ; तिख=तेज; कृपान=तरुआरि; निशिचर=राक्षस । कोक=कुमुद फूल; कोष=कोसा; तिमिर=अन्धकार; अलकाली=केशसमूह; लोहित=लाल; गाली=घट घट; छोभा=शोक; अघमय=पापी । अरप=अर्पण करैछ ॥

४ ऐजन ।

तुअ पद सेवव हमे जगमाई ॥
अनुपम एहन कतै सुख पायव मोक्षहुं नहि समताई ॥
नयनक जलसँ चरण कमल धोए, हृदय धरव हरखाई ।
मनक धूप दै चित दै पूजब सहस सहस गुन गाई ॥
चरन प्रसेदि अपन शिर अरपव चरनहु नीर नहाई ।
किछु जँ माँगव, माँगब पद रति 'तखनहि कुमर कहाई' ॥

---

५ श्रीराधाकृष्ण भजन ।

जय जय राधा कृष्ण मुरारि ॥ ध्रु० ॥
जय गोकुलपति विनय पुकारि, अवला लोकक करह पुछारि ॥
ग्वाल वाल गोपी सहचारि, हमर ध्यान तैं देलह टारि ॥
लक्ष्मी रोखल छलि परतारि, तैं नहिं आरत सुनह पुकारि ॥
ग्राह धयल गज जखन पछारि, गजकें देलह तखन उधारि ॥
द्रौपदि चीर दुशाशन टारि, तखन बचौलह हुनक उघारि ॥
"कुमर" ज्ञान भल देव विचारि, हमरा आवने दिय प्रभु टारि ॥

अनुपम=अपूर्व; समताई=बराबरि; सहस=हजारो । प्रसेवि=जांति । पद-रति=पैरक भक्ति ॥

सहचारि=संग संग घुमनहार; आरत=करुनामय; चीर=वस्त्र; उघारि=इज्जति ।

६ भजन ।

हमर दुख नहि कठिन हे प्रभु ॥
दुइ दिशि रण युधल योधा सूचि ससरिने सकथि हे प्रभु ।
ततै लाया चारु रच्छल हमर तेहन ने सघन हे प्रभु ॥ १ ॥
पूतना वक कंस दुर्धर सबहिं पर्वत काय हे प्रभु ।
मारि पटकल हटल दुख सब हमर दुख नहि तेहन हे प्रभु ॥
हाथ लै पर्वत उठाओल, ग्राह मुख सँ धयल हे प्रभु ।
भक्त गजक उधार कैलहुं हमर गाढ़ ने ओहन हे प्रभु ॥
तखन किय नहिं द्रवित होअह छमह जत अपराध हे प्रभु ।
कुमर मन मति हमर जौं खल सुमति दाता अहँइ हे प्रभु ॥

---

७ पार्वती भजन ।

*जनु जाउ हे, उमा हे उम्हर दिशवा
जनु जाउ हे उमा हे उम्हर दिशवा ॥
कोर लेल गनपति कातिकहिं हाथ
सिंह चलु पाछु पाछु दुरदुट पाथ ॥ उ० दि० ॥
पहिरन उमा केर दछिनक चीर
आंखि रे भरल जल जमुना क तीर ॥

सूचि=सूइ । चारु=बच्चा; दुर्धर=कठिन; पर्वतकाय=पहाड़ सान शरीर वाला, द्रवित=दयालु । खल=दुष्ट ।

दुरदुट=डेराओन; पाथ=रस्ता । दछिनक चीर=छींट; आंखिरे......तीर अर्थात् जमुनाक धारक जल समान हुनक आंखिसँ नोर वहैत छल ।

* देखि भँगिया भिखारि सोचथि मयना; यैह लय ॥

सोन सनि दाइ रुसि चललि कनाय
बुढ़वा के कोन गति मन पछताय ॥
वाट रे बटोहिया कि धरु अगु आय
भाँग हमर पिसि देथु कहु जाय ॥
आब ने कहब गौरा कालिक नाम
धरब सतत छन निज मन धाम ॥
गनपति कातिकक करब पुछारि
कुमर घुरह उमा बुढ़बा विचारि ॥

---

८ ऐजन ।

रसिक बुढ़वा रे रसिक बुढ़बा,
रुसि रहलि भवानि रसिक बुढ़बा ॥
नहिराक सुख आज मन पड़ि गेल
सोलहों श्रृंगार तखन कय लेल ॥
घर रे बहारि उमा पाक कै देल
बुढ़वाक सेज साँझहि पड़ि गेल ॥
खेत देखि शिव घर जों अयलाह
सोलहो श्रृंगार देखि कहि उठलाह ॥
आजु तँ देखिय उमा नहिराक बानि
के देल सोन चानि नहिरहि आनि ॥
विहुसि कहल उमा हमे की भिखारि
त्रिभुवन पति पति मोर त्रिपुरारि ॥
शिवक मलिन मुख विकसित भेल
खोज ने पुछारि उमा नहिरासँ भेल ॥

पाक=भानस; बानि=ठाठ । विकसित=प्रसन्न ।

से सुनि उमा मुख रहलि घुमाय
कुमर हरथु दुहु अँहक वलाय ॥

१ शिव भजन ।

शिव, शिव एहन ने करह विचार ॥ ध्रु० ॥
हम मानुष दुर्बुद्धि ज्ञान विनु, माया पड़ल पसार ।
सब खन भूख तृषा आकुल हम, पापी चोर जुआर ॥
कखनहु ध्यान गान पूजा जल, देल ने तोहर दुआर ।
भ्रम भँवरी विच पड़ल नाव शिव, देखि ने आव उधार ॥
धन सुन्दरता वल वश हे प्रभु, कैलहुँ कत कुविचार ।
युवा वयस थिक, यम पथ सन्मुख, के मोर करत उवार ॥
तरुणी तरुण नारि पति से सुख, वड़ वड़ कयल देखार ।
मरइक वेरि काजके आएल, दुरदुर लोक पुकार ॥
द्वार द्वार भिच्छाटन कैलहुँ, किओ प्रभु करह उधार ।
सब क्यो ललकि ललकि मुख मोड़ल, यैह वुझल संसार ॥
आरत हर. अघहर, अशरनधर, शिवशिव वेद पुकार ।
पिता हमर माता छह सव छह, तुअ विनु की परकार ॥
तैं वश कुमर अपन मन अरपल, दोसर कोन अधार ।
राखह की फेकह दानी छह, वड़ सुनलहुँ उपकार ॥

वलाय=दुख ।

भ्रम=भँवरी=भ्रमरूपी जलक वेग । यमपथ=मृत्यु । दुरदुर=धिक्कार ।
आरतहर=दुखहटौनहार; अघहर=पापमेटनहार; अशरनधर=अनाथक
मालिक; शिव शिव=भल कैनिहार महादेव । परकार=उपाय ।

वयस वर्णन (लगन)

१० तिरहुति ।

नारि सुवासिनि जौं रति रूप, नयन सलज मद वस चुप चूप ॥
गत वादर फल वदरिक देल, गत ऋतुपति सँ नवरँग लेल ॥
रतन वयस केदलि थल जानु, मृदु मृणाल दुअ भुज अंह मानु ॥
फूलल तापर कमलक जोड़, चुनि चुनि पुहुप लेथि धनि कोर ॥

मुख पुनिमक शशि भौंहक रेखि
टुटल खसल हिय मुकुलित देखि ॥
खंजनि नयन चपल मदपूर
से शर घातल शिवसन क्रूर ॥
अलक भमर गुहि मुख पर खेल
मुख कमलक रस सब चुसि लेल ॥
अधर कुमुद दल लहुक हिलाय
प्रथम दरश चित फेकल घुमाय ॥

सुवासिनि=सुन्दर सुगन्धि वाली सुन्दरी; रतिरूप=परम सुन्दरी; सलज=लाजवाली; मद=काम । गत वादर=पछिला भदवारि । गत...देल अर्थात् गत वर्षा ऋतु में वेर सन हृदय पर फल भेल; गत...नवरँग (नेवो) तहिना तेकर पश्चात्त वसन्त में से वढिकै नवरंग फल भेल । रतन=सुन्दर (१४ वर्षक;) केदलिथल=केराक थरि; जानु=जांघ । मृदु=कोमल; मृणाल=कमलक डांट । पुनिमक शशि=पूर्णिमाक चान; मुकुलित=कलिआयल । चपल=चंचल । मदपूर=कामभरल । अलक भमर=केशरुपी भ्रमरक गुच्छ । गुहि=एकट्ठाभै ।

अलक तिलक ओ शीशक साज, अभरन पहिरथ मदन समाज ॥
लहु लहु हार गहै नवरंग, केलि करै से अनुपम ढंग ॥
दछिनक चीर पहिरि झमकाय, दछिन पवन संग साथ खेलाय ॥
कुमर भनय हम एकसर साखि, प्रफुल चित्त देखल भरि आँखि॥

---

११ ऐजन।

सोनलता सनि पुहुपित भेलिह भमर करै कत खोज ॥
मुखकर चरन युगल, उर चमकय कतगुन बाटल ओज ॥
(फलाँ) वावा सुतह शयन धरि कथिलै, वर आनह कहु ताकि।
(फलाँ) दाई छेटगरि चुपहि रुदन करे,वयस झलक हियआँकि॥
चुप रहु चुप रहु (फलाँ) देई एखनहि, वावा देथि दूत हँकाय ।
सुपुरुष वर गुनि आनत हे धिया रहु मुख आँचर झपाय ॥
भनथि कुमर रस किछु किछु जागल नयन मदन कर वास ।
मन मन कुमरि रमन सुख चाहय, सुन्दर सुख अवकाश ॥

---

१२ ऐजन।

दुलहिन पढु अय अनुपम पाठ, तेजु कुमारिक साँकरि वाट ।
रति रतिपति गुरु आयल द्वार, मनक मनोरथ होएत उघार ॥
मुख वरु झाँपव हृदय उघार, नवलि लती सहु तरुअर भार ।

अलक तिलक=खोपा सिन्दुर । अभरन=गहना; मदन समाज=काम वढौनहार वस्तु । साखि=गवाही ।

नयन मदन कर वास=आँखि में कामक वास भेल; रमन=केलि क्रीडा ।

अनुपम=अपूर्व; तेजु…वाट=कुमारि अवस्थाक अपन चलनि आब त्यागू। रति-रतिपति=कामदेव ओ तनिक स्त्री । तरुअर=उत्तम वृक्ष ।

मन्दहँसव मन्दहिं अभिसार, गाँथव दुहुजन प्रीतिक हार ॥
खंजनि मीन मरत सहि लाज, चर्चा होइछ करिनि समाज ।
सिंह सुतल चुप साँझहि गेह, सकुचल लाजें केदलि देह ॥
पुनिम हयत नहिं, नहिं पिकभाख, पंकजकें जिउ होयत माख ।
जखन चलव अँह जग उजिआर, एकटक लागत आँखि पथार ॥
तानल कुसुमक शर रह हाथ मनसिज खसता उनटल माथ ।
कुमर भनथि अय होउने ओट, कथिलै करव हमर मत छोट ॥

---

१३ ऐजन ।

रतनवयस अवयव परिपूरल तें चाहह सन्माने ।
अहिनिशि मनसिज चामर ढारय कुन्तल पड़ल मलाने ॥
केश पकड़ि मुखमंडल पर जों अधरहिं पैर गड़ाये ।

अभिसार=चलव । खंजनि–मीन...लाज=खंजनि चालिदेखि माछ आँखि देखि लाजें मरत तेहन अहाँक चालि–आँखि सुन्दर । करिनि=हथिनी सबक । केदलि देह=केराक थंभ । पुनिम=पूर्णिमा; पिकभाख=कोइलिक बोली । माख=डाह । कुसुमक=फूलक । मनसिज=कामदेव । (कामदेव काँ फूलहिंक धनुष ओ फूलहिंक वाण रहै छैक जेकरा लगितहिं स्त्री पुरुषक चित्त चंचल भै जाइछ) । ओट=नुकाएल ।

रतन=सुन्दर (१५) १४ वर्ष वाली । अवयव=अंग २; अहिनिशि= रातिदिन; मनसिज=कामदेव; चामर=बिअनि; कुन्तल=केश–केशरूपी बिअनि डोलवैत २ तेकरा मलान (उदास) कै देलक । मुखमण्डल=वदन; अधरहिं=ठोरहिं ।

केलि करे कत काम, चिबुक द्युति रसबिनु गेल मिझाये ॥
आय देव की, देल सुरस रस मदनक भेलिह चेरी।
मदनक धैसक उरज झपायब, उगत चारि दिन देरी ॥
लहुक हसह मद मातलि कामिनि बहुत करायब माने।
कर धै आनव बहुत जतन कै, हठकें होयब पिसाने ॥
कुमर किछुक दिन गरब गमायब दुरि जायत तुअ माने।
दशदिन यौवन गौरव ईअछि चकमक बिजुरि समाने ॥

---

१४ पेजन।

पट पट युगल सुरस मदमातल वयस सन्धि अनुपामा।
वयस कयल कमला तन रंजन फूल फुलल अभिरामा ॥
चंचल नयन अधर अनुरंजल नयनहिं राखल कामा।
बदरि बढ़िय नवरंग बनाओल मज्जरि लागल श्यामा ॥
कर कोमल, चंचल दृग देखल आँचर साजय नारी।

चिबुक=दाढ़ी; द्युति=तेज। सुरसरस=सुन्दर रस; मदनक=कामदेवक; चेरी=नौकरनी। उरज=हृदयमें जे जन्मय। पिसाने=पस्त, गरब=घमंड। बिजुरि=बिजुली।

पट=छव; युगल=दूइ; पट…युगल=दुई छव अर्थात् १२ अथवा छव, छव एवं दूई अर्थात् १४; वयससन्धि=युवावस्था तथा किशोरावस्थाक बीचक वयस; कमला=लक्ष्मी; तनरंजन=शरीरकें रंगय; अभिरामा=सुन्दर। अनुरंजल=रंगल; कामा=मद। बदरि…श्यामा=बैर बढ़ाय नव नारंजी कैल तापर श्यामरंग मज्जरि लगाओल। दृग=आँखि। नारी=स्त्री।

अभरन पहिरि पहिरि कंचुकि से निज मन रहे परतारी ॥
कुमर प्रथम से दरश मनोहर करत युगल जन लाजे ।
प्रातहिं रभसि रहसि वरु पूछत नागरि सखिक समाजे ॥

---

१७ गेजन ।

मदन विहसि अनुरंजन देल, रतन वयस तन सुरभित भेल ।
प्रथम सुरस लै देल नहाय, आँग उगारल ताहि लगाय ॥
तिलक चयल अनुरंजल भाल, ओ पहिराओल अपरुब माल ।
काजर केलन्हि मद परिपूर, अलक ससारल अलिकुल चूर ॥
रंजल चिबुक अधर रसराज, आँखि समारल अपरुब लाज ।
कमलकली उरसर दुइ आय, तापर मुक्ताहार खेलाय ॥
हार गनय छल उरदिशि हेर, गाँथि पहिर पुन तोड़ल फेर ।
बहुत सिखाओल मद व्यवहार, आँचर दै पुन कहल सँभार ॥
चंचल नयन घुमय चहुओर, मुख मुसकान आव किछु थोर ।

कंचुकि=आँगी, कचुआ । मनोहर=सुन्दर । युगल=दुहू । रभसि=प्रेमसँ; रहसि=एकान्त में; नागरि=चतुरा ।

मदन=कामदेव; विहसि=हसइत; अनुरंजन=रंग; देल चढ़ाओल; तन=शरीर; सुरभित=सुगंधित; उगारल=पोछल, चीकन केल; अनुरंजल=रँगल; भाल=कपार; अपरुब=अपूर्व; मदपरिपूर=मदसँ भरल । अलक=केश; अलिकुलचूर=भँमराकपाँति; उरसर=हृदयरूपी दहमें; मुक्ताहार=मोतिक माला । हार····फेर=नायिका अपन नवीन स्तनकें मालाक दाना गनवाक बहानासँ देखैत छथि पुन देखवाक इच्छा होइ छन्हि तँ माला गाथि पहिरै छथि फेर तेकरा तोड़ि पहिरै छथि ।

चरन चपल भ्रू रहथि घुमाय, देखि पथिक मन हृदय लुटाय ॥
कुमर कुमारिक के इहो रूप, पैसल मदन तखन चुपचूप ॥

१६ ऐजन ।

सुनु सुनु कामिनि मालति रे, से आएल पासे ।
वाम दिशा पहु वैसत रे, पएबह अवकासे ॥
पिउ पिउ भखथु पपिहरा रे, चकई करु आसा ।
नवलि फुलाइलि लतिका रे, खाली भुजपासा ॥
से छुन आवि तुलायल रे, करु सकल सिंगारे ।
आव कहायब कामिनि रे, मोरि देई दुलारे ॥
आज साजि अलि आओत रे, वरु कुमर वखाने ।
मान टुटत तुअ मालति रे, नीरस मुखचाने ॥

१७ ऐ० (निर्भूषण)

परिहर परिहर कमला रे आभूषन रे हो रे,
पानि गहन दिन थोर मिलव जिउ भूषन रे ॥
जनक कयल प्रन केहन रे नहि पहन रे हो रे,
तुअमुख कयल उपेखि कपथु मन जेहन रे ॥
अलक फुजल मुख गोरा रे चित चोरा रे हो रे,
पुनिमक शशि भट उगल जगत उजिओरा रे ॥

भ्रू=भौंह। पथिक=वटोही।

भुजपासा=भरिपाँज। अलि=भ्रमर। नीरस=रस विना।

परिहर=छोड़ू। पानिगहन=विवाह। जिवभूषण=प्राननाथ। प्रन=शपथ; उपेखि=उपेक्षाकै, देखि। शशि=चन्द्रमा।

हेम पुतरि सुन कमला रे अति विमला रे हो रे,
बादरि गेल पड़ाय उगल जनु चपला रे ॥
चलु चलु सुन्दरि लहु लहु रे मनमन कहु रे हो रे,
धनुष टुटथि रघुनाथ हाथ, होअथु पहु रे ॥
राम सनुज फुलवारि, नयनभरि, देखब रे हो रे,
चलु चलु गौरी पूजब रे हुनि पूछब रे ॥
अनय कुमर विचवारी रे फुलवाड़ी रे हो रे,
चारिनयन तँह भेल गेल दुख भारी रे ॥

---

१८ तिरहुति ।

(रामसीता मिलन)

हंसगमनि सखिसब चलिजाय, तारा सखि शशि सीय बुझाय ॥
अनुपम षोड़स कयल सिंगार, चलै धरनि पर मोति पथार ॥
कमला जनु चपला बिच जाय, अकचक खंजनि नयन घुमाय ॥
सबजनि आइलि पितु फुलवारि,तोड़थि पुहुप सकल जनि ठाढ़ि॥
तोड़ल पुहुप तोड़ल बेलपात,फुलल विमलकर जनु जलजात ॥

हेम=सोना; विमला=सुन्दरि । बादरि=मेघ; चपला=बिजुरी; पहु=स्वामी; सनुज=छोटभाइसहित । चारिनयन जँ भेल=सीता श्रीरामक आँखिक मिलान भेल ।

हंसगमनि=हंससनि चलनिहारि; तारा'''बुझाय=तारसब सखी तावीच सीता चन्द्रमा सनि । षोड़स=सोलह; विमलकर=सुन्दरहाथ; जनु=जेना; जलजात=कमल;

सब जनि पुन मिलि कएल स्नान, छानल सरसौं कुन्द समान ॥
अपनहिं चललिह दुई सखि संग, पुहुप लोढ़थि कत करइत रंग ॥
लता ओट भै फुजल नयान, कुमर देखल दुइ काम समान ॥
जेठ सुन्दर वर रघुवर राम, छोट थिकथि थिक लछुमन नाम ॥
सुन्दर राम काम शर मार, लुबधलि सीता सुन्दरि सार ॥
पुनपुन हेरय नयन कटाख, रामकन्त होए मनेमन भाख ॥
पुनपुन हेरय भै तरु ओट, आँखि हटावति बड़ मन छोट ॥
सखिसँग चललि हाथ फुलडालि, भरलनयनसे लहुलहु चालि ॥
कयल भवानिक परम सिंगार, तखन कयल पूजा आचार ॥
कहल जनै छह जे मन माँझ, रमनी होयब काल्हुक साँझ ॥
एखन कुमर वर देखल नयान, राखल हिय मँह प्रान समान ॥
से वर हमर होथु सुनु माय, वर दिय वर दिय कंचनिकाय ॥
से कहि अरपल निजकर माल, गद्गद् थरथर केदलिभाल ॥
कर सौं ससरि खसल से हार, वाम नयन बहु फरक उघार ॥
गद्गद् हृदय पुलक सब गात, प्रनमि कहल पद धै दुहु हाथ ॥
मनोरथ हमर पुरल सुनु माय, हमहुँ करब से तेहन उपाय ॥
भरि मिथिला वर कन्या साथ, पूजि नवाओत दुहु जन माथ ॥
पुन सब हरषि अपन घर गेलि, बजइत गवइत करइत केलि ॥
भनत कुमर कुमरिक पुरे आस, सीतापति पर सब विश्वास ॥

कुन्द=कुमुद। नयान=आँखि; कामशर=कामदेवकशर; लुबुधलि=मोहित भेलि; सुन्दरिसार=सब में पैघ सुन्दरी; कंचनिकाय=सोनक जनिक शरीर होइन्ह; पुलक=रोमांच; प्रनमि=प्रनाम कै।

१९ ति० (धनुर्भङ्ग)

(साँकर)

सुन्नल सखी धनुटुटल राम सुन तोड़ल रे प्यारे,
जते छल राजकुमार आस निज छोड़ल रे ॥
आजु पुरल अभिलाष सुदिन दिन आएल रे प्यारे,
कयल चुमाओन रामक रे सुख पाओल रे ॥
धरु गय कलश सुहागिनि रे सुनु गाइनि रे प्यारे,
परिछय लै चलु राम हरषि मन गाइनि रे ॥
साँकर दै दै जाय नयनसुख पाविय रे प्यारे,
राम चन्द्र हमे चकई नेह लगाविय रे ॥
चलु चलु रघुवर आँगन रे, विधि करु गय रे प्यारे,
कुमरक थिक वड़ भाग वितल दुख विस्मय रे ॥

---

२० ति० ।

जनक कैल प्रन कठिन माइ हे ॥
वज्र पहाड़ धनुषपन टेकल, तोड़ि सकत के कुमर माइ हे ॥
दश दिश देल हँकार जनक नृप राजकुमर सब द्वार माइ हे ।
आजन वाजन वड़ पुन उत्सव दरशक लागल धार माइ हे ॥
अवध देश दशरथ नृप बालक मनमथ सन सुत राम माइ हे ।
सोलह वरस श्याम घन जलभर नगर विहरु अभिराम माइ हे ॥

विस्मय=शोक ।

दरशक=तमासा देखनहार । सुत=बालक; श्याम=श्यामत रंग; घनजलभर=वर्षावाला मेघसन, नील मेघ सन देखइत; विहरु=भ्रमण करै छथि ।

धनुतुरीन लटकल कटि काछिनि सँगसँग लछुमन भायमाइ हे।
देखइत नयन जुड़ल सुनि साफल देखल पथे पथ जाय माइ हे॥
घरक गोसाउनि सुनु जगमाता सीतापति होए राम माइ हे।
कुमर यैह धनि करमक लीखल पूरत तुअ मनकाम माइ हे॥

---

२१ गजल।

पटना जाय वेसाहव परिधन पहिरायव धनि हाथे।
भूपन गुहल धिया धरि आँचर पहिरायव धरि माथे॥
काशीसँ कंगन धिया आनल दछिन चीर मद्रासे।
हार मँगायव नूपुर मनिमय कुमरि पुरत तुअ आसे॥
चुपरहु चुपरहु हेमपुतरि धिया रहु गय घर अलसाये।
दशदिन वितत वनव गय कामिनि प्रेमक सुजल नहाये॥
विमल चन्द्रमुख फूल फुलाएल लगनक वहल वसाते।
कुमर फूलदल इत उत डोलय पुलकि पुलक धिया गाते॥

परिधन=एकरंगा साड़ी; भूपन=गहना; भूपन···आँचर=मनोरी लागल साड़ी; दछिनचीर=छीट; हेमपुतरि=सोनाक पुतरी सनि; कामिनि=स्त्री; विमल=स्वच्छ; विमल···फुलायल=अहाँक 'चन्द्रमा सन मुँह सुन्दर' फूल थिक; (तहिमें) लगनक···वसाते=लगनरूपी वसात लगैछ (तेंवश) फूल···डोलय=मुँहरूपी फूल उदास जानि पड़ैछ; तात्पर्य जे लगन लगने कन्याक चित्त उदास जकाँ जानि पड़ैछ। पुलकि···गाते=कन्याक गात (शरीर) रोमाञ्चित होइछ।

२२ रुक्मिणी हरण।

जाउ विप्र झट जायब द्रुत जायब रे होरे
हरि कें कहब बुझाय बुझाय सुनायब रे॥
से घट घट सब जानथि की नहि जानथि रे होरे
आरतहर प्रभु थिकथि सकल श्रुति गाबथि रे॥
सुनि गुन सुनि मन भावल रे प्रन राखल रे होरे
नन्दनंदन होए कन्त अनत नहि जानल रे॥
सब दिन से मन राखल रे चित राखल रे होरे
सपनहु हेरल ने आन आन नहिं भावल रे॥
मन छल आस पुरायत रे हरि आओत रे होरे
कर धरि हृदय लगाओत ताप मेटाओत रे॥
पिता और लघुभाय माय मन भावल रे होरे
हरिकाँ तिलक चढ़ायब सब जन ठानल रे॥
हत भागिनि हम हाय प्रान जुरि राखल रे होरे
रुक्मद थिक बड़ भाय हमर सुख घातल रे॥
भरल सभा से गरजल रे बड़ बरिसल रे होरे
बालक से शिशुपाल हाल सब बिगड़ल रे॥
कालिह साजि से आयल रे हम घाइलि रे होरे
हरिनि पड़ल जनु फाँस साँस धरि मारल रे॥
आजन बाजन साजन रे नहिं भावय रे होरे
सबटा कहब बुझाय विपति चढ़ि आयल रे॥
हम रुक्मिनि मुरझाइलि रे बिलगाइलि रे होरे
सब जन तेजलक छोह जाय कत भागलि रे॥

द्रुत=झट; श्रुति=वेद; कन्त=स्वामी; लघु=छोट; हतभागिनी=अभागिनी; छोह=दया;

कुसुम कलित विचकंटक रे बड़ उभरल रे होरे
भरल धार अड़ड़ाय नाव जनु डूबत रे ॥
कहब श्याम ! दिन उगइत रे किछु वितइत रे होरे
कालिह देवि मठ जायब तहि ठाँ आबब रे ॥
हम अरपल चित देह नेह सब अरपल रे होरे
श्याम ने देखब कालिह तखन जिउ यातब रे ॥
विप्र चलल मन भारल रे झट झारल रे होरे
श्याम निकट चल जाय बखानि बखानल रे ॥
सुनितहि प्रभुमन मांखल मन भेल आतुर रे होरे
शूरसेन सँ कहल चलल सजि माथुर रे ॥
रथ साजल दल साजल रे चल आयल रे होरे
पाछाँ सं बलराम सैन सजि धाएल रे ॥
कृष्ण कयल फुलवारी रे विचझाड़ी रे होरे
कैलन्हि एकसर दास आस कं भारी रे ॥
मन्दिर चललिह रुक्मिनि रे सखि साजलि रे होरे
जाय ततै हरि धाएल रे धनि पाओल रे ॥
सँग सँग चल शिशुपाल, कृष्णमन माखल रे होरे
रुक्मिनि रथहिं चढ़ाय उड़ल रथ भागल रे ॥
दश दिश हाहाकार छुटल सब आयल रे होरे
एकसर हरि सँ मारि राम पुन आयल रे ॥
कत छन रन घनघोर कृष्ण रुक्मद घय रे होरे
रुक्मिनि काँ दै देल वहिन डुहु पद धै रे ॥

कुसुमकलित=फुलक कली भेल; विचकण्टक=कांट में; राम=बलराम, कृष्णक जेठ भाय;

विनति कयल कत कानलि रे वर मांगल रे होरे
तेजिय जिवइत भाय यैह वर मांगल रे ।।
प्रभु रुक्मिनि गृह पहुंचल रे सुख वहुरल रे होरे
रुक्मिनि हरणक कथा कहल जत सूनल रे ।।
सन्त कुमर दुश्र दंपति रे पृथ्वी पति रे होरे
छमव हमर अपराध मिलन सुख भावित रे ।।

---

२३ गौरी पूजा ।

गिरिजा पूजय चलु चलु बाला, देहु अभय वर मदन गोपाला ॥
गोमतीकतट लसे फुलवारी, से फुल तोड़थि राजकुमारी ॥
चाटी भरि चानन कर्पूर तमोल, गौरिहिं दै रुक्मिनी करजोर ॥
पूजिअ गिरिजे शुभ यश लेहु, जगन्नाथ स्वामी मोहि देहु ॥
नन्दीपति भन सुनह सयानि, देहु अभय वर सारङ्गपानि ॥

---

२४ परिछानि ।

(महेश वानी)

साजथि हर निज भेस गे माई, जेहन युवक नरेस गे माई ॥
जटाजूट सरिआय गे माई, भमरा पाँति बुझाय गे माई ॥
शशि ललाट में शोभ गे माई, हेरइत नयनक लोभ गे माई ॥
कमलकोप से नयन गे माई, काजर किछु २ रजन गे माई ॥

दंपति=स्त्री पुरुष; पृथ्वीपति=संसारक मालिक, भावित=इच्छा कैल ॥
अभय=विनाभयक, मदनगोपाला=श्रीकृष्ण; साँरगपानि=श्रीशिवजी ॥
नरेश=राजा; शशि=चन्द्रमा; रजन=शोभित;

चानन शोभ ललाट गे माई, वर वरिआतक ठाठ गे माई ॥
अधर रङ्गल गुआपान गे माई, लागल गौरिक ध्यान गे माई ॥
पीताम्बर फहराय गे माई, कान कुंडल विलसाय गे माई ॥
कर वलया रुचि हाथ गे माई, मनिमय मउरहुँ माथ गे माई ॥
चकमक फटिकक रूप गे माई, असहा चढ़ल वर भूप गे माई ॥
नखशिख साजल भेस गे माई, गौरी विवाह महेश गे माई ॥
कुमर एहन वर आज गे माई, देखत ससुर समाज गे माई ॥

---

२५ महे० ।

विवाह चलल शिव शङ्कर हरबङ्कर,
डामरु लेल कर लाय विभूति शुभङ्कर ॥
नगर निकट हर आएल सुनि पाओल
देखय चलल सब भूप रूप देखि लुबधल ॥
परिछय चललि मनाइनि सब नाइनि
नाग कएल फुफकार कि दुरहिं पड़ाइलि ॥
एहन उमत वर केकर उर विषधर
गौरि वरु रहथु कुमारि करब वर दोसर ॥
भनहि विध्यापति गाओल गावि सुनाओल
तुरत करिअ सब काज कि हर बड़ सुन्दर ॥

वलया=मठा; सुचि=सुन्दर; वरभूप=राजा सन वर ।

हर बँकर=डेराओन शिवजी; करलाय=हाथ लगाय; नगर=सासुरक; भूप=राजा; उमत=उन्मत; बताह; उर=हृदयमें; विषधर=साँप ॥

२६ ऐजन ।

वर वौराह उमाके सोचहिं नारि निहारि ॥
फनि मणि मौलि विराजित सिर सुरसरि वहु धार-
भाल विशाल सुधाकर कर त्रिशूल त्रिपुरारि ॥
वाहन वसहा दिगम्बर परिजन भत वेताल-
आकधतुर फल भोजन विजया प्राण अधार ॥
कह ऋषि रानि राजासँ, कन्या रहली कुमारि,
दुलहिन योग हर दुल्लह नहिं दुलहिन बड़ि सुकुमारि ॥
कह जगजननी जननि सँ चिन्ता छाडु हमार ।
जे किछु भावी सेहे होए मा ! लिखले मेटल नहिं जाय ॥
शिवशङ्कर वर ईश्वर नाथ चरण चितलाय ॥
गिरिजा मनहिं अनन्दित विध्यापति कवि गाय ॥

---

२६ (क) ऐजन ।

छोरि दिय आहे योगि जटाजुटि छोरि दिय वाघक छाल गे माई।
कारियोगिनिया सखि सहिलोरिन गोरि भेलि विवाहनयोग गे माई

वौराह=वताह; निहारि=देखिके । फनिमणि=नागक मनि; मौलि=माथ पर; विराजित्त=शोभित सिर=माथपर; सुरसरि=गंगा; भाल=ललाट; विशाल=पूर्ण; सुधाकर=चन्द्रमा: कर त्रिशूल=हाथमें त्रिशूल; त्रिपुरारि=त्रिपुरनासक राक्षस के मारनिहार, शिव जी; दिगम्बर नांगट; परिजन=सँगसाथी; विजया भाँग; जगजननी=उमा ॥

शिवजीक रूप—नागक मुकुट, माथपर गंगाके धार, कपार पर चन्द्रमा, हाथ में त्रिशूल ओ वाहन वड़द ॥

जटा जुटी हमर थिक शोभा, वाघक छाल अहिवात गे माई ।
कारि जोगिनिया सखी सहलोरिन गौरिके परिछि लैजाय गे माई॥
भागिन मास वाप छुल वैसल की हेत ककरहु ताहि गे माई ।
गौरि के करम वहै वर लीखल की हेत ककरहु ताहि गे माई ॥

२७ ऐजन ।

केओ नहिं कहु हर आओत माइ हे से यतहा गौरी पाओत ॥
सोन सनि गौरी दाई कनतीह माइ हे वुढ़ वर तर दुख पौतीह ॥
दुर दुर करतीह माय वोप माइ हे मने मन देतिह शय आप ॥
केओ जनु परिछय हर कय माइ हे घुरिजाउ घुरिजाउ वरकँय॥
हेम पुतरि चल जायत माइ हे पाथर परसि सुखायत ॥
एहन उमत वर करताह माइ हे हिमपति फल पाछाँ वुझताह॥
चुप रहु सकल दयादिनि माइ हे रुसलिह धियाले मनाइनि॥
कुमर एहन वर देखब माइ हे वर वरिआत दुरि फेकव ॥

२८ ऐजन ।

वड़ दुख देलक नारद वाभन, फेरलक हिम ऋपि चित्त गे माई।
से वभनाके एतवे हिस्सक, कलह लगावय नित्त गे माई ॥
सुनलहुँ हर थिक त्रिभुवनदानी, दत्तक पहिल जमाय गे माई ।
सासु ससुर सवके से हतलक, वनिता देलक गमाय गे माई ॥
दाका दै शिव नारद मोहलक, नारद मोहलक राय गे माई ।

शय=सैकड़ों, सैयों; परसि=छूवि; पाथर'''सुखायत=पाथर (शिव) कें छूवि (संगति में रहि) गौरी सुखाजायत; हिमपति=उमाके पिता ॥

कलह=झगड़ा; हतलक=माकरल; वनिता=स्त्री, शची,

सोन सनि धनिकें हर वर होयत, दुहु जनि जायव पराय गे माई॥
राजपाट आँगन घर तेजव, तेजव एहन समाज गे माई ।
गौरी दाइलै वरु वने वन घूमव, तेजव परिजन-लाज गे माई ॥
तन नहि परिधन खेत ने किछुओ, वरके मति नहिं थीर गे माई ।
भरि दिन भाँग पिसत गौरा दाइ, पड़त घरक सब भीर गे माई॥
कुमर भनत तोहें सुनह मनाइनि, करम लिखल कत जाय गे माई।
राजपाट लक्ष्मी दुरि कैलक, भाँग धतुर हर खाय गे माई ॥

---

२९ ऐजन ।

वड़ दुख देलयँ रे वभना-दैवा-हिमऋषि सँ, कैलँय छलना ॥
ठकलक वुढ़ निर्वुधनाकें-दैवा-सोभमति भेटल वभनाकें ॥
ताहि दिन सँ मति फेरलक-दैवा-वुढ़वाकें गौरी सेवलक ॥
नितदिन फुल जल चानन-दैवा-वेलपत्र ढ़ेरि तोराओन ॥
केहनि कोमल धिया सुखलिह-दैवा-थाकलि दुपहर सुतलिह ॥
एहन निठुर वाप केकर-दैवा-वर में सहस नौरी जेकर ॥
सुनलहुँ ऋषि हर वरताह-दैवा-निरधन छथि की करताह ॥
धियालै नैहर हम जायव-दैवा-राज कुमर तकवायव ॥
सोनसनि धियाकें एहन वर-दैवा-कुमत भिखारि उमत हर ॥
हिमपति कुमर वुझायव-दैवा-धियालै चुपहिं पराएव ॥

मति=वुद्धि; भीर=भार । राजपाट⋯कैलक=समुद्रमथनक समय में १४ रत्न वहरायल ताहि में लक्ष्मी श्री कृष्ण कैं देल गेलथिन्ह किन्तु अपने विष अपन हिस्सा में लेल ॥

वभना=नारदऋषि; छलना=ठकपनी; निर्वुधना=वुद्धिहीनकें; नितदिन=सवदिन; कुमत=वताह ॥

३० महे० ।

केहन कठिन मति अहँक हिमाचल जे वुढ़ कयल जमाय गे माई।
ठक थिक नारद फेरलक सबमति, कुल मरजाद गमाय गे माई॥
माय बाप नहिं हरकें सुनलहु, नहिं वतहाकें गाम गे माई ।
घर आँगन कुटियो नहिं राखय, निर्द्धन तेकर नाम गे माई ॥
वसहा चढ़ै ओ डमरु वजावय, सहसह तनभरि साँप गे माई ।
नयन तीन करजनि सन लहलह, सुनितहिं मोरमनकाँप गे माई॥
सुन्दर नहिं वर देखितहुँ हे पहु, की मति गेलि भुलाय गे माई ।
राजकुमर की कतहु ने भेटल, जे वुढ़ कयल जमाय गे माई ॥
हिमऋषि कहलन्हि सुनिय मनाइनि,हर थिक सवक महेश गेमाई।
मति थिर हमर वरल बुझि हरकें,दुख नहिं होयतन्हि लेश गेमाई॥
कुमर भनत से त्रिभुवनदानी, हर तैं निरधन भेल गे माई ।
विष्णु विरञ्चि जनिक गुन गावथि, से वरगौरिकें देल गे माई॥

---

३१ ऐजन ।

आएल उमत वर हर वरिआत रे,
वाटहु ने चलइक चल कात कात रे ॥
भरितन लेपल भसम हर गात रे,
डिम डिम बाजत डमरू हर हाथ रे ॥
भुत प्रेत डाकिनि वजाय वहु वाद रे,
सोनसनि धियाकेंई कहेन विषाद रे ॥
वसहा चढ़ल वर त्रिशुल घुमाय रे,

विरञ्चि=ब्रह्मा ॥

हर=शिवजी; गात=शरीर; वाद=वाजा;

तेसर नयन सँ आगि धधकाय रे ॥
सह सह गहुमन भरि तन साप रे,
देखितहिं डर लागे, डुरमुँह भाँप रे ॥
कैलन्हि हिमऋषि केहन अन्धेर रे,
सोनरो ने भेटल कि आनल ठठेर रे ॥
कुमर भनत हर त्रिभुवन नाथ रे,
पद धरि रहब नवहु सब माथ रे ॥
दुरि करु वर आरे दुरि वरिआत रे,
नारद वामन करि गेल उत्पात रे ॥

---

३२ बिवाहक काल ।

वैसल हर वर त्रिशुल गड़ाय, नारद द्विज विधि कहथि पढ़ाय॥
माड़ब भरि पसरल सब साँप, भगलिह गाइनि थरथर काँप ॥
गङ्ग तरङ्ग उठल जलधार'''कलबल गौरिक पैर पखार ॥
चन्द्र छिटकु केहनि भल काँत, गाइनि गन देखल कत भाँति ॥
कर पर कर हर गौरिक देल, तखनहिं प्रेम समटि तन गेल ॥
कहु कहु हर हे वापक नाम, वंश अपन पुन माइक नाम ॥
लाजें वर कैलन्हि मुख ओट, से बुझि गौरिक मन भेल छोट ॥
हिमपति कैलन्हि कन्यादान, भेल दुहुक दुहु ेम-मिलान ॥
वेदिक विधि करु, करुए जमाय,छोड़िये हठ नहि लगन विताय ॥
कुमर भनत सुनु मनसिज-नाथ, कामप्रसादें होयब सनाथ ॥

उत्पात=उपद्रव ॥

द्विज=पुरहित; गंगतरंग=गंगाजीक धार; कलबल=चुपचाप; करपर कर=हाथ पर हाथ; पेदिक विधि=वेदी ठामक विधिसव; मनसिजनाथ=शिवजी ॥

३३ ऐजन ।

(आमसहुक विवाहविधि)

उठ उठ कामिनि छोड़ह लाज, द्वार लागल अछि पाहुन समाज॥
आयल दशरथ सजि बरिआत, फुलह फुलह सखि नवजलजात॥
मनजे आँकल भेल तुलाय, सुनितहि सीता सुमुखि फुलाय ॥
गद्गद् सुर, बड़ होइछ लाज, आज देखत मोहि ससुर समाज॥
विमल शिशिर शशि मुख विकचाय, मुखपट राखि किछुक विहुसाय
मन करे उठु पुन उठिओने होय, लाजें लेलन्हि सब अङ्ग गोय ॥
सखि सब कर धै रथहिं चढ़ाय, परिनय आम महुक करे जाय ॥
कुमर भनत मुख विकसित हास, बेरि २ जानकि लेथि उसास ॥

---

३४ ऐ० । (कन्यादानकाल)

चलु सखि चलु सखि माड़ब ठाम, कुश कर लै बैसल छथि राम॥
तिलजल कुश लै करता दान, अपनहि जनक सुनल हम कान॥
गौरी पूजा कैलहुँ बेश……तैं पति भेला श्रीअवधेश ॥
उठ उठ आब करै छह लाज, बुझइत छहजे बनले काज ॥
लज्जित सीता उठलि लजाय…माड़ब दिशि कंदुक जनु जाय ॥
राम दहिन भै बैसलि गोय…सब दिशि मङ्गल बादन होय ॥
जनकक नयन हरषि जल भेल…तिलकुश लै कन्या दै देल ॥

नव जलजात=नव कमल; आँकल=इच्छा कैल; सुमुखि=हँसइत, विमल=साफ; शिशिरशशि=जाड़कालक चन्द्रमा; विकचाय=फुलल; मुखपर=मुँह परक आँचर; परिणाय=विवाह ॥

श्री अवधेश=श्रीरामचन्द्र; कंदुक=गेन; गेनसनि मोड़लि;

सब जनि गावह गीत उछाह"'जय जय सीता सीतानाह ॥
कुमर भनत हुहु जग-पितुमाय"'सब छन सब पर रहथु सहाय॥

३५ महेशवानी ।

हम नहिं आज रहब एहि आँगन, जँ बुढ़ होयत जमाय ।
एक तँ वैरि भेल विधि-विधाता, दोसर धिया के बाप ।
तेसर बइरि भेल नारद बाभन, जे जोहि आनल जमाय ॥
धोती लोटा पोथी पतरा सेहो सब लेवन्हि छिनाय ।
जँ किछु वजता नारद बाभन, दाढ़ी धै घिसिआय ॥
अरिपन निपलन्हि पुरहर फोड़लन्हि, फेकलन्हि चौमुख दीप ।
याल मनाइनि मन्दिर पैसलि, केओ जनु गावह गीत ॥
भनहि विध्यापति सुनह मनाइनि, हर थिका त्रिभुवननाथ ।
शुभ शुभ कै भट गौरि विवाहिय, इहो वर लिखल लिलाट ॥

३६ परिछन ।

चलह गौरिवर परिछि आनह गीत नृत्य करैत हे ।
आगु कलश चोआ चानन धूप दीप बरैत हे ॥
जनिक जे मन जाहि भावय, गौरि होयतिह तृप्त हे ।
उठत गङ्ग तरङ्ग शिर पर रङ्ग रमस करैत हे ॥
वसहा ऊपर चौदिशि डोलथि रुद्रमाल जपैत हे ।
अङ्ग अङ्ग विभूति राजित भाँग हाथ फकैत हे ॥

उछाह=प्रसन्न भैं; सीतानाह=सीतापति, सहाय=दयालु ॥

वैरि=शत्रु; त्रिभुवननाथ=तीनूलोकक मालिक, लिलाट=कर्म ॥

रंगरभस=केलि; राजित=लागल;

वाघ सिंह सियार गुजरत, भूत प्रेत नचैत हे।
मारु घटकहिं पाग छीनू, पहुन बुढ़ लयलैक हे॥
छल मनोरथ गौरि विआहब, विधिके करतैक हे।
सुवंशलाल इहो पद गाबल कामना पुरतैक हे॥

---

३७ ऐजन ।

सुनि अन्हि हर बड़ सुन्दर-आगे-देखिअन्हि विभुति भुअङ्कर॥
सुनिअन्हि हर औता रथपर-आगे-देखिअन्हि बुढ़वा बड़द पर॥
सुनिअन्हि पाट पटम्बर-आगे-देखिअन्हि फटल बघम्बर॥
सुनिअन्हि गर मोतिमालालय-आगे-देखिअन्हि रुद्रक हारालय॥
भनहि विध्यापति गाओल-आगे-गउरी उचित वर पाओल॥

---

३८ ऐजन ।

नगर नारि विचारि एहि विधि, वारि लेल कर दीप हे।
चलह देखह गौरि दुलह, परिछि लैह समीप हे॥
निरखि सकल समीप सँ हर, रूप शङ्कर साँच हे।
बाघ छाल उघारि हेरल, उदित हरमुख पाँच हे॥
जखन वर एक आँखि हेरल, आगि धधकल ताहि हे।
नाग उर पर खेल अतरज, सब पड़ाइलि नारि हे॥
तखन जनि जनि आँखि ताकल, झाँखि बैसलि नारि हे।
चन्द्रकलासँ चुअल अमृत तेँ जिउत मृग राज हे॥

गुजरत=इम्हरउम्हर घुमैछ; कामना=इच्छा॥

पाट पटम्बर=पटोर गैरह रेशमीक कपड़ा; रुद्रकहार=मुण्डमाल॥

निराखि=देखि; उदित=जागि उठल;

एहन वर के नग्न आनल, जनिक वाघ समाज हे।
ठाम आय इहो गाम उजरत, रहत ऋषि के राज हे॥
देखय चललि लजाय शङ्कित, केहन उमत जमाय हे।
बसन तनसँ विवसन भै गेल, हसथि हर मुसकाय हे॥
फेकल दीप समीपसँ हर, सब पड़ाइलि भाड़ि हे।
गङ्ग उमड़ि तरङ्ग फेकल, मानु वर्षा घन फाड़ि हे॥
दत्तकवि इहो गाओल हर, आयल एहि ठाम हे।
शुभ शुभ कहिकें गौरि विआहू, पुरत सब मन काम हे॥

---

३९ मह० ।

गौरी अउरी केकरा पर करती-बर भेल तपसी भिखारि गे माई।
हिमक शिखर पर बसथि एक घर नहिं छन्हि अपन परार गे माई॥
वारि कुमारी राजदुलारी, ऋषिके प्राण अधार गे माई।
से गौरा कोना विपति गमौती, के सुख करत दुलार गे माई॥
तेल फुलेल लै केश धन्हावथि, आओर उगारथि आँग गे माई।
से गौरा कोना भसम लोटयती, नित उठि कुटती भाँग गे माई॥
भनहि विद्यापति सुनह मनाइनि, इहो थिका त्रिभुवननाथ गे माई।
शुभ शुभकै भऽ गौरि विवाहिय, इहो बर लिखल लिलाट गे माई॥

---

४० मह० ।

आगे माई, आजु अचम्भित अयला भेषधारी॥
भिखिओ ने लेय योगी मुखहुँ ने वाजे।

विवसन=वस्त्ररहित; घन=मेघ॥

अउरी=लाड़; हिमक=हिमालयक; वारिकुमारी=छोटिकुमारि॥

अचम्भित=विचित्र; भेषधारी=शिवजी॥

घुमि घुमि आवे योगी ध्यान लगावे ॥
एहि छन गौरी हँसइत छली ।
योगी मुख हेरइत खसु मुरछाय ॥
केओ कहे ओझा गुनी आनि देखाउ ।
केओ कहे योगिअहिं नाचि नचाउ ॥
भनहि विद्यापति सुनिय मनाइनि ।
इहो नहि योगी, थिका त्रिभुवन दानी ॥

---

४१ सखे० ।

हे मनाइनि, देखू गय जमाय ॥
शिवक माथ फुटल जटा=आगे माइ ।
ताहि उपर नाग घटा ।
जटा देल अँकुसी लगाय-आगे माइ ।
छिकितहि सुरसरि गेलि बहराय ॥
वेदी देल लावा छिरिआय-आगे माइ ।
भूखल वासुकि बिछि बिछि खाय ॥
बटा भरि घोरल कसाय-आगे माइ ।
उमत महादेव भसम लगाय ॥
भनहि विद्यापति गाय-आगे माई ।
गौरी सहित वर कोबर जाय ॥

नागघटा=सर्पकसमूह; सुरसरि=गंगा; वासुकि=सर्प ॥

४१ (क)

बेटांक पसाहिनिक गीत ।

आँन उगाँरल झिल्ली झारल, हृदय मध्य लागल कसाय ।
के तो पूछौ अछुलरे दुलरुआ, के तोरा फुटल कसाय ॥
माय मनाइनि बाप हिमत ऋषि, पिउसी फुटल कसाय ॥
एककोस गेला बाबू दुइ कोस गेला, तेसर हि मोन पछिताय ।
घुरिघर जइतहुँ अम्बा गोर लगितहुँ, अम्बा सँ लितहुं आशिवाद ॥
दिय हे अम्बा आशिष दियउ, जइतहिं होयत विवाह ।
भेल विवाह राम चलु कोबर, सीता लिये आँगुर लगाय ॥

---

४१ (ख)

बेटीक पसाहिनीक गीत ।

गौरि पसाहिनि करिए गे माई, माटिय मंगल चारि ।
खार खूर सब हमहिं छोड़ाओल, पहिरन केचुआ चीर ॥
अलहि दुलहिसे बेटी से (फलों), बेटि सेहोरे सहत कत बेरि ।
देखहीगे चेरि बेटी पौरि पगारि चढ़ि, कते दल आवे वरिआत ।
साँप नचैते आवे डमरु वजैते आवे, घुरमैत आवे वरिआत ॥
सासु मनाइनि अरिपन मेटल, वरकैल चौमुख दीप ।
धियाले मनाइनि मन्दिर पैसलिए, क्यो जनु गावह गीत ॥
कहथि हेमत ऋषि, सुनहु मनाइनि, हुए दिअ गौरि विआह ।
इहोवर थिका शिव त्रिभुवन ठाकुर, हुए दिय गौरि विआह ॥

---

४१ (ग) लगन ।

पर्वत मेघ गरजि गेल बाबा, पाटन भेल इजोत ।

लक्ष्मी बेटि कुमारि हे बाबा, नौ लाख मँगय दहेज ॥
नौ लाख ओसरि नौ लाख बेसरि, नौ लाख माँगे धेनु गाय।
कम्मल हँसय पुरइन विहुसय, सरोवर मारे हिलकोर ॥
ई सरोवर बेटि तोहरोके नहि देव, गाय पिअत जुरि पानि।
सरोवर पसि नहायव बाबा, भीड़ सुखायव नान्ह केश ॥
बाट बटोही पूछत बाबा, जागत बाबा केर नाम ॥

---

(४१) घ लगन।

जाहि दिन आगे बेटि तोहे अवतरलें, ताहि दिन भेल विसम्वाद।
चिन्तानिन्द हरित भेल बेटी, थिर नहिं रहल गेयान ॥
पुत्र ज होइते बेटी वजति वधावा, धियाक जनम विसम्वाद।
कथिलै आहे अमा धियाक जनम देल, खइतहुँ मरिच पचास ॥
मरिचक झोंकसे धिया दुरि जइती, छुटि जाएत धियाक सन्ताप।
सेह सुनि बाबा उठल चेहाय, मनाइनि देल जगाय ॥
गारल धन बेटि हम नहिं राखव, आब धिया होयत विवाह।
बान्ह बन्हविह बाबा पोखरि खुनविहह, धन कै लगविहह आम गाछा
हाँस छुटकि जायत कमल फलकि जायत जल में मारे हिलकोर।
ई सरोवर बाबा जैतुक माँगत, भैया जन्म विर्धन होय ॥

---

४१ (च)

हरिरपानक गीत ॥

इन्द्र सुखासन वैसु चक्र मारि, खाई गुआ पान पिवु जुड़ि पानि।
जेहन रामचन्द्र के सीतादाइ पियारि।
तेहन (फलाँ) के (फलों) दाइ पियारि ॥

इन्द्र सुखासन वैसु चक्रमारि, खाउ गुआपान पिवु जुड़ि पानि
जेहन महादेव कँ उमादाइ पियारि।
तेहन (फलाँ) कँ (फलों) दाइ पियारि॥

---

४१ (छ)

पटिया झारैक गीत ॥

पड़ल पुरुष मुरुख भेल, गाइन सहित कोवर गेल ॥
झारि झुरि पटिया ओछाय देल, ताहि पर दुहूकँ वैसाय देल ॥
पाकल पान खुआय देल, विनु विधिक विधि कराय देल ॥
सुन्दर चीर ओढ़ाय देल, विनु विधिक विधि कराय देल ॥
भनहि विद्यापति गाओल, गौरि उचित वर पाओल ॥

---

४२ सिन्दुरदानक काल ।

सुनु सुनु देल हँकारे-आगे माई, देखिय वेदि दुआरे ॥
सुर मुनि अनलक साखी-आगे माई, देखु देखु सब जन आँखी ॥
कर धरु सात सकारे-आगे माई, करु वर धिया अंगिकारे ॥
लहु लहु सिन्दुर पसारव-आगे माई, धिया शिर आंचर झपाएव॥
धिया भेलि वर अँग आधे-आगे माई, कुमर पुरल मन साधे ॥

---

४३ अठोंगरक काल ।

भूपल हन जत शोका, प्रीति सुथिर सब लोका ॥
वर कर धरु मुसकाये, धिया घर मँह हुलसाये ॥

अनलक=आगिक; साखी=गवाही;

भूपल=समाट; हन=हटावै; जत=जतेक; सुथिर=दृढ़;

अछत गहिय निज हाथे, धिया कें गहव निज हाथे॥
कुमर परम शुभ होअथ, प्रेमक पथ दुअ जोहय॥

४४ नयनायोगिनिक विधिमें।

डाली कनक पसारल, नयना योग वेसाहल॥
नयना कोना आइलि, सकल योश सँग लाइलि॥
हिमत आनल वर पशुपती, एको ने वाजथि दृढ़ मती॥
शुभ शुभ कै सव भाखिय गौरि वश हर कें राखिय॥
भनहिं विद्यापति गाओल योगिनिक अन्त नाह पाओल॥

४५ ऐजन तिरहुतिक राग।

आजु नयन सुख लागल हे हर, देखल दृग भरि तोरा।
की कमनीय रूपधरि हे हर, भेलहुं घट घट चोरा॥
मनसिज हतलहुं कथिलै हे हर, फेर करव तनि सेवा।
हमरि धिया वड़ि चातुरि हे हर, टुटि जायत सव टेवा॥
घर आंगन सव वान्हव हे हर, कीने कराओत गौरा।
भरि दिन रमि घुमि आनव हे हर, करत उमाजे औरा॥
दुरथु वघम्वर फाटत हे हर, जटा अपन कटवायव।
षट्रस भोजन मधुमय हे हर, हम सव आइ करायव॥

पथ=वाट।

कनक=सोना। सकल=सव; हिमत=हिमत ऋपि; पशुपती=महादेव; मती=वुद्धि॥

दृग=आँखि; कमनीय=सुन्दर; मनसिज=कामदेव; धिया=कन्या, उमा; टेवा=नियम; रमि घुमि=वुलि टहलि; औरा=लाढ़; दुरथु=दूर होए;

प्रेम पास बाहव दुहु हे हर, हर गौरी भल जोरी ।
नयन सफल देखल दिन हे हर, कुमर सजनि मति भोरी ॥

---

४६ ऐजन ।

मनसिज सुभग वनाओल गेह, कंचन वनल भरल घर नेह
वर कन्या शिव गौरिक रुप, पूजल मनसँ मनसिज भूप ॥
दुहुक हृदय में वान्हल ताग, दुअहुँ एक थिक ई मन लाग ॥
देलक हाथ हि हाथ धराय, पुरहित थिक दछिना किछु पाय॥
निरदिश देखि पांच सर मार, थरथर कापि उठल हियतार ॥
कामतिया वुझि आइलि दौड़ि, कुमर विकाएल धनि दुइ कौड़ि ॥

---

४७ ऐजन ।

वड़ रे जतन सँ नेह लागाओल, सीचल नयनक वारि ॥
जनमल तरु लह लह कै जागल, कोमल दुहु पुन डारि ॥
एक दिशि वैसथु हर गौरी दुहु, देतिह आशीर्वाद ॥

पास=डोरी; सजनि=सखी; मति भोरी=मोहित भेलि ॥

मनसिज=काम; सुभग=सुन्दर; गेह=घर; कंचन वनल=सोनाक वनल; नेह=प्रेम; पुरहित······पाय=काम देवक कैलैं दुहू गोटै एक दोसरक हाथ धैलन्हि अर्थात् पाणिग्रहण भेल तैं काम पुरहित भेल–किछु ओकरा दछिना चाही । निरादिश=अवला, हियतार=हृदय; कामतिया=रति; कुमर··· दुइ कौड़ि अर्थात् धनिक किछु मान नहिं रहल ॥

नेह=प्रेम (रूपी) वृक्ष; नयनकवारि=नोर; तरु=वृक्ष;

दोसर दिशि रति-रतिपति बैसथु, वयसक हरथु विषाद ॥
हम सब योगिनि योग लगायब, नेह लता फल फूल ॥
सुरस वहे सरिता सनि कामिनि, मज्जन तेहि उपकूल ॥
दिन दिन दुल्लह दुलहिन राखथु, विमल प्रेम परचार ॥
कुमर तखन दम्पति बिच आओत, अपनहि प्रनयविचार ॥

---

४८ ऐजन ।

दछिन पवन वहे लहु लहु, पहु से मिलन हेते कबहु ।
आंम मजरि महु तुअल, तैयो ने पहु मोर अूरल ॥
दीप जरिय वाती जारल, तैयो ने पहु मोर आयल ।
भनहि विद्यापति गाओल, योगिनिक अंत नहिं पाओल॥

---

४९ ऐजन ।

हमयोगिन तिरहुति के योग देवैन्ह लगाय ।
नयना हमर पढ़ाओल रे जग मोहिनि नाम ॥
आरसि काजर पारल आंखि आंजल,
ताहि आंजल दुहु आंखि जमैया अपनाओल॥

रति-रतिपति=रति ओ हुनक स्वामी कामदेव; वयसक......विषाद=वयस सुख प्राप्त हो; नेहलता-फलफूल=प्रेमरूपी लती में फलफूल हो: सुरस......उपकूल=ताहि ठाम सुन्दर रसक नदी बहथु ओ कामिनि ताहि तट पर स्नान करथु; विमलप्रेम परचार=शुद्ध प्रीतिक व्यवहार; प्रनय विचार=प्रीतिक विचार ॥

आरसि=अएना .

रुनुकि झुनुकि धिया चलितथि जमैया देखितथि
पागक पेंच उघारि हृदय विच रखितथि ॥
भनहि विद्यापति गाओल फल पाओल,
योग हमर बड़ तेज सेज धै रहताह ॥

---

५० गेजन ।

योग जुगति हम जानल, किनि आनल,
नागर कैल अधीन सभक मन मानल ॥
सत ओ अङ्ग जौं रुसताह, फेरि वौसताह,
कहिओने कुवचन कहताह, चानन चरन पखारताह-
पैर घरताह ।
ज्ञान सूर्य जकां उगताह उगि झपताह,
जेहन मकड़ाक डोरी तेना घुमतांह ॥
भानुनाथ कवि गाओल योग लागऊ,
गौरि उचित वर पाओल सभक मन मानल ॥

---

५१ गेजन ।

कहां सँ सूगा आएल नेहलाएल,
कोन गाम लेल वसेरा अमृत फल भोजन ॥
(फलाँ) गामसँ सूगा अएल, नेह लाएल,
(फलाँ) गाम लेल वसेरा अमृत फल भोजन ॥
के इहो पिजड़ा गढ़ाओल सूगा पोसल,

सेज=विछान ॥

जुगुति=युक्ति, उपाय, नागर=पाहुन; अधीन=वशमें ।

के तेहि देत अहार अमृतफल भोजन ॥
(फलाँ) बाबा पिजड़ा गढ़ाओल सूगा पोसल,
(फलाँ) सासु देथि अहार अमृत फल भोजन ॥
एहन सुगा नहिं पोसिय नेह लगाविअ,
सुगबा होयत उड़िआँत अपन गृह जायत ॥
भनहि विद्यापति गाओल योग गाओल,
योगिनिक छल वड़ पैघ अन्त नहिं पाओल ॥

---

५२ ऐजन ।

सात वहिन हम योगिनि माइ हे नयना थिकि जेठि वहिन ॥
तनिकहु सँ योग सीखल माइ हे चौदह भुवन हमे हाँकल ॥
इन्द्र हमर डर मानथि माइ हे विनु मेघ पानि बरिसावथि॥
हरिहर सनकादि मुनिजन माइ हे केने हमर डर मानु त्रिभुवन॥
भनहि विद्यापति गाओल माइ हे योगिनिक अन्त नहिं पाओल॥

---

५३ ऐजन ।

चारि बहिनि हम काटल-ताग बाँटल,
बान्हल हृदयक छोर, प्रेमकसि तानल ॥
जखनहि माड़व बैसल, पहु देखल,
नयन हनल तिख वान प्रेम मन पैसल ॥
कर पर कर जौं राखल, हमे आँजल,
दम्पति प्रनय अटूट केहन योग साजल ॥
कुमर रहत नभ जाधरि-रवि ताधरि,
थिर भै बढ़ु अहिबात नयन सुख बाढ़ल ॥

दम्पति=स्त्री पुरुष; नभ=आकाश, रवि=सूर्य ।

५४ ऐजन ।

(शयनकाल सखीक कथन महादेव सँ)

शयन करिअ हर कुसुम शयन रे,
परिहरु बाघछाल, कर डोमरु, भाँग भुलल नहि पड़त चयन रे ॥
तेसर नयन झाँपि लिय पाहुन, झुलसलि शशिशिर गहन गसलि रे।
हेरि त्रिशूल मनमथ हिय शालय, सुपुरुष मानथि सखिक कहलि रे॥
उमा हमरि अलसाइलि बैसल, आध राति हर बीति चललि रे।
रइनि क नय नयनक जल हे हर, बाहर ओसक पाँति पड़लि रे॥
कुमर सुनिय हर मनोरथ पूरत, नयन जुड़त ओ सफल जिवन रे।
धनि कर धै अँह गहिअ महादेव, करव कखन अँह सुभगशयन रे॥

---

५५ ऐजन ।

(गौरी पूजाक अवसर पर)

उठ अय पाहुन गौरिक पूजा कमला करतिह सङ्गे ।
राजकुमर श्रीराम उठिय हे, जल लै आइलि गङ्गे ॥
सीता हाथ कनक फुलडाली, तोड़िय श्रीतरुपाते ।
विमल कुसुम चुनि ओ लै सिन्दुर पूजत पृथ्वीजाते॥

शयनकरिय=आराम कैलहो; कुसुमशयन=फूलक सेजपर । परिहर=छोड; हेरि=देखि; मनमथ=काम; सुपुरुष=नीकपुरुष; सखिक कहलि=सारि सरहोजिक कथा; रइनि=राति, रइनि···पड़लि रे=ताहि हेतु राति कनै छथि हुनक नीर, हे महादेव, देखू जे बाहर में ओसक बुन्द पडल अछि; धनिकर=स्त्रीकहाथ; गहिय=ग्रहण कैल हो ।

श्रीतरुपाते=बलपात; कुसुम=फूल; पृथ्वीजाते=पृथ्वीसँ जन्मलि, सीता

शिवगौरी दुहु मोय वाप छथि सन्तति थिक संसारे ।
दिन दिन बढ़ अहिवात बढ़त नभ जाधरि रविसञ्चारे॥
कुमर नवहु शिर पुलकि गात प्रभु, शिवकें राखव माने ।
श्रीपति अपने ओ गौरीपति, भक्तक वश भगवाने ॥

---

५६ ऐजन ।

आजु उमाक चरण दुहु पूजह, पूजह लै वेलपात ।
सुरभित कोमल तरुन पुहुप लै परस चरनजलजात ॥
चानन अगर विमल कस्तूरी, गङ्गाजल भरि थार ।
नागरि नागर विमल प्रेम सँ, दुहु जन पैर पखार ॥
लै सिन्दूर उमाक सगरतन, रञ्जन करु भल भाँति ।
कञ्चन वरनि त्रिपुरसुन्दरिसे विञ्जुरिक सन उठ काँति ॥
दिन दिन तरु अहिवात बढ़त, ओ लहलह तोहर भाग।
कुमर उमापूजन मन सँ करु, दिन दिन बढ़त सोहाग ॥

---

५७ ऐजन ।

चानन अगर हाथ लै चलली, कै सव षोड़स साज ।
झर झर नयन झरय जल छन छन, शिव तन रञ्जन काज॥
तपल सोन चकमक तनु गौरिक, केहन सिरजल रूप ।
उमा सिरजि ब्रह्मा ठकवक छथि, एहन ने देखल स्वरूप ॥

संतति=सन्तान; सञ्चारे=चलथि; श्रीपति=श्रीराम ।

सुरभित=सुगन्धित; तरुनपुहुप=उत्तम फूल, परस=स्पर्श करु; जलजात=कमल; रञ्जन=शोभित; कञ्चनि वरनि=सोनाकसन देखइत ।

शिवतन रञ्जनकाज=महादेवके देहमें लौंवा निमित्त ।सिरजल=वनाओल;

शिवजी पुछल कहिअ की होइछ, कथिलै रुदन पसार ।
तुअ मुख हेरि शरद शशि कानय छोड़लक गगन-विहार॥
उमा कहल सुनु प्रियतम नैहर जायव कैलहुँ आस ।
किछु दिन माइक टहल वजायब, पावस नैहर वास ॥
से सुनि कहल चलह कामिनि वरु,चढ़ि वसहा दुहु आज।
कुमर दुहुक मनोरथ परिपूरत, देखव हिमक समाज ॥

---

५८ ऐजन ।

के रोपलन्हि तरु भल वेलपात,
तोड़लक दल के पाहुन हाथ ॥
(फलाँ) वावा रोपलन्हि तरु वेलपात,
(फलाँ) दल तोड़लन्हि पाहुन हाथ ॥
कथिक वनल इहो सखि फुलडालि,
के फुल तोड़लक नगरक मालि ॥
सोनक वनल इहो सखि फुलडालि,
(फलाँ) फुल तोड़लक नगरक मालि ॥
(फलाँ) दाइ पुजतिह (फलाँ) वर सङ्ग,
कुमर वढ़त दुअ प्रीतिक रङ्ग ॥

कथिलैरुदनपसार=क्येक कनैछी; हेरि=देखि देखि; शरदशशि=जाड ऋतुक चन्द्रमा; गगनविहार=आकाश में घूमब फिरब; पावस=चतुर्मास-जेठ, आषाढ, श्रावण एवं भादव, हिमकसमाज=सासुर ॥

तरु=वृक्ष;

५९ ऐजन।

(विनती)

दम्पति विनति कहै सुनु गौरी थिकि तोंहे जगतक माय।
फुल जल जुड़ल तोहर पद सेवलक जत संकट दुरि जाय॥
शरदक शशि सन पूर्ण कलासन वढ़य सतत अहिवात।
विमल प्रेम तरु दुहु हिय रोपह, तरु फूलय फल पात॥
कुमर नवल नव प्रीति वढ़ै वर, उपजओ नेह गम्भीर।
सुनु जगमातु अशीश शीश दिय, चिरचिर जुगय शरीर॥

६०–महुअक्कक काल॥

गाइनि गाव भाव मन रे, चरनक गतिमन्दा।
वालसखा नवनागरि रे केवल मुख चन्दा॥
अतरस गवन भवन भेल रे, वैसल गिरिधारी।
आसन एक दहिन भेल रे, वृषभानु दुलारी॥
कनक थार दुइ परसल रे पायस रस सारे।
फेरि कयल हरि महुअक रे विधि रचल सचारे॥
रतपाणि भन मन दै रे, पुलकित यदुराई।
पुरल मनोरथ सब विधि रे विधि करथु जमाई॥

नवल=सुन्दर; नव=नवीन; अशीश=आशिर्वाद; शीश=माथ पर; चिर=वहुतदिनधरि।

चरनक=पैरक; गति=चालि; वालसखा=कुमारि सब; वृषभानुदुलारी=राधा; पायस=दूध; पायसरससारे=क्षीर, खीर।

६१-चतुर्थीक विधिमे ॥

चल चल कामिनि कर स्नान, प्रखर भानु सुख करत मलान ॥
शीतल सुरभिति जल घट देल, पंकजनायक नभगत भेल ॥
आजु चतुर्थीक उत्सव थीक, जुड़त नैन लखि हमें सभहीक ॥
लहु लहु जल छम ढारव नारि, किछुओने भिजतहलोहित सारि॥
वरुनदेव नित रहथु सहाय, दुहुजनि रहुगय अमर कहाये ॥
कुमर चतुर्थिक उत्सव तोर, विधिकरि विधिकरु भैगेल भोर ॥

६२-ऐजन (दहनही)।

धनि सँग करि असनाने, निरखल हमें अनजाने ॥
कदलिक दल तन लागे, छुछलि सकल जल भागे ॥
चिकुर फुजल अलिकारी, अंकम गहि रहे सारी ॥
टपटप मोति पथारा, अलक-तिमिर-विच तारा ॥
शशिमुख सागर छानल, पुनिमक शशि धै आनल ॥
जलक थिकन्हि वड़ भागे, सगर रमनि तन लागे ॥
कुमरक दह असनाने, सतत लिखल रहु ध्याने ॥

प्रखर=तेज; भानु=सूर्य; घट=घैल; लोहित=लाल; वरुनदेव=जलकदेवता; अमर=विना मरनक; विधिकरी=जे विधिकरावथि ॥

धनि=स्त्री; निरखल=देखल; अनजाने=विनुप्रयास; कदलिकसंग=जेना केराक थंभ में; चिकुर=केश; अलि=भमर; अँकम=भरिपाँज; अलक······तारा=मानू केशरूपी अन्धकार में तारा होथि; शशिमुख=चन्द्रमुखी; पुनिमक शशि=पूर्णिमाक चन्द्रमा; रमनि=स्त्री; दह=सरोवर ॥

६३ गेजन ।

कामिनि करय असनाने, हेरितहि हृदय हनय पँचबाने ॥
ति॰ल वसन तन लागे, मुनिहुक मानस मन्मथ जागे ॥
चिकुर गरय जलधारे, जनु मुख शशि डरें रोअय अन्धारे ।
कुच युग चारु चकेवा, निजपति आनि मिलाओल के देवा ॥
तें शंका भुजपासें, बान्हि धयल उड़ि जायत अकासे ॥
विद्यापति कवि गावे, बड़ तप कैने गुनमति पावे ॥

---

६४ कदम्बलीला ।

चललि सजनि सब सर असनाने, तारागन सखि राधाचाने ॥
हँसगमनि तिरहुति भल गाये, भमर देखि मुख रहथि झपाये॥

कामिनि=स्त्री; हनय=मारे; पंचबाने=कामदेवक फूलक बान । मुनिहुक जागे=मुनि लोकनि कौं मोह भै जाइ छन्हि; चिकुर=केश; जनु······ अन्धकार=केश सँ टपटप पानि चुवै अछि से कहैत लगैछ मानू केशरूपी अन्धकार मुखचन्द्रक प्रकाश देखि कनैत होथि; कुच=स्तन; युग=दुनू; चारु=बच्चा; कुच······के देवा; मुखचन्द्रक प्रकाश भेल से देखि बगा चकवा दुहू आश्चर्य करै छ जे कोन देव योग दिनहि चन्द्रमाके उदय भै गेल । तें······आकाश=स्त्री चकवा बच्चा दुहू के उद्विग्न देखि, शंका करैछ जे कहीं उड़िने जाय तैं भरि पाँज कै पकड़ने छथिन्ह ॥ गुनमति=गुणवती स्त्री ॥

सजनि=सखी; सर=जलाशय; तारा······चाने=सखी सब तारा और राधा तामध्य चन्द्रमा जकाँ लगै छथि; हंसगमनि=हंसजकाँ चलनिहारी;

अकचक पवनहि वसन हिलाये, देहविजुरि दृग लखि चन्हुआये॥
मुख धोअन कै राखल सारी, जल मे पैसथि दै करतारी ॥
तेहि अवसर चुप आयल मुररी, समटि लेल सब गोपिक सारी॥
चढ़िय कदम्ब पर मुरलि वजावे, विदति देखि सब रहलि लजाये॥
विनति करय हरि दैदेह वसने, बहुत विलम्ब भेल जाएब सदने॥
आब सहत के हरि अपराधे, उठिओने होअय डूबलि आधे ॥
यशुमति नन्दहि कहब बुझाये, दुर से पुरुष जे नारि सताये ॥
कुमर कयल हरि भल उपचारे, वड़रे चतुर हरि नहिरे गँवारे॥

---

६५ योग उचिती ।

हम अवला निरजनि रे, शशि सेवल गुन जानि रे ।
हम सँ कतेक कुरीति रे, सुपुरुष तेजथि ने प्रीति रे ॥
डेङ्गि बुड़ल मझधार रे, लै जहाज करु पार रे ॥
भनहि विद्यापत्ति भान रे, सुपुरुष वसथि सुठाम रे ॥

---

६६ ऐजन ॥

चरनकमल वलिहारि सखी रघुनाथ कुमर के ॥
दशरथ सहित जनक नृप वैसल शारद चरण पखारि ॥

वसन=साड़ी; देह·····चन्हुआये=हुनक देह विज्जुलता सन छन्हिजे देखि आँखि चन्हुआ जाइछ। करतारी=थपड़ी; विदति=विपत्ति; सदन=घर; सताये=दुख दिये; उपचारे=व्यवहार, केलि ॥

निरजनि=विनासहायक, शशि=चन्द्रमाः ।

चरन कमल=कमलक फूलसनपैर; शारद=सरस्वती;

रतन जड़ित मनिकनक कटोरी पटरस भोग लगाय ॥
चारु भाय मिलि भोजन बैसला, होय परस्पर गारि ।
तीनसय साठिमाय रघूवर के, एक पुरुष के नारि ॥
सत्य सुकृत कवन विधि निवहे, वरग दिनन के प्यारि ।
तखन कहल दशरथ जिके पुरहित सुनहु जनक जीके नारि ॥
गारि कोना देहु रामललाके, वाजह वचन सँभारि ।
नहि मानह तँ लैह परीक्षा, राखह अपन अटारि ॥
तुलसिदास से छवि रघुवर के, हरषित गात निहारि॥

---

६७ ऐजन ।

तोहें प्रभु सुरसरि धार रे, पतितक करिअ उधार रे ।
दुरसँ देखल गाँग रे, पाप रहल नहिं आँग रे ॥
सुरसरि सेवल जानि रे, पहन परसमनि मानि रे ।
भनहि विद्यापति भान रे, सुपरुष गुनक निधान रे ॥

---

६८ ऐजन ।

एतदिन छल नवनीत रे, जलमिन जेहन पिरीत रे ॥
एकहि शयन छल कान्ह रे, मोरा लेखे दुरदेश भान रे ॥
एकहि वचन विच भेल रे, हसि प्रभु उतरो ने देल रे ॥
ओत जाय रहल लोभाय रे, केओ नहि कहय बुझाय रे ॥

सुकृत=धर्म, परीक्षा=याँच; गात=शरीर, निहारि=देखिकै ।

सुरसरि=गङ्गा; पतितक=पापीक; परसमनि=एहन पाथर जेकर कोनहु द्रव्य में छुआय दिय तँ से सुवर्ण भै जाय, निधान=आगर, घर ।

नवनीत=सुन्दरप्रेम; भान=जानि, पड़ै छ;

जाहि वन सिकिओ ने डोल रे, ताहि वन पिया हँसि बोल रे ॥
हेम-हरदि कत बीच रे, सुपरुप चिन्हल ऊँच नीच रे ॥
भनहि विद्यापति भान रे, पुरुषक नहिं परमान रे ॥

---

६९ ऐंजन ।

मोहन मधुपुर वास रे, हमहुँ जायब तनि पास रे ॥
कुबुजिक कयल सिनेह रे, ते जलन्हि हमर पिरीत रे ॥
अलिकें कुसुम अनेक रे, कुसुम के तँ अलि एक रे ॥
ओतहि रहथु मुख फेरि रे, दरशन देथु एक बेरि रे ॥
भनहि विद्यापति भान रे, सुपुरुष बसथि सुठाम रे ॥

---

७० ऐंजन ।

सजन अरज कत दन्द रे, तँ अवसर ने करि मन्द रे ॥
इहो थिक सुजनक रीति रे, हठहु ने तेजथि पिरीत रे ॥
नारिक जँ थिक दोप रे, नागर कें हसि लोक रे ॥
छमिय हमर अपराध रे, वचन कहल नहिं आध रे ॥
सत खंडित कुसिआर रे, रस दै निकस पोआर रे ॥
भनहि विद्यापति गाव रे, जलधर जलनिधि पाव रे ॥

जाहिवन'''डोलरे=जैत से कोनहु वार्त्ता नहिं अवैछ; हेम=सोना; परमान=विश्वास ।

सिनेह=प्रेम; अलि=भ्रमर; कुसुम=फूल ।

सजन=पाहुन, दन्द=झगडा; सुजनक=पंडितक; नारिक=स्त्रीके, नागर के'''रे; तथा स्वामिए के लोक हँसैछ; वचन'''अधार=टुटलो किछु कथा नहिं कैल; सत=हजार; जलधर=मेघ; जलनिधि=समुद्र ।

७१ ऐजन ।

हमरा कैं जँ तेजव, गुन वूझव—
योगहिं देव वनिसार, अधिन कैं राखव ॥
एको पलक जँ तेजव, गुन वूझव,
पहुन योग मोर तेज सेज नहिं छोड़व ॥
आरसि काजर पारव निशि डारव,
नयनहिं नैन लगायव प्रेम लगायव ॥
कखनहु की से त्यागव, हिय धारव—
करव मोर विवहार हृदय विच राखव ॥
भनहि विद्यापति गाओल योग लाओल ।
दुलह दुलहिन समधान अधिन कै राखव ॥

---

७२ ऐजन ।

श्याम वरन श्री राम-हे सखि, देखइत छकइत काम ॥
आजु हमर विह वाम-हे सखि, पहु तेजि जाइ अछि गाम ॥
पढ़ल पंडित भान-हे सखि, पहु केने करि अपमान ॥
भनहि विद्यापति भान-हे खखि, सुपरुप गुनक निधान ॥

---

७३ ऐजन ।

सुजन अरज कत दन्द रे, तैं अवसर ने करि मन्द रे ॥
सात खंड कुसिआर रे, निकसल प्रेम पोआर रे ॥

योगहिं=योगटोनकै; वनिसार=वनवास; पलक=छन;
श्यामवरन=पिण्डश्याम; काम=कामदेव; वाम=विमुख ।

नवकामिनि नव नेह रे, तेजलन्हि हमर सिनेह रे ॥
ओतहि रहथु दृग फेरि रे, दरशन देथु एक बेरि रे ॥
भनहि विद्यापति भान रे, पुरुषक नहि परमान रे ॥

---

७४ ऐजन ।

जौं करु सुजन सिनेह रे, उपमा पाहुन गेह रे ॥
हेमकर मंडप हेम रे, चानन वन कत नीम रे ॥
हींग हरदि कत वीच रे, गुनहि चिन्हल उँचनीच रे ॥
मनि कादव लपटाय रे, तैयो ने तनिक गुन जाय रे ॥
अलिकें कुसुम अनेक रे, मालति कें अलि एक रे ॥
काक कोइलि एककाँति रे, भेम्ह भमर दुइ भाँति रे ॥
कह वादरि अवधारि रे, सुपुरुष जग दुइ चारि रे ॥

---

७५ ग्वालरी ।

थिकहुँ गुंजरि चलल मधुपुर, बाट भेटल श्याम यो ।
नारि देखि मुसकाथि मोहन, रहसि माँगथि दान यो ॥
लितहुँ गोरस दितहुँ प्रभुकँय, सुरस नहिं अछि मोर यो ।
जोर वरवस अधिक जनु करु, होयव दासि हम तोर यो ॥
जाय गोकुल कहल यशुदा कें, श्याम हटलो ने मान यो ।
आँचर धय हरि दान माँगथि, सुनह यशुदा कान यो ॥
थिकह गुंजरि भूठ ग्वालिनि, किए गेलिह अगुताय यो ।

नावकमिनि=नवयुवती; दृग=आँखि, नजरि ।

हेमक=सोनाक; अलि=भ्रमरा; काँति=रङ्गरूप; अवधारि=निश्चयकै ।

रहसि=एकान्त में, गोरस=दूध दही; वरवस=वरजोरी; गुंजरि=ग्वालिनि

धूरिधूसर घुघुर माठा, सुतल कृष्ण मुरारि यो ॥
ई ने जानह कृष्ण बालक, छथि जगत बटमार यो ।
मुरलि टेरि टेरि नारि वश करि, वनहि राखथि लोभाय यो ॥
सुकवि दास विचारि मूरति, चितहिं धरु अवधारि यो ।
सदा जीवथु कृष्ण राधा, पुरल मन अभिलाष यो ॥

---

७६ समादाउनि-(तिरहुतिपरक) ।

उठु उठु सुन्दरि जाइ छी विदेश, सपनहु रुप नहिं मिलत उदेश ।
से सुनि सुन्दरि उठलि चेहाय, पहुक वचन सुनि खसलि झमाय ॥
उठइत उठि बैसलि मन मारि, विरहक मातलि खसलि हियाहारि ।
एक हाथ उबटन एक हाथ तेल, पिउके मनाओन सुन्दरि गेल ॥
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि, धैरज धय रहु मिलत मुरारि ॥

---

७७ ऐजन ॥

आज हमर विह बाम, हे सखि, मोहि तेजि पहु गेल गाम ॥
पहु भेल हृदय कठोर, हे सखि, घुरि ने हेरल मुख मोर ॥
जाहिवन सिकिओ ने डोल, हे सखि, ताहि वन पिया हसि बोल ॥
धरब जोगिनियाक भेष, हे सखि, करब मैं पहुक उदेश ॥
भनहि विद्यापति भान, हे सखि, पुरुषक नहिं परमान ॥

धूरिधूसर=धूरामें लोटायल; घुघुरमाठा=घुघरू माठा पहिरने (बालक कृष्ण) बटमार=राहघेरि उपद्रव केनहार; अभिलाष=इच्छा ।

सपनहुँरुप=स्वप्नोरूपें, तरहें, झमाय=झमानभै, मातलि=भेर भेलि; ब्रजनारि=गोपीकन्या; मुरारि=श्री कृष्ण ।

विह=विधाता; पहु=स्वामी; हेरल=देखलन्हि; मोर=हमर; उदेश=खोज ॥

७८ ऐजन ॥

जखन आयल रघुनन्दन रे, मारिचमृग मारी ।
सून भवन बिनु जानकि रे, बैसल हिय हारी ॥
कलपि पुछथि रघुनन्दन रे, सुनु लछुमन भाई ।
आइ कहाँ छथि जानकि रे, कहँ रहलि नुकाई ॥
खनखन भवन विलोकथि रे, खन करथि पुछारी ।
चन्द्रवदनि धनि बिछुरलि रे, सिर करतल मारी ।
पल पल वितय कल्प सम रे, यामिनि भेल शेषे ।
साहेब राम रमाओल रे, चलु सीताक उदेशे ॥

---

७९ समदाउनि ॥

एतदिन आहे अलि, सँग सँग रहलहुँ, कएल कतेक अपराध ।
कखनहुँ मिलन कखन हठ वश धनि, हेरल ने लोचन आध ॥
पुरब उगल रवि पहुक विमल छवि, सब जनि खेल पसार ।
कमलिनि की जानत इहो शुधमति, रसिक भमर व्यवहार ॥
निर्धन सासुर की आदर करैं, भेलने किछु सत्कार ।
सुतलि धियाकें किय अँह तेजलहुँ, पुरुषक हृदय पहाड़ ॥
उठलहुँ चललहुँ रहलहुँ सँग सँग, हिलिलि-मिलिलि सब नारि ।

मारीचमृग=मारीच नामक सोनक हरिन; भवन=घर; चन्द्रवदनि=चन्द्रमासनमुख हो जनिक, सीता; सिरकरतलमारी=कपार चोट दै; पल पल=छन, यामिनि=राति ।

अलि=पाहुन, भ्रमर, जामातृ; लोचन[illegible] आँखिताकब; पुरब=पूर्व दिश, रवि=सूर्य; रसिक=चतुर, सत्कार=आदर, धिया=सुवासिनि,

नेह लती कथिलै सुनु काटल, जाइत छी परतारि ॥
सुनु सुनु पाहुन वारि वयस धिया, कैलक दोष हजार ।
नवमति से की जानय आदर, कतहु ने करत्र देखार ॥
शून हमर घर शून हमर मन, धिया मन पड़ल उदास ।
सुनु सुनु पाहुन झट पुन आएब, कयलहुँ सब जनि आस ॥
एहि विधि तेजि चलल मनमोहन, छनेछन लेथि उसास ।
कुमर तेजि अलि कतै गेल चलि, पुरुषक नहिं विश्वास ॥

---

८० ऐजन ॥

माधव कहलन्हि उठु उठु राधा, आधा नयन उघार ।
आँचर दुरिकै मुख चुमि देखल, बोधल कहल हजार ॥
आब बिछोह निकट हे भामिनि, प्रातहि होयत वियोग ।
कोनपरि खेपब तुअ बिनु यामिनि, कहिया पुन संयोग ॥
मधुमय मुख तेजइत हिय काँपय, दुहु दृग नीर बहाय ।
सब तरु भमि भमि राधा रटइत, माधव कीर कहाय ॥
नभ अरुणित रवि लहु लहु आवय, जाइत छी सुनु नारि ।
हमर दोष जत मन मे मानिनि, सबटा देब बहारि ॥
जखन तखन अहँ ध्यानब कामिनि, मन मे राखब छोह ।
कुमर कखन पुन आयब घुरिकै, पतितिय कठिन बिछोह ॥

कन्या; वारिवयस=युवती; नवमति=नव बुद्धियाली; तेजि=त्यागि ।
बोधल=सन्तोष देल, बिछोह=शोक; मधुमय=सुन्दर; कीर=सूगा; सबतरु कहाय=सर्वत्र राधा-२ कहैत कृष्ण सूगा जकाँ रटन लगैताह; नभ=आकाश; अरुणित=लाल; छोह=दया ॥

८१ ऐजन ॥

माधव जायव जँ दुरदेश तोहँ, नागरि रहति अकेलि ।
किछु दिन विरमि रहिय मथुरा पति, भरि भादव करु केलि ॥
हम अवला किछु मर्म ने जानिय, दोष कएल अनजान ।
जँ तोहँ माधव तेजव हमरा, नहि तन रहत परान ॥
सेज विसुन की भावत माधव, यादव कुल के चान ।
कोनपरि खेपव तुअ विनु माधव, दिन दिन होयव भमान ॥
सँग सँग शयन-रमन सुख विसरव, दुअ विच रचलहुं वात ।
सखि हँसि कहत निठुर तोर माधव, वारि वयस रहे कात ॥
को कहु मन जे वीतय माधव, छमहु हमर अपराध ।
झट हरि चलल कुमर दृग देखल, राधा दरशन आध ॥

---

८२ ऐजन ॥

मन्दिर में एकसरि छलि कामिनि, अलसाइलि मुख गोए ।
नयन झरय जल आँचर भीजल, साँझे सुतली रोए ॥
मुख सँ आचर दूर कयल जओं, घन हटने शशि जाग ।
कतगुन साजल सुन्दरि तन कँ, थिक नागर वड़ भाग ॥
विरहव्यथा आयल उगि अधरहिं, रक्त अधर अलसाय ।
काम कुसुमशर मारल नयनहिं पिपनी भेलि गराय ॥
मुख मण्डलपर तिलक उदासल, काजर भेल मलान ।

नागरि=स्त्री; विरमि=विश्रामकै; विसुन=शून्य; रमन=सम्भोग; रचलहुँ=कैल ॥

गोए=झांपि; विरहव्यथा...अलसाय=विरहक पीड़ा भीतरसँ उगि ठोर पर आवि गेल जैंवश से उदास अछि; । कामकुसुम...गराय=कामदेव हुनक आँखि तकाय फूलक वाण मारल सैह जनु पिपनी थिक ।

हार वलय थिर रोपल थिरजनु, रमनी सुतलि झमान ॥
कखनहु सपन कहे पिउ दौड़व, सुनि शर विरहक लाग।
श्रमजल भरल-भरल मुख मण्डल, रमनिक घन अनुराग ॥
भरल वयस कोन रूप अँह तेजल, रमनि कयल अपराध।
डुबलिह से एकसरि हम जानल, सागर विरह अगाध ॥
कुमर उठाओल दुहुकर धै पुन, जागिय जागिय नारि।
झट दै उठलि अँक गहि पाओल, गेल विरह कत भागि ॥

---

८३ ऐजन।

(तिरहुति)

जखन कहल पिउ जायव रे, दुख पड़ल पहाड़े।
सजल नयन कहि माधव रे, मुख वसन उघारे ॥
मुख मुख परसि अलापल रे, विरही वनमाली।
विरह वियोग वेसाहल रे, शर देलक घाली ॥
झट दै उठलिह राधा रे, हेरल दृग आधा।
आव कैल किए कामिनि रे, लज्जा सुखबाधा ॥
पीतवसन धै कहइछ रे, सुनु माधव मोरे।
वारिवयस तजि जायव रे, होएत जिउ ओरे ॥

श्रमजल=पसेना; रमनिक=प्रियाक; अनुराग=प्रेम; भरलवयस=युवावस्था; अंकगहि=आलिंगनकै ॥

दुखपडल पहाड़े=दुखक पहाड़ टूटि खसल; सजल=नोरायल; मुखवसन=घोघ; परसि=स्पर्शकै; अलापल=वार्त्ताकैल; वनमाली=श्रीकृष्ण; वेसाहल=कीनल; पीतवसन=पीताम्वर; जिउओरे=मृत्यु, मरन;

कथिलै नेह लगाओल रे, किय कैलहुँ त्यागे ।
दुअ पद सेवब अहिनिशिरे, रहु हमरहि भागे ॥
निशि में भमरोने तेजय रं, कमलिनि भुज पासे ।
कुमर भनहि किय काटल रे, कोमल तरु आसे ॥

---

८४ ऐंजन ॥ (सम०)

दोहद भरलि-भरलि उर जानकि, रामहि कहल बुझाय ।
वनसुख नाथ वहुत हम भोगल, मुनिक विमल सेवकाय ॥
मन होए नाथ देखिय कानन सुख, चलु पहु दुहु जन संग ।
सुरसरि पावनि दरशन मज्जन, त्रिविधि ताप रहु भंग ॥
से सुनि राम कहल सुनु लछुमन, सीतहि रथहि चढ़ाय ।
सुरसरि तट कानन शुभ शोभा, झट अँह आउ देखाय ॥
से सुनि दुअ जन रथचढ़ि चलला, अयला सुरसरि पार ।
उतरलि जानकि वन सुख हेरथि, उपवन छबि अनुहार ॥
चुप दै देवर झट रथ हाँकल, सीता रहलि अकेलि ।
इत उत रहय बनय पिउ पिउ कहि, थर थर कपइत भेलि ॥
लहु लहु चलइछ गर्भभरालस, वालमीकिविश्राम ।

अहिनिशि=रातिदिन; कमलिनि पासे=कमलिनिक कोरा-भरिराति भ्रमर कमलिनीक अभ्यन्तर वन्दभेल पड़ल रहैछ; तरुआसे=आसारूपी गाछ ॥

दोहद=गर्भावस्थाक रुचि; भरलि उर=पूर्णगर्भा; विमल=नीक; सेवकाय=सेवा; सुरसरि=गंगा; पावनि=पवित्र; मज्जन=स्नान; त्रिविध=आधिभौतिक, आधिदैविक ओ आध्यात्मिक; ताप=दुख; भंग=नाश; तट=कात; कानन=वन हेरथि=देखथि; अनुहार=देखैत छलीह; अकेलि=एकस्वर; गर्भभरालस=गर्भ-कक्कारणों अलसाइलि, विश्राम=कुटी;

पहुँचलि ततै रुदन कत करइत, कपइत रटइत नाम ॥
कुमर भनहि सीता सनि सुन्दरि, त्रिभुवन पति जनि नाथ ।
करम लिखल शिव, हरि, विधि, भोगथि जे विधि लिखलन्हि माथ॥

---

८५ ऐजन ॥

नयननीर अविरल किय ढ़ारल, कह कह सुन्दरि नारि ।
कञ्चन तन झामरि सन देखिय, के धनि पढ़लक गारि ॥
केहनि चकमक चानक शोभा, सुरभित अलस समीर ।
चारि दिशा अछि मदनक बेढ़ल, तिख तिख पुहुपक तीर ॥
की दुख पड़लह कह कह नागरि, आव तेजह अनुताप ।
कनइत देखि सेज पर सूतलि, मोर मन थर थर काँप ॥
आजु सुनिय पति; मातु पिता मुख, हेरल सपनेहि माँझ ।
छोटि मोरि बहिन भाय मन पारल, कछु मछु काटल साँझ ॥
माइक नेह जखन मन पाड़ल, जे देलक प्रति पालि ।
तनिका कनइत तेजि कतै छी, केहन जगतक चालि ॥
पिता भाए जते सखि गन सब छल, सब सँ कैलहुँ कात ।
से सब चरचा करइत होएत, हिय भेल पिपरक पात ॥
भरि दिन छोटि बहिनि कोरहिं कै, केहनि बिहुस खेलाय ।
अब इत काल निठुर मोरि भाउजि, कर सँ लेलन्हि छोड़ाय ।
अवइत काल बवाकी कहलन्हि, लेलन्हि पयर छोड़ाय ॥

नाम=रामनाम; नाथ=स्वामी ॥

नयननीर=नोर; अविरल=सतत; कंचनतन=सोनसनदेह; सुरभित=सुगंधित; अलस=मन्द; समीर=वायु; तिख=तेज; अनुताप=शोक; नेह=प्रेम; हिय भेल...पात=हृदय पिपरक पातजकाँ डोलैत अछि; कर=हाथ; वावा=पिता;

थर थर हमर हृदय छल कपइत, रथ पर लेल चढ़ाय ।
तखनुक ध्यान अपन घर आँगन, परिजन सकल समाज ।
आजुक सपन सकल मन पारल, तँ उदास चित आज ॥
शैशव आओर किसोर वयस जँह, सँग सँग जिवन विताय ।
तहि ठाँसों कथिलो सुनु हे पति, आनल सवके कनाय ।
चुप रहु चुपरहु कामिनि सुनु सुनु, काल्हिहिं आओत कहार ।
रथचढ़ि जायब नैहर सुन्दरि, कथिलै रुदन पसार ॥
मातु पिता ओ भाय वहिनि सव, देखव सुन्दरि नारि ।
कुमर भलहि पुन घर घुरि आयव, रहि नैहर दिन चारि ॥

---

८६ ऐजन ॥

कथिलै रुदन पसारह नागरि कमलनयन मुरझाये ।
के की कहलक सुन्दरि कहु कहु सोचहि हंस सुखाये ॥
कथिलै रुदन पसारव हे पति, नैहर जायव आसे ॥
मातु पिता मुख देखव कहिया, किछु दिन नैहर वासे ।
कत दिन लै परतारव हे पति आव मरव विष खाये ।
काल्हिक भामिनि भाग हुनक भल, सव जनि नैहर जाये ॥

रथ=महाफा; शैशव=नेनावस्था, किसोर; वाला ओ युवावस्थाक वीचक वयस; पति=स्वामी ॥

रुदनपसारह=कानह; नागरि=सुन्दरि; कमलनयन=कमलसन आँखि, हंस=प्रान; भामिनि=स्त्री; काल्हिक…जाये=देखु तँ काल्हि, हमरासँ पाछाँ जे जे वहुआसिन अयलीह से भागवती भै नैहर जाइत गेलीह ।

छिछु दिन रहव नयन सुख पायब, पूरत चिर दिन आसे।
कुमर भनहि एतबे लै कानिय, करु गय नैहर वासे ॥

---

८७ वटसावित्री ॥

जेठ मास अमावस सजनिगे, सब धनि मंगल गाव।
भूपन वसन जतन करु सजनिगे. रचि रचि आँग लगाव ॥
काजर रेख सिन्दुर भल सजनिगे, पहिरथु सुबुधि सेआनि।
हरषित चललि अछयवट सजनिगे, गवितहिं मंगल खानि ॥
घर घर नारि हँकारल सजनिगे, आदर सं सभ गेलि।
आई थीक वड़िसाइत सजनिगे, तें आकुलि सभ भेलि ॥
घुमरि घुमरि जल ढ़ारल सजनिगे, बाँटल अछत सुपारि।
फतूर लाल देल आशिप सजनिगे, जीवथु दुलह दुलारि ॥

---

८८ मधुश्रावणी ॥

लहु लहु धर सखि वाती, धरकय कोमल छाती।
लहु लहु पान पसारह, लहु लहु दुहु दृग झाँपह ॥
मधुर मधुर उठ दाहे, मधुर मधुर अवगाहे।
कुमर करह विधि आजे, मधुश्रावणि भल काजे ॥

चिर दिन आसे=वहुतदिनक आसरा ॥

जेठमास अमावस=ईतिथि वटसावित्रीकथिक; भूपन=गहना; वसन=कपड़ा; रचि=सरिआय; सुवुधि=वुधियारि; मंगलखानि=शुभक गीत ॥

लहु २=हल्लुकसँ; दृग=आँखि; दाह=पीड़ा; अवगाहे=पकड़नेरहह ॥

८९ ऐजन ॥
(तिरहुति)

शीतल वहथु समीर दिशा दश, शीतल लेथु उसासे ।
शीतल भानु लहुक लहु ऊगथु, शीतल भरल अकासे ॥
शीतल सजनि गीत पुन शीतल, शीतल विधि व्यवहारे ।
शीतल मधुश्रावणि विधि होअथु, शीतल वसन सिंगारे ॥
शीतल घृत शीतल वरु वाती, शीतल कामिनी आँगे ।
शीतल अगर सुशीतल चानन, शीतल आवथु गाँगे ॥
शीतल करलै नयन झपावह, शीतल देलह पाने ।
शीतल होए अहिवात कुमर मन, शीतल जल असनाने ॥

---

९० ऐजन ।

कदलिक दल सन थर थर कापय, मधु श्रावणि विधि आजे ।
सकल सिंगार समारि सजनि सब, मधुमय कयल समाजे ॥
कमलनयन पर पानक पट दे, नागर जखनहिं झाँपे ।
विधिकरि हाथ चन्द्रकर वाती, देखि सगर तन काँपे ॥
आजु सोहागिनि सहमलि वैसलि, मुख किय पड़ल उदासे ।
अम्बा मुख हेरह किय कामिनि, छुनछुन लैह निसासे ॥
कुमर नयन सँ नीर वहावह, गाइनि गावथु गीते ।
वड़ अजगुत थिक मधु श्रावणि विधि, परम कठिन इहो रीते ।

इति प्रथम सर्ग ॥

समीर=हवा; उसासे=साँस; भानु=सूर्य; सजनी=सखी ॥

समारि=कै, मधुमय=सुन्दर; समाजे=ठाठ, रूप; नागर=स्वामी; चन्द्रकर=चन्द्रमा-क ज्योतिसन शीतल; सगर=सम्पूर्ण; सहमलि=डेराइलि; अम्बा=माइक; रीते=विधि॥

मैथिलगीताञ्जलि ।

द्वितीय सर्ग ।

श्रीजगदम्बवन्दना ।

जननी ! दोष हमर जौं मानब ।

तौं हम रहि निचिन्त खलदलमें, ककरा बलसौं फानब ॥
छी मतिहीन दीन अति, अनुचित, उचित कोन विधि जानब ।
लागत भूख पियास तखन हम, केवल रोदन ठानब ॥
अटपट हमर कुचालि देखि सब, हृदय रोष यदि आनब ।
तौं पुनि माए माए कहि कहि हम, ककरा लग भै कानब ॥
क्यौ नहि श्रवणदृष्टिगोचर छथि, जन पुरान अथवा नव ।
जे अपने क दया विनु पावथि, सुख सुर मुनि वा दानब ॥
राम-शम्भु-विधि-पूजित-पदरज, अमल प्रेमरस छानब ।
तव गुनराशि, अपन अवगुन हम, अम्ब ! कतेक बखानब ॥

राम=विष्णु, तथा राम=सीतारामझा=(रामकवि).।

(राधाकृष्णविनोद)

१ सखाक प्रोत्साहन श्रीराधाजी सँ:—

९१ तिरहुति ।

आजु देखिय सखि अनमनि सनि, वदन मलिन मुख तोरा ।
मन वच सुन सखि के ने कहल अछि, शैनें कहिय पुन मोरा ॥
आजुक रइनि कठिन सन खेपव, कान्हर वसि करु मोरा ।
अधर सुखाएत कच लपटायत, घामे तिलक वहु तोरा ॥
सूर्य उदित भेल मन हरषित भेल, परवश खेपल राती ।
सगरि रइनि मोर नयन झपायल, काठ भेल मोर छाती ॥
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजयौवति, ने करु एहन गेआने ।
एक दिन एहन सबहिं काँ होइछ, सुजन हर्ष कै ।

---

९२ गुर्जररागे-एकताली ताले ।

अष्टपदी ।

*धीर समीरे यमुना तीरे कुंज वसए वनमाली ।

अनमनि=चिन्तित; वदन=मुख; शैन=इसारासँ; कान्हर=कृष्ण; अधर=ठोर; कच=केश; व्रजयौविति=व्रजक युवती स्त्री; गेआने=ज्ञान; सुजन=भललोक ॥

धीरसमीरे=मन्द हवाक वहैत ;

* मूल पद श्रीजयदेवक:—

रति सुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेषम् ।
न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनमनुसर तं हृदयेशम् ॥

ग्वालिगि गन कुचकठिन परश दुअ कर धै कुसुम-सुमाली ॥
सुन्दर करह श्रृंगार चलह झट रति-रमनक आगारे ।

कुचकठिन=कठिन स्तन; कुसुमसुमाली=सुन्दर वनमाला पहिरने श्रीकृष्ण; रतिरमनक आगारे=एकान्तस्थान जाहिठाम केलि करक चाहैं छथि;

धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ।
गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली ॥ ध्रु० ॥ १ ॥
नामसमेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदु वेणुम् ।
वहु मनुतेऽतनुते तनुसंगतपवनचलितमपि रेणुम् ॥
पतति पतत्रे विचलति पत्रे शंकितभवदुपयानम् ।
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पंथानम् ॥
मुखरमधीरं त्यज मंजीरं, रिपुमिव केलिसुलोलम् ।
चल सखि कुंजं सतिमिरपुंजं शीलय नीलनिचोलम् ॥
उरसि मुरारेरुपहितहारे घन इव तरलवलाके ।
तडिदिव पीते रतिविपरीते राजसि सुकृतविपाके ॥
विगलितवसनं परिहृतरशनं घटय जघनमपिधानम् ।
किसलयशयने पंकजनयने निधिमिव हर्षनिधानम् ॥
हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् ।
कुरु मम वचनं सत्वररचनं पूरय मधुरिपुकामम् ॥
श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम् ।
प्रमुदितहृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृतकमनीयम् ॥

चलचल सुन्दरि चलचल झटकरि वंशी रवथि मुरारे ।।
राधा धुनि भरि वंशि समारय मोहन मदन वजावे ।
तुअतन परशि पवन रज लैचल भरि तन मुदित लगावे ।।
जखन विहंगम उड़थि खसथि दल जानय कामिनि आवे ।
अकचक नयन वाट हरि जोहय, कुसुमक सेज वनावे ।।
भल नहिं नूपुर करत देखारे तेजह चल रति ठामे ।
परम अन्हार चलह सखि कुंजे पहिरि नील पट वामे ।।
जौं घन में विजुरी वरु राजय तेहन रति-विपरीते ।
हरि उर लसव रहव सखि चल चल केहन रमनक रीते ।।
जँ रमने तुअ वसन हटत करधनि फूजत सुनु राहे ।
कुसुम शयन पर जाँघक पट हटु, रहवह सुख अवगाहे ।।
रजनि रहलि किछु शेष चलह सखि हरि चल जायत रोषे ।
कृष्णक आस पुरावह हे सखि चल चल हरि परितोषे ।।
सेवा वशि जयदेवक वरनल कुमर भाव परचारे ।
सदय कृष्णपद सेवि सवहिं रहु, ई थिक सुजन विचारे ।।

---

९३ रातिः ।

कर सखि कर सखि करु अवधान, पाहुन आवथि सुनलहु कान ।
देखह हे सखि भमरक हाल, नव कलिकाकैं कयल बेहाल ।।
पुहुप सुनल जँ भमरक गीत, कंचुकि कलवल करि अपनीत ।।

झटकरि=शीघ्र; समारय=वजावै; रज=धुरा; मुदित=प्रसन्न भै; विहंगम=पक्षी; नीलपट=नीलरंग कपड़ा; राहे=राधा; रजनि=राति; परितोषे=प्रसन्नता कहेतु; सुजनविचारे=पंडितक विचार ।

अवधान=श्रवण; कलिका=कला; कंचुकि=आँगी; अपनीत=दूरिकै;

हिलडुल केहन करै अछि डारि, ठुहु कर फेकि करे जनु रारि ॥
माधव धवल धवल थिक साँझ, चन्द्र छटा सुदतिक मुख माँझ ॥
अम्मा मुख सँ सुनलहु वात, सुनि सुनि पुलकित कोमल गात ॥
किछु दिन वितलँय आओत नाह, दृग भरि देखब चिरदिनचाह ॥
भमर पुहुप कँ सुतत अगोरि, लाजें रहवह निजमुख मोरि ॥
कुमर भनहि ई कुमरि बुझाय, कत परतारि प्रचार सुनाव ॥

---

९४ गी० ।

केहन सुदति तुअ मुख अकलंका, समता पाओत की शशि वंका ॥
तुअमुख रस नहि लेलक आने, गुच्छाभरि अलि लटकल भाने ॥
अलक लटक सीढ़ी चढ़ि काम, मुखमंडल कँ कैलक झाम ॥
चिवुक अधर पर दशन गड़ाय, सुरसपीवि सव निरस खसाय ॥
नयन वसल मद वंकिम ताक, भरल वयस दुख थिक वनिताक ॥
पहु आओत झट कुमरक भान, राहु गहन हेरि पुनिमक चान ॥

---

९५ ऐजन ।

जेठ हेठ नव वारिदरे, धोय गेल विरह क कारिख रे ॥
धवल भरल शशि चूरन रे, कमला मुख करु पूरन रे ॥

रारि=झगडा; माधव=वैशाख; धवल=शुक्लपक्ष; धवलथिक साँझ=पूर्णिमाक साँझ; छटा=ज्योति; प्रचार=वार्त्ता ।

सुदति=सुन्दरदाँतवाली; अकलंका=कलंकरहित; समता=वरावरि; वंका=टेढ़, अलक'''काम; केशक जुट्टी सीढ़ी पर चढ़ि; दशन=दांत; वंकिम=टेढ़; ताक=देखैछ; वनिताक=स्त्रीकं ।

षट ऋतुसार पधारल रे, बुधजन काम वेसाहल रे ॥
तीन तीन प्रन तीनक रे, एक प्रथम संयोजक रे ॥
कमलिनि भ्रमर प्रनय वढु रे, वरिसे घन लहु नेहक रे ॥
आध फुजल पाओल दृग रे, भाव सरस किछु राखल रे ॥
कुमर भनत तुअ परिनय रे, दिवस लेखि बुध वरनय रे ॥

१६ तिः ।

नयन उदास अलक फूजल ओ, काजर नयन उदासे ।
अभरन विलटल वदन विमल नहिं, देखिय लाजक हाँसे ॥
अछल पुनिम शशि सनमुख तोहर, गहन उगासल भावे ।
आँचर धै सखि वल कै पूछय, आँचर चिहुकि हटावे ॥
दशन चिह्न दुहु ठाम विराजय, परिधन परल उदासे ।
सगरि रजनि जनु जागि गमौलह, वैसलि प्रियतम पासे ॥
अंचल हरल नाह तुअ हे सखि, मसकल देख प्रमाने ।
कमलिनि कोर भमर छल सूतल, सवदल भेल मलाने ॥
वड़रे रसिक तुहु दुहुजन साजनि, मुखसँ वाज ने वोले ।
कुमर रइनि क्रीड़ल दुहु जनि जे, तेकर की कहु मोले ॥

१७ ऐजन ॥

आजु तोहर मन उठत हिलोर, मन पारव सखि कंतक कोर ।

नयन=आँखि; अभरन=गहना; विलटल=उजरल; अछल=छल; उगासल=उग्रास भेल; विराजय=देखि पड़ैछ; परिधन=वस्त्र; प्रियतम=स्वामी; कोर=कोरा; क्रीड़ल=क्रीड़ा, केलि कैल ।

हिलोर=चिन्ता;

भूषण साज करत पहु आज, आज करब कत चातुरि लाज ॥
नखशिख भूषण देत संभारि, बैसल बाजब विहुसि विचारि ।
जखन करत आँचर मुख दूरि, आजु देखब को हम सब घूरि ॥
कर कर परश कँगन झनकार, टूटत बरु निर्भूषन हार ।
के पतिआएत रुदन पसार, पुरुष हृदय बड़ होय पहाड़ ॥
भमर दशत कोमल मुख गोल, तखन हसब सखि रभसि अमोल ।
शयन करह दुहु जनि सहिआरि, कत छन रहब अहां मनमारि ॥
जखन पड़त धनि आँचर गेठ, तखनहि होयता सुपुरुष हेठ ।
कुमर करब सीखल व्यवहार, राखब छन किछु पलक उघार ॥

---

९८ ऐजन ॥

(राधाक प्रेमक वर्णन सखीक कहल)

केहन नेह लगौलह एखनहिं, केहन प्रनय उपचार ।
जँह जँह पाहुन जाइछ तहँ तहँ, कन्तक पएर पखार ॥
नागर चलल कोवर गृह जखनहिं, उठ उठ चल पहु साथ ।
पिउ मुख चुप चुप हेरह कामिनि, केहन कैलह लाथ ॥
मनिमय हार गाँथि दुहु जन जौं, देलक पहु पहिराय ।
चल चल सुन्दरि नूपुर झनकए, वेसरि लहुक हिलाय ॥

निर्भूषन=विवाहक जखन दिन मंजूर होइछ तखन कन्याक सब गहना उतारि देल जाइछ और एकटा हारीक मालाटा देल जाइछ; सहिआरि=सँभरिकै; हेठ=छकताह; पलक=आँखि ॥

प्रनयउपचार=प्रेमकप्रसङ्ग; वेसरि=बुलाकी;

कुमर मनहि धनि नेह अमिअरस-दुहुक भिजल दुहु देह ।
रसमय रस उपचार पसारह, परिचय पाओत नेह ॥

९९ ऐजन ॥

शीतल वहै समीर मन्द गति, ललना खेल पसारे ।
सब जनि मिलि मिलि कौतुक कैलन्हि, से दिन सांझ सकारे ॥
निज मन्दिर सँ माधव चलला, मदन सदन कर वासे ।
राधा से नहिं जानल किछु ओ, हरि पाओल अवकासे ॥
सब जनि गीत पसारल से छन, राधाकी छल जाने ।
दोसर घर माधव चुप वैसल, राधागृह अनुमाने ॥
सब सँ आगु झटिति से आइलि, पहुँचलि मन्दिर वीचे ।
कंकन चमक चन्द्रमुख हेरल, मानस मदनक सीचे ॥
दुअ जन मुख मुख हेरल से छन, राधा रहलि लजाये ।
सब जनि कहल कुमर दुहु भेटल, से दिन सुमिरन आये ॥

१०० ऐजन ॥

कोमल कर तुअ दुहु जल जात, परसि परसि पहु पूछल बात ।
सेसब सुनलहुं हम निज कान, हमे धनि फसलहुँ हरिनि समान॥
दुहु जन वैसल लहु लहु बाज, रसलि रभसि सब तेजलह लाज ।
कुशल पुछल पाहुन उरलाय, कमलिनि उरमें भमर समाय ॥

परिचय=जाँच ॥

ललना=सखी, कौतुक=खेल, राधागृह=राधाकघर, मानससदनक सीचे=मनमें कामक उत्तेजना भेलैन्ह, सुमिरन=स्मरन, ध्यान ॥

जलजात=कमल, रसलि=रसमय भेलि, रभसि=आनन्दसँ, पाहुन=जमाय।

नूपुर धुनि कंकन झनकार, हार टुटल छुल मोति पथार।
शिथिल जघन आँचर भेल कात, मदन कैल सखि कते उत्पात॥
लहुक रुदन लहु लहु मुसकान, भेलिह प्रातहिं सुमुखि मलान।
चारि पहर निशि रहलिह जागि, कुमर कयल इहो पाहुन लागि॥

---

१०१ ऐजन॥

(सजनी परक)

उचित पुछिय तोहि मालति सजनिगे मन मलीन मुखतोर।
की देखि भमर पड़ायल सजनिगे विरहिनि हृदय कठोर॥
चान तेजल जँ कुमुदिनि सजनिगे हरि तेजि मधुपुर गेल।
सुन देखि जीव उपेछल सजनिगे दगध दैव दुख देल॥
कमलनयन नहिं आएल सजनिगे कत दिन धरु हुनि आस।
मणिमय हार भार भेल सजनिगे मन बड़ भेल उदास॥
तकर कतेक अभिलाषव सजनिगे देलन्हि कत विश्वास।
भनहि विध्यापति गाओल सजनिगे ई थिक परम अभाग॥

---

१०२ ऐजन॥

(सखीक सिखायब नायिकाकेँ–नायकक आगमन पर)

सुनु सुनु कामिनि कर अवधान, तुअ पहु आवय सुनलहु कान।
अभरन पहिर पहिर भल चीर, आब सुखावह नयनक नीर॥

कमलनयन=श्रीकृष्ण, तकर=स्वामीक॥

अभरन=गहना; चीर=वस्त्र;

कच गाँथव हम मोति पथार, नखशिख भूषन कर झनकार ।
सुमुखि सुदति तोहे मेटह ताप, देखह मदन चढ़ाओल चाप ॥
कंचुकि पहिर करव शृंगार, करिहह लाज हठक व्यवहार ।
नहु नहु वाजव सोचल वात, से नागर वसे सहरक कात ॥
हठ सँ वाढ़ै प्रेमक पानि, दुरभै रहिहह घोघट तानि ।
ठकि ठकि रमन पसारत नाह, रहिहह थिर अगुतायने जाह ॥
मुख सँ पट नहि करव फराक, पिअ आगाँ तिअ कखनोनेताक।
सव छन अभरन वसन संभार, तिलभरि आँगने रहव उघार ॥
कखनहु रुदन कखन मुसकान-अँटकर वाजव कै अनुमान ।
नैन हेरव नहिं कखनहुँ पूर, पुरुप हिया होअए वड़ क्रूर ।
कमलनयनि अंह वड़ि वुधिआरि, जे किछु वाजी जीभ संभारि ॥
लाज हठक परिमित व्यवहार, रसमय वयस सुरस उपचार ।
कुमर सुदिन दिन आएल आज, हुलसि सिखावे सखिक समाज॥

---

१०३ ऐजन ॥

कह सखि कह सखि रातुक रंग, कतेक दिवस पर पहुक प्रसंग ।

सुमुखि=सुन्दरि; सुदति=सुन्दर दाँत जनिका हो; चाप=धनुष; देखह ······चाप=देखू; कामदेव पीड़ा दै रहलाह अछि; नागर=चतुरस्वामी; प्रेमक पानी=प्रेमक मात्रा; रमन=केलि; पसारत=करत; नाह=स्वामी; पिअ=कन्त; तिय=स्त्री; अँटकर=ठेकान सँ; नैन······पूर=तकवो जँ करी तँ पूरा नहि ताकव; कमलनयनि=कमल सन आँखि हो जनिक; परिमित=ठेकान सँ; रसमय······उपचार=तरुण अवस्था में केलि क्रीड़ाक अधिकचाह होइछ ताहू में ठेकान चाही; हुलसि=प्रसन्न भै; समाज=गोठ ।

रङ्ग=हाल, प्रसङ्ग=भेंट,

की कहु हे साख रातुक रंग, पिठदै सुतलहुँ मुरखक संग ॥
वहुत जतन घर वैसलहुँ जाय, सूति रहल पहु दीप मिझाय ।
आँचर ओछाय हमहुँ संगदेल, जेहोरे जागल छलसेहो निन्द भेल॥
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि, धैरज धै रहु मिलत मुरारि ॥

१०४ रास ।

चलहु सखी सुखधाम श्याम जहँ रास रचे ॥
पगपग चलै निहारि कै, गजगामिनि ब्रजनारि ।
श्यामप्रीतिके कारणें, सुतपति गृह देल छारि ॥
आरे कोकिल मोर घोर घन टेरय शब्द जाय वड़ि दूरि ।
कुसुमित कुंज सघन घन अनुपम निरखि रहै शशि चूरि ॥
शेष महेश निगम चतुरानन सुरनर मुनि करु ध्यान ।
चल सखि रास करै बृन्दावन गोपवधू तजि मान ॥
गोपी गोप मगन भै नाचथि, केओने रहथ तँह थीर ।
पशुपक्षी सब मुदित कुंजके यमुनाक अटकल नीर ॥
वृन्दावन के कुंजगली में श्याम चरावधि गाय ।
*सुकवि दास प्रभु तुम्हारे दरशके आनन्द उरने समाय ॥

जतन=प्रेमसँ, ब्रजनारि=ब्रजक स्त्री, ॥

सुखधामश्याम=सुख देनहार कृष्ण, सुत=वेटा, पति=स्वामी, गृह=घर, छारि=छोरि, कोकिल=कोइली; मोर=मयूर, सघनघन=भरलमेघ, शशिचूरि=चन्द्रमाक किरण, शेष=शेषनाग, महेश=महादेव, निगम=वेद, चतुरानन=ब्रह्मा, सुर=देवता, नर=मनुष्य, गोपवधू=ग्वालिनि, मुदित=प्रसन्न भै, यमुनाक...नीर=यमुना सेहो परम प्रसन्न छथि जाहि कारणें हुनक जल स्थिर भै गेल, उर=हृदय ॥

* "सुकविदास श्यामक दर्शन सँ हर्ष न हृदय समाय ।" (संशोधक) ।

१०८ तिरहुति ।

२ सखीक प्रोत्साहन श्रीकृष्णजीसँः—

आजु देखल कुसुमित आराम, सजिशर खेलय ऋतुपति काम ॥
कामिनि मालति चम्पा नारि, नवि नवि परशय अपन किआरि॥
भुजथल उगल झरल मकरन्द, किछुक दिनक कोमल नवरंग ॥
थोघट हिलइत काजर रेख, हेरितहिं हृदय गड़ल चुभि तेख ॥
कुसुम चुनै पुन भमर हिलाय, भ्रमवश भमरा दशन गड़ाय ॥
अलकावलि लटकल तरु डारि, आध उरज उर रहल उघारि ॥
तखनहिं सारल मनमथ वान, उरजक ऊपर श्यामल भान ॥

कुसुमित=फुलायल, आराम=फुलवारी, सजिशर=वान सँभारि, ऋतु-पति=वसन्त महाराज, काम=कामदेव, । नोट-वसन्त एवं कामदेव दुहू संगी थिकाह । कामिनि=स्त्री लोकनि, नवि=लोबकें; परशय=छुवैछथि । कामनि⋯⋯ किआरि=ताहि फुलवारी में मालती, चम्पा इत्यादि सेह फूल स्त्रीगण थिकीह जे लिब २ कें अपन २ किआरि धरै छथि अर्थात् केलि करै छथि; भुजथल=बाँहिके जड़िक भाग; मकरन्द=पराग, फूल में पीयर २ जे धूरा रहै-छः भुजथल⋯⋯नवरंग=बांहि परसँ कपड़ा हटल तँ फूल में सें पराग झरै लागल, किंवा, चेह देखि पड़ल जे किछुए दिनक फरल नारंगी छल, तेख=तेज; कुसुम=फूल, कुसुम⋯गराय=फूल बिछै छथि और भौराके उडवैत छथि किन्तु हुनक मुख कें भमरा फूल जानि बेरि २ डेसै अछि; अलकावलि=केश-सभ; तरु=वृक्ष; आध उरज=स्तनक आध भाग, अलकावलि उघारि= कखनो हुनक केश गाछक डारि में लपटाय गेल तँ बांहिक उघार भेलँय पयोधरक निम्न अर्द्धभाग जानि उडल, श्यामल=करिआइ;

कुमर अछुल उपवन रस राज, चतुर सँभारय निज निज काज ॥

---

१०६ ऐजन अष्टपदी ।

*नाथ हरे, भगवान हरे कल्पय राधा कुंज घरे ॥
एकलि तहिठाँ चहुदिशि हेरय ।

अछल=छल ।

---

*मूलपदः-पश्यति दिसि दिशि रहसि भवन्तम् ।
त्वदधरमधुरमधूनि पिवन्तम् ॥
नाथ हरे जयनाथ हरे—सीदति राधा वासगृहे ॥ ध्रु० ॥
त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती ।
पतति पदानि कियन्ति चलन्ती ॥
विहितविशदविसकिसलयवलया ।
जीवति परमिह तव रतिकलया ॥
मुहुरवलोकितमण्डनलीला ।
मधुरिपुरहमिति भावनशीला ॥
त्वरितमुपैति न कथमभिसारम् ।
हरिरिति वदति सखीमनुवारम् ॥
श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पम् ।
हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम् ॥
भवति विलम्बिनि विगलितलज्जा ।
विलपिति रोदिति वासकसज्जा ॥
श्रीजयदेवकवेरिदमुदितम् ।
रसिकजनं तनुतामति मुदितम् ॥

विभ्रम अधर अमिय तुअ पीबय ॥
वल कै रभसि चलै पगचारी ।
खसय चलय पुन राहि वेचारी ॥
रमन विहित पहिरल भल कँगने ।
नवनवदलक वनाओल मगने ॥
कहुना जीवय तुअ रति आसे ।
पूरह हे हरि सखि अभिलाषे ॥
कखनहु वुझय हमहिं भगवाने ।
हरषित हेरय अचक नयाने ॥
मोहि पुछै कहु सखी विचारी ।
झट आवै नहिं कियै मुरारी ॥
देखि अन्हार सघन घन रूपे ।
वूझै अयला यादवभूपे ॥
तँ वश अंकम गहय अन्हारे ।
पुन भ्रम चुम्बन रमन विचारे ॥
देखि विलम्ब सखि तेजल लाजे ।
पुनपुन रुचिकर रतिगृह साजे ॥
कृष्ण ! गमौलक से सब माने ।
विलखि विलखि कत विधिसे काने ॥
श्रीजयदेवक रसमय भाने ।

विभ्रम=भ्रमवश; रभसि=प्रसन्न भै; पग=डेग; राहि=राधा; रमनविहित=केलि निमित्तक; मगने=प्रसन्ना; तैं वश अंकम गहै, अन्हारे=अन्धकार कें श्यामताभास दै; ओकरा श्रीकृष्ण जानि भरि पाँज पकड़ैछ; रुचिकर=सुन्दर;

कुमर हृदय विच रहथु रमाने ॥

---

१०७ ऐजन ।

माधव देखल जे निज आँखिक, यमुनातट व्यवहार ।
भरल वयस मदमातलि राहिक, कैलहुँ बहुत देखार ॥
गौर किशोरवयस अवयव सब, फूलल कुसुदिनि फूल ।
कोमल कामिनि केलि करथि कत, रवितनया उपकूल ॥
जलमे पसि आँग परिमाजय, कुन्तल लेय हिलोर ।
मृगनयनी दशदिशि दृग फेरय, मनमथ हनल विभोर ॥
विरह व्यथा आकुलि निज नैनहि, अहि निशि ढारथि वारि।
सैह थिकथि यमुनासरि सुन्दरि, गति नहि टारथि टारि ॥
कुमर परम सुन्दरि हम देखल, राहिक अपरुब रूप ।
हुनक मलिनमुख देखि कँपए मन, से कहलहुँ चुपचूप ॥

रमाने=विहार करैत; घुमैत ॥

निज=अपन; भरलवयस=युवती; गौर=गौर देखैत; किसोरवयस=नव-युवती जे हो; अवयव=अंग, रवितनया=यमुना, ऊपकूल=तट पर, परिमा-जय=माँजीथ, कुन्तल=केश, मृगनयनी=हरिनक सन जनिका आँखि छन्हि, हनल=मारल, विभोर=मुग्ध, वारि=जल, यमुनासरि=यमुनानदी, गति=वेग, विरहव्यथा······वारि, सैह थिकथि······टारि अर्थात् विरहक पिड़ा सँ पीड़लि ओ लोकनि रातिदिन कनैत नोर वहाएर हलि छथि जाहि नोरें यमुना नदी वहि गेल जेकर वेग रोकल रोकलो नहिं जाइछ ॥

१०८ ऐजन छन्द परक ।

आजु राहिक दशा देखल, देखि चित्त डेराय रे।
विरह ज्वाल प्रवाह दगधलि सेज देल सटाय रे॥
कठिन पुरुषक हृदय बूझल अपन दाव देखाय रे।
अपन काज समापि भागय प्रेम तनुक बुझाय रे॥
फुजल कुन्तल पड़ल उजरल सेज भरि लपटाय रे।
विरह अगिनिक धूम से थिक सतत धाह उड़ाय रे॥
तिलक फैलक भेल ऊसर, वदन विकृत* भान रे।
चिबुक चौरहिं भरमि सूतल विरहके केशरिमान रे॥
युगल दृग पथराय माधव नयन जोति मलान रे।
सुनह हरि! दृग कयेल काजर सूखि पड़ल झमानरे॥
सतत पिउ पिउ बाज पपिहा, कुसुम भेल पिसान रे।
काक पिक दुहु तुलित बूझल सुजनि भेलि अजान रे॥
भुजलता कर पुहुपमुरझल नयन जल वरसाय रे।
हार धरि से उरज सिञ्चल तथिहु गेल सुखाय रे॥

पाठान्तर—
* 'विकृत आनन' (संशोधक)।

ज्वालप्रवाह=धाहक वेग, समापि=सँभारि, हाँसिल कै, तनुक=कमजोर, धूम=धूँआ, विरह······से थिक अर्थात् हुनक फूजल केश सेज पर लोटैत अछि मानू विरहरूपी आगिक धूँआ हो, कुन्तल=केश, विकृत=विगड़ल, चिबुक······मानरे=अर्थात् दाढ़ी में दबाव पिड़ गेल मानू मानि में विरह-रूपी केसरी (सिंह) सूतल हो, युगल=दूनू, तथिहु=तैयो, हारधरि···सिं-चल=हारी मे लगैत स्तन कें नोर से भिजवैत छथि,

वसन झामरि सिक्त सब छुन भेल कचन मलान रे।
सकल भूषन धै उतारल राहु घैलक चान रे॥
कुसुम शयनहिं सुतलि कानय, छनहि कर उनटाय रे।
छनहि छनसे सँभरि हेरय, छनहुँ रहु मुरछाय रे॥
सकल सखि सब सेवि रहु की छुटत व्याधि वलाय रे।
तुअ विना की छुटत राहिक कठिन रोग सताय रे॥
आव जिवनक आस तेजलक कंठ वात ने आय रे॥
सतत छनसे स्वर्ग जोहय सुनह यादवराय रे।
कुमर भन चलु झटिति माधव, अछय औषधि पासरे।
दरश पाओत अमिय पीवत, वचि रहल किछु श्वास रे॥

---

१०९ तिरहुति।

*माधव, विरहिनि राहिक वाते।

सिक्त=भीजल, अमिय=अमृत, अपनेक दरशन रूपी अमृत पीयत॥

---

*मुलपदः-निन्दति चन्दनमिन्दुकिरणमनु निन्दति खेदमधीरम्।
व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलयसमीरम्॥
सा विरहे तव दीना,
माधव मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना॥ध्रु०॥१॥
अविरलनिपतितमदनशरादिव भवदवनाय विशालम्।
स्वहृदयमर्मनि वर्म करोति सजलनलनीदलजालम्॥
कुसुमविशिखशरतल्पमनल्पविलासकलाकमनीयम्।
व्रतमिव तव परिरम्भसुखाय करोतु कुसुमशयनीयम्॥
वहति च चलति विलोचनजलधरमाननकमलमुदारम्।
विधुमिव विकटविधुन्तुददन्तदलनगलितामृतधारम्॥

तिखशर काम कुसुम सौँ जर्जर–की नहिं सहे उत्पाते ॥
चन्दन नीक लगै नहिं जाहि सुधाकर करइछ्र काते ।
मलयपवन विष थिक जनु साँपक विभ्रमभय मदमाते ॥
चहुदिशि सब छुन मदनक शर झरे, संशित झापल गाते ।
तुअ मूरति थापल अपना हिय, झापल हियदल पाते ॥
शयशय कुसुमविशिख तन लागल, कैलक शय नहिं पाते ।
क्षतविक्षत पड़ि कुसुमक सेजहिं, शरशय्या करु लाथे ॥
अमिय झरल शशि राहु ग्रसित जनु, ग्रसित भेल हुनिगाते ।
तेहन जनु दृगजल खल राहु गरासल मुखजलजाते ॥
एकलि से तुअ मूरति आँकि लिखै धनि मनसिज गाते ।

जर्जर=घात कैल, सुधाकर=चन्द्रमा, विभ्रमभय=भ्रमवशडर, गाते=शरीर थापल=स्थापन कैल, हियदलपाते=हृदयकदलरूपी पातलै, कुसुमविशिख=कामदेवक वाण, क्षतविक्षत=काटल कूटल, राहुग्रसित=राहु सँ ग्रसल, तेहन, मुख जलजाते अर्थात् हुनक नोर हुनक मुखकैं ग्रहण केने अछि, जेना राहु चन्द्र कैं ग्रहण कै लैछ, जलजाते=कमल,

---

विलिखति रहसि कुरङ्गमदेन भवन्तमसमशरभूतम् ।
प्रणमति मकरमधो विनिधाय करे च शरं नवचूतम् ॥
प्रतिपदमिदमपि निगदति माधव तव चरणे पतिताहम् ।
त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम् ॥
ध्यानलयेन पुरः परिकल्प्य भवन्तमतीवदुरापम् ।
विलपति हसति विषीदति रोदिति चञ्चति मुंचति तापम् ॥
श्रीजयदेवभणितमिदमधिकं यदि मनसा नटनीयम् ।
हरिविरहाकुलवल्लभयुवति सखीवचनं पठनीयम् ॥

वाहन मकर रसालक शरकर, आँकि नवाओल माथे ॥
कातरि वचन उचारि कहै, हम वेचल मन तुअ हाथे ।
विमुख देखि तोहि दगध सुधाकर करइत कत उतपाते ।
कखनहुँ ध्यानि अहाँक स्वरूप वताहि जकाँ कहे वाते ।
हसय कनय कलपय मदमातलि अंक गहे भ्रम हाथे ॥
कुमर एहन हम देखि पधारल शशिमुखि सहे उत्पाते ।
जे जयदेव भनल वर पाँति सुनाओल राहिक वाते ॥

११० तिरहुति ॥

हे हरि राहिक देखल नेह ।
छनछन जरय सतत छन देह, वनवन भागय पुरुपक नेह ॥
कलकल दगध विरह दुरि आगि, शरशर मारल मन्मथ जागि ॥
जत जत आश करै इहो नारि, तत तत माधव रहे परतारि ॥
नितनित मुरलिक धुनि सुनि कान, नहिं नहिं पाविय यदुकुल चान।
केओ केओ डाइनि कैलक टोन, अपन अपन दिशि खिचलकसोन॥
छन छन कुमर सुमरु परिहास, कहु कहु कतै गुनी करु वास ॥

१११ ऐजन ॥

हे हरि, हे हरि शयन सुखाय, पाटल पुहुप सकल कुम्हिलाय ।
राहि विछाओल नयन वहाय, सव सखि हिलिमिलि शयन वनाय॥

मकर=गोहि, कामदेवक वाहन, रसालक=आमक, आँकि=लिखि ॥

राहिक=राधाक, कलकल=रत्ती रत्ती, दुरि=दुष्ट, जत जत=जतेक, तत-तत=ततेक, धुनि=वोली, परिहास=हँसी (सखी सभक कैल), गुनी=ओझा ॥

शयन=सेज, पाटल=विछाओल, पुहुप=फूल, नयन वहाय=कनैत,

सुरभित पुहुप देल छिरिआय, एहि पथैं आओत वसिया वजाय ।
कत भल टाँगल तुअ तसवीर, हे हरि राहिक दृग भरु नीर ।
विभ्रम अंक गहे तुअ ध्यान, तखन प्रमुदि छन करइछ गान ॥
तुअ पथ हेरि हेरि कुमर वखान, राहिक मुख जनुचौठिक चान ॥

---

११२ ऐजन ॥

माधव, की कहु सुन्दरि रूपे ।
कतेक जतन विहि आनि समारल, देखल नयन स्वरूपे ॥
पल्लवराज चरन युग शोभित गति गजराजक भाने ।
कनक केदलि पर सिंह समारल तापर मेरु समाने ॥
मेरु उपर दुइ कमल फुलायल, नाल विना रुचि पाने ।
मणिमय हार धार वहु सुरसरि, तैं नहिं कमल सुखाने ॥
अधर विम्बसन दशन दाड़िम विजु, रविशशि उगथि कपासे ।
राहु दूर वसु निअरों ने आवथि तैं नहिं करथि गरासे ॥
सारँग नयन वचन पुन सारँग सारँग तसु समधाने ।
सारँग उपर उगल दश सारँग कीर करथु जलपाने ॥
भनहि विध्यापति सुनु व्रजयोवति ई थिक लछिम समाने ।
राजशिवैसिंह रूपनरायन लखिमा देइ प्रति भाने ॥

पथैं=बाटे, वसिया=मुरली, राहिक मुख जनु चौठिक चान=राधाक मुँह केओ देखे नहि चाँदक खोम सँ जे एहनि अभागलिक मुँह देखब तँ अधलाहे हेत ॥

विहि=विधाता, ब्रह्मा, समारल=वनाओल, पल्लवराज=कमल, गजराज=मस्त हाथी, कनक=सोना, कनककेदलि=सोनक थंभ, मेरु=पहाड़, नाल=डाँट, निअरो=लग, विम्ब=विम्वफल, दशन=दाँत, रवि पासे=चन्द्रमासनमुख में बालसूर्य सन लाल सिन्दुरक शोभा, सारँग=हरिण, सारँग=कोइल ॥

११३ तिरहुति।

पाहुन देखल जे हम हाले।
*नव कलिका वरवासवली कथिलै तेहि उपर फेकल शाले॥
अनुताप वियोगक आगि जरै, झुलसे वनिता हमको कहु हाले।
झामरि राहु गरासल जँ-मुख चन्द्र उगाड़ल डूबल ताले॥
वाहु मृनाल हिलाय हिलाय सुधाकर जोति सुधा धरि हाले।
हीन दृगंचल, अंचल वीच मनोजक कंदुक झापल वाले॥
भूषन भार समान बुझै, फसली जनु कामिनि मन्मथ जाले।
विशिखा वलि कामक देह झँपय-व्रन लोहित देखल राहिक भाले॥
माधव तोंहर ध्यानक वीच वताहि जकाँ ललना करे ताले।
मलयाचल वायुक ताप हरै कवरी सुख झापिय राखल वाले॥
कखनो विहसे, कखनो विलपे, कखनो कर तोड़य ग्रीवक माले।
कखनो सखि वैसि कदम्वक छाँह झुकाय करे कय कामिनि भाले॥
माधव सुन्दरि कानि कहे, हम आँजल सिन्दुर आँचर लाले।
आउरे कीर कुमार कहे, हरि आउरे, आउरे, रे, नन्दलाले॥

---

* विगड़ल भाषा वहुत पुनि, छन्दक दोष निहारि।
संशोधक करताह की, पाठक पढ़थु सुधारि॥ (सी. आ.)

पाहुन=श्रीकृष्णजी (एहिठामक अर्थ), कलिका=कली, वर वासवली=सुगन्धिवाला, शाले=दु ख, अनुताप=दुख, वनिता=स्त्री, उगाड़ल=उग्रास कैल, ताले=पोखरिस, वाहु=वाँहि, मृनाल=कमलक डाँट, सुधाकर=चन्द्रमा, सुधाधार=अमृतकैं धैकै, अमृतमय ठोरहोजकर, दृगञ्चल=आँखिक दृश्य, मनोजक=कामदेवक, कन्दुक=गेन, व्रन=घाव, कवरी=केश, आँजल=रँगल, कीर=सुगा।

भावार्थः—दूती श्रीकृष्णजी सँ कहै छथिन्ह, जे हे पाहुन श्रीकृष्ण ! राधा क हाल हम जे देखल से की कहू । राधा तँ सुगन्धि सहित नव फूलक कली जँका छथि ताहिपर अपने दुःख कियेक देल ! ओ सखी राधा वियोगक आगि में जरैत दुख पबैत अछि और धाह सँ से सुन्दरि झुलसि गेल । ओ ज्ञानसनि भै गेलि मानू राहु क ग्रहण कैल दुखरूपी सरोवर सँ तुरन्त छानलि उदास हुनक मुखरूपी चन्द्र हो, अर्थात् हुनक मुँह फीका पडल अछि । सखी राधा चन्द्रमाक ज्योति कें, अथवा अमृतमय ठोरवाली राधा चन्द्रमा कें अपन फूलक डाँटसन हाथ कें हिलाय हिलाय टारि रहलि अछि; हुनक देखब मन्द भेल और सतत कामदेवक गेन (स्तन) कें अपन आँचर क तर झपने रहै अछि । ओ गहना गुरिआ के आब भार जकाँ बुझैछ और विरह दुख में ओ तहिना फसि गेलि जेना कामदेवक जाल में फसल होथि । हुनक शरीर कें कामदेवक वाण झाँपि लेलक अछि ताहि वश राधाक माथ लाल देखल-सिन्दुर सँ रांजलि कें एहि प्रकार कैह छथि—और हे माधव ! सखी अहाँके ध्यान कै वताहि जकाँ कार्य करै अछि; ओ वाला मलयागिरि पहाड क सुगन्धि पूर्ण वायु क दुख पावि तकर निवारणार्थ नागिनि सँ केश लटकें मुँह पर पसारि रखने अछिः जे ओ वायु कें पीवि लियो फेर कखनो हँसैछ, कखनो कनैछ और कखनो हाथ सँ अपने माला हारी तोड़ैत अछि । फेर कखनो हमरि सखी कदम्ब क छाँह में अपने हाथ पर माथ राखि वैसि कें चिन्ता करैछ ताहि ठाम हे कृष्ण, ओ कानि २ कहैछ जे हे माधव ! हम अपने आँचर के नोर-पसीनासँ भरल मुँह के पोछैत २ सिन्दुर कें लगलें लाल २ कैल—हे सूगा श्रीकृष्ण नन्दलाल, आउ २, ओहि आँचर पर आउ ।

११४ वटगमनी ।

जाइत देखल पथ नागरि सजनिगे, आगरि सुबुधि सयानि ।
कनक लता सनि सुन्दरि सजनिगे, विहि निरमाओले आनि ॥
हंसगमनि सनि चलइत सजनिगे, देखइत राजदुलारि ।
जनिकर एहनि सोहागिनि सजनिगे, पाओल पदारथ चारि ॥
नीलवसन तन घेरल सजनिगे, शिर लेल मटुकि सँभारि ।
तापर भमर पिवय रस सजनिगे, वैसल पंख पसारि ॥
भनहि विध्यापति गाओल सजनिगे, दृढ़ भै करु समधान ।
तोहि छाड़ि भूप दोसर नहिं सजगिगे, राघवसिंह रस जान ॥

---

११५ तिरहुति ।

माधव, आव ने जिउत धनि राही ॥
जतबा जेकर लेने छलि सुन्दरि, से सब सोपलक ताही ॥
चानक सन मुख शशिकें सोपलक, लोचन मृगकें देले ।
दशन दशा दाड़िमकें सोपलक, श्रीहत सुन्दरि भेले ॥
गमन भास धनि करिनिए सोपलक, पिककें सोपलक वानी ।
केशपाश चामर कें सोपलक, एतबो अयलहुँ जानी ॥

पथ=वाटमें; नागरि=सुन्दरि; आगरि=चतुरा; सुबुधि=बुधियारि; सेयानि=समर्थ; कनकलता=सोनक लती; सोहागिनि=स्त्री; पदारथचारि=अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष; नीलवसन=नीलरंग साड़ी; समधान=होश ।

धनि राही=सखी राधा; सोपलक=आपस दैदेलक; श्रीहत=उदास; गमनभास=चलव; करिनिए=हथिनी के; पिक=कोइली; केशपाश=केशक गुच्छा;

हरि हरि कै पुन उठय धरनि धै, सगरि रइनि रहे जागी ।
तोहर सिनेह जिवन धरि जीवय. अछि धनि एतवहिं लागी॥
भनहि विद्यापति सुनिअ मधुरपति, गमन ने करह विलंबे ।
जाय पिआवह अधर-सुधारस, तैं पुन जीवे तैं जीवे ॥

---

११६ एंजन ।

माधव, सिरिस कुसुम सनि राहे ॥
मधु लोभें मधुकर करि कौशल, नवरस पिवि अवगाहे ॥

नामर=चवर; धरनिधै=माटिधं; मधुरपति=श्रीकृष्ण; अधरसुधारस=ठेरक अमृत ॥

भावार्थः—दूती श्रीकृष्ण सँ कहैछ, जे हे माधव सखी राधा आब कोना जिउतीह, । उदासमै अपन मुखक शोभा चन्द्रमा कें । आँखिक शोभा हरिन कें । दाँतक छवि दाड़िम कें सौंपि, उदास भै पुन चलब हाथिनी कें वाजब कोइली कें, केशक शोभा चवँर कें आपस फेर देलक—एतेक हाल हम जानि अयलहुँ अछि । पुन सखी माटिधैं अपनेक नामलैत उठैछ, भरि राति जगलिएर हैछ ओर अपनेक प्रेमक कारणें ताही लागि कोनहुना जिवैछ । विद्यापति कहै छथि जे दूती पुनः कहै लगलथिह हे श्रीकृष्ण तैं अपन राधा सँ भेट करबा में विलंब जनि कैल जाओ आओर मुमुर्षु राधा कें अपनठोरक अमृत ।पिआउ तँ प्रायः ओ जीवि जाथि अन्यथा हमरा सन्देह होइछ जे ओ जिउतीह नहिं ॥

सिरिसकुसुम=एकप्रकारक फूल ।सिरिस नाम; अत्यन्तकोमल, मधुकर=भ्रमर,

पहिल वयस धनि प्रथम समागम, पहिलुक यामिनि यामे ।
आरत रति परतीतो ने मानय, की करु केलिक नामे ॥
अङ्कम भरि हरि शयन सुताओल, हरल वसन अवशेखे ।
चापल रोष वारि दै जामिनि, मेदिनि देल उपेखे ॥
एक अधर कर निम्ब निरोधल, दुहु पुन तीत ने होई ।
कुचयुग काँच पाय शशि लेखल, कीलै रहत धनि गोई ॥
आकुल अलप वेआकुल लोचन, आरत पूरल नीरे ।
मन्मथ मीन वंशि लै वेधल, दह दह चहुँदिशि फीरे ॥
सहसराम भन दुहुक मुदित मन, मधु लोभे से जीवे ।
असह सहै कत कोमल कामिनि, यामिनि जिउ दै जीवे ॥

---

११७ (तिरहुति)

हरि हरि विलखि विलापिनि रे, लोचन जल धारा ।
तिमिर चिकुर वन पसरल रे, जनु विजुरि अकारा ॥
नील वसन तन घेरल रे, उर मोतिक हारा ।
सजल जलद कत झाँपव रे, डगमग करु तारा ॥

यामिनि यामे=पहिलपहर; जामिनि=राति; मेदिनि=पृथ्वी; उपेखे=भरि; उपेक्षकै; गोई=नुकाय; लोचन=आँखि; मन्मथ....फीरे=जखन काम देवक वंशी (एक प्रकारक लोहक नुकसी जाहि सँ माछ मारल जाइछ) कामिनिकाँ लगलैन्ह तै ताहिसँ वेधलि उम्हर इम्हर अँगुनाय लमलीह; असह=नहि सहैक योग्य ॥

विलखि=विलापकै; तिमिर...अकारा=केशरूपी अन्धकार में नोरक धारा विजुली सन जानि पडै छल; सजल जलद=जल सँ भरल मेघ;

उठय खसय कत योगिनि रे, विछिया जुग जाती ।
पवन पलटि पुन आओत रे, जनि भादव राती ॥
यामिनि सबकँ बरननि रे, विरहिनि धरि बाना ।
सब सँ बड़ थिक अनुभव रे, धीरज धरु रामा ॥

---

११८ ऐजन ।

आजु देखल एक कामिनि रे; नवदामिनि नेहा ।
नील वसन लखि आतुरि रे, जनु जलद सिनेहा ॥
विसरल गिरि नयनाञ्चल रे, जनु लज्जित चाने ।
तनु मुख लखितहिं वरजल रे, सहि सहि अपमाने ॥
अमल कमल दल गञ्जित रे, लखि नयन विशाले ।
जौं लज्जित भै खगपति रे, करु विपिन विलासे ॥
युवजन मानस हाटक रे, अनुछन वर जोरी ।
जनु से कुचयुग बान्हल रे; कसि कञ्चुकि डोरी ॥
हर्षनाथ भन मन दे रे, नागर अनुमाना ।
पूर्व जन्म हम देखल रे, लोचन अभिरामा ॥

बाना=रूप; रामा=स्त्री ॥

नवदामिनि=नवीन मेघ सन; गिरि=पाहाड़; नयनाञ्चल=आँखि प्रदेश; वरजल=मना केल; अमलकमदलगांजित=कमलक सुन्दर दल कें मातु कैनहार; खगपति=गरुड़; विपिन=वन; हाटक=सोना; नागर=पुरुष; अभिरामा= सुन्दर ॥

११९ ऐजन ।

आजु देखल एक कामिनि रे, दामिनि सन रूपे ।
चन्द्रबदनि मृग लोचनि रे, गति परम अनूपे ॥
कुन्तल नमिअ विराजित रे, मुख लसु लाल पाने ।
अमिय लोभ सखि चहु दिशि रे, फिरि रहु लपटाने ॥
अधर दशन छबि की कहु रे, अनुपम तनु कारे ।
वदनक निकट विराजित रे, दाड़िम दल सारे ॥
कनक लता युग उपमित रे, कुच युग निरमाये ।
मन जानत जिति राखल रे, दुन्दुभी बजाये ॥
जखन उपर रोमावलि रे, छबि बुझि सँग गोपे ।
गुप्त निधी जिन विसरल रे, तन मन्मथ रोपे ॥
भानुनाथ भन मन दै रे, कत कयल वखाने ।
कवि गुन बूझथु आबहु रे, निज मन अनुमाने ॥

---

१२० दण्डक छन्द ।

आजु पहु सँग रमलि कामिनि, करत कौतुक वितल यामिनि,
अति अनोदरि भेलि वाहर चित ने ठाहररे ॥

-- दामिनि=मेघ; चन्द्रवदनि=चन्द्रमा सन मुँह हो जनिक; गति=चालि; अनूपे=विचित्रे; कुन्तल=केश; नमिअ=लिबिकै; अमियलोभ=अमृतक लोभें; दशन=दाँत; वदनक=मुँहक; दाड़िमदलसारे=दाड़िमक दाना; कनकलता=सोनाक लता; युग=दुइ; उपमित=तुलनाकैल; दुन्दुभी=तुरही बाजा; रोमा-वलि=रोइयां; गुप्तनिधी=जेकरधन गुप्त राखल रहै छ ॥

रमलि=विलासकैल; कौतुक=केलि; यामिनि=राति; ठाहर=स्थिर;

नविन नागरि झोर डारल, घाम भीजल वसन गारल,
जनि पराभव कतेक पाओल साज टूटल रे ॥
ननदि मन्दिर धाय पैसलि, चरण गहि हिय हारि वैसलि,
वैसि नारि डोलाय चामर सुरस भाषा रे ॥
तुलाराम मन समुझि कामिनि, छुटल डर पुन द्वितिय यामिनि।
सलरिकै रस पसरि जायत मन जुरायत रे ॥

१२१ तिरहुति परक भजन ।

प्रीति निवाहिय ओर, सजन हो ।
राधे चललि वेचै दधि गोकुल, यमुना जल सहजोर ।
अञ्चल धै हरि रोक बाट में, वहियाँ धै झिकझोर ॥
जनिक सङ्ग रहै से निशि वासर, पल नहिं आँखिक कोर ।
से प्रभु एहन दुरलभ भेलाह, कठिन पड़ल जिउ मोर ॥
हीत प्रीत जानथि नहिं मोहन, चितवन व्रज के ओर ।
माधवदास कृष्ण छवि वरनथि एहि जग जीवन थोर ॥

१२२ बारहमासा ॥

राधा कथन सखीक प्रतिः—

चैत हे सखि चरन चञ्चल, चित्त नहिं थिर चैन रे ।

झोरि डारल=झोरि देल, मचोड़ि देल; पराभव=पराजय; साज=शृंगार; गहि=पकड़ि; चामर=वीअनि; सुरस भाषा=रसक कथा; द्वितीय=दोसर; जुरायत=पूरत ॥

दधि=दही; सहजोर=बाढ़ि; निशिवासर=दिन राति; दुर्लभ=पवैक योग्य नहिं; हीतप्रीत=नीक विषय; चितवन=मन; छवि=शोभा ॥

मधुप गुञ्जय बरिस मधु चुबि, रसरहित दुहु नैन रे ॥
वैशाख जँ नवरङ्ग शोभा आम दरशन देल रे।
कुसुम सह सह महक मह मह श्याम कत चल गेल रे॥
जेठ वारिद नवल नबि नबि, मदन रस बरसाय रे।
रइनि बड़ि अन्हिआरि हे सखि, प्राण तनहिं सुखाय रे॥
अषाढ घेरल पुहुमि भरि सखि, ताप तपल बुझाय रे।
लता तरु सँ देखु लपटलि, पिउ कतै बिरमाय रे॥
साओन अहिनिशि बरिस बादरि, सून पहु बिनु खाट रे।
कत दिना गत भेल हे सखि, सून पहु करें खाट रे॥
भादव गत सन भेल हे सखि, केहनि चमकत राति रे।
बितल चारिहु मास वर्षा, देल पिउ जिव साति रे॥
आसिन घर घर बाज मङ्गल, सकल ललना गाय रे।
पुरल सबके आस कहु की, करम हमर लिखाय रे॥
कातिक सखि सब मुदित खेलय, श्याम चकवा खेल रे।
हम कतै बसि सेज पर सखि, नयन नीरस भेल रे॥
मास अगहन सभहिं ललना, फलित देखल भाग रे।
ललित खेल पसार पहु संग, बिरह मोर मन जाग रे॥
पूस लघु दिन राति बड़ि थिक, केहन सुन्दर योग रे।
सुतलि रहितहुँ कन्त संग सखि, करम नहिं मोरा भोगरे॥

मधुप=भमर; रसरहित=विना रसक; नवरँग=नेवो; वारिद=मेघ; मदन-रस=काम चिन्ता; पुहुमि=धरती; तरु=गाछ; बिरमाय=विश्राम कै; जिवसाति=प्राण कें दण्ड, पीड़ा; ललना=सखी; मुदित=खुशीभै; श्याम चकेवा=स्यामा चकेवा; नीरस=उदास; फलित=फरल; ललित=सुन्दर; लघु=थोड़; योग=अवसर;

माघ लहु लहु शीत लागय, कुसुम फूटल भारि रे।
हमर कन्त विदेश वसे सखि, गेल से परतारि रे॥
मास फागुन कुमर भन पिउ कतै कर तोहे वास रे।
केहन वासल रङ्ग राखल व्यर्थ वारह मास रे ॥

---

१२३ तिरहुति ।

कथि लै नेह लगाओल रे, अपनहि अपन फसाओल रे।
तिल भरि चैन ने आवय रे, एकसर सेज ने भावय रे॥
तरु लतिका लपटाइलि रे, केकर धै विलगाइलि रे।
वदन प्रगट शशि जागल रे, कमल ऊपर अलि भूलल रे॥
तिलक काजर की विसरय रे, विरह सगर तन पसरय रे।
हम अवला वरु कामिनि रे, जागि अगोरल यामिनि रे॥
नैन निन्द नहिं आवय रे, अहि निशि किछु की भावय रे।
कुमर मनक के जानत रे, मन मन सब छुन कानत रे॥

---

१२४ तिरहुति ।

आजु देखल हम जे व्यवहार, सुरस सगर तन रहे उपचार।
आवने जायव पुन फुलवारि, सहस भमर लटकल धै सारि॥

वासल=सुगन्धित कैल ॥

भावय=नीक लगै; करधै=हाथ धैकै; विलगाइलि=हटादेलक; मनक=मनक वात ॥

व्यवहार=लीला; सुरस=काम; उपचार=प्रसार; सहस=हजारो; सारि=साड़ी;

विदति कयल जे मुरुख वसन्त, कहु सखि कते रहे मोर कन्त ।
मन सिज विषम विषम शर मार, चूवि गरल जत सुरसक सार॥
प्रथम देखल हंसिनि करु केलि, चकवा चकई करइछ खेलि ।
सरसिज सर में फुलल हजार, भन भन सर भरि भमर पथार ॥
अपनअपन धनि धरथि अगोरि, रभसि कमलिनी रहु मुख मोरि।
अधर विमल दल दशन गड़ाय, कखनहुँ अङ्कम माझ समाय ॥
भमर एक भुलि कैलक हाल, खंडल अधर परम जंजाल ।
महमह वास चपल चित भेल, सुरति उड़ल कत दुरि चल गेल॥
अवला जानि करय उपहास, हे सखि आवने मिलनक आस ।
भनहि कुमर रमनी धरु धीर, जगभमि आओत सुपुरुष कीर ॥

---

१२९ तिरहुति ।

चन्दा उग जनु आजुक राति, पियाकें लिखव पठायव पाँति ॥
साओन सँ हम करव पिरात, जत अभिमत अभिसारक रीति ।
अथवा, येह बुझाएव हसी, पिबि जनु उगिलह शीतल शशी ॥
कोटि रतन जलधर तोंहे लैह, आजुक रइनि घनतम कै देहे ।

विदति=दुख; कन्त=स्वामी; मनसिज=कामदेव; विषम=दुष्ट, कठिन; सरसिज=कमल; सर=सरोवर; विमल दल=सुन्दर दल; दशन=दाँत; माझ=मे; वास=सुगन्धि; चपल=चंचल; सुरति=ध्यान; उपहास=हसी; भमि=भ्रमणके; सुपुरुषकीर=पंडित पुरुष ॥

पाँति=चीठी; पिरीत=प्रेम; जत=जतेक; अभिमत=इच्छा कैल; अभिसारक=स्वामीक ओतै चलव; शशी=चन्द्रमा; जलधर=मेघ; घनतम=वहुत अन्हार;

भनहि विद्यापति शुभ अभिसार,भल जन करथि परक उपकार॥

---

१२६ तिरहुति ॥

चन्दा, दुरजन गमन विरोधी ।
उगल गगन भरि नखत वैरि भेल, पहु के आन परवोधी ॥
आगमन प्रेम गमने कुल जायत, चिन्ता पाँक लागलि करिनी ।
हम अबला दशदिश भमि झाखब, जँ व्याध डरें भीरु हरिनी॥
कुहु भरमे पथ पद आरोपल, आय तुलाइलि पञ्चदशी।
हरि अभिसार मार उद्वेगक, कौने निवारब कुगत शशा ॥

---

१२७ तिरहुति ।

(श्री कृष्णक पश्चात्तापजनक कथन)

काजर साजल राति, घन भै बरिसय जलधर पांति ।
बरिस पयोधर धार, दुर पथ गबन कठिन अभिसार ॥

परक=दोसराक ॥

दुरजन=दुष्ट; गमन विरोधी=जेवा में बाधा कैनहार; गगन=आकाश; नखत=नक्षत्र, तारा; वैरि=दुश्मन; आन=आनत;परवोधी=बुझाकै; आगमने=हुनक अयवा में; गमने=हमरा जेवा में; करिनी=हथिनी; व्याध=व्याधा; भीरु=डेराइलि; पद=पैर; पञ्चदशी=पूर्णिमा, मार=कामदेव; उद्वेगफक=उत्तेजनाकैनहार; कुगत=दुष्ट ॥

साजल=भरलि सनि; धन=सघन; जलधर=मेघ; पयोधर=मेघक; दुपथ=खराबबाट;

जमुन भयाउनितीरे, आरति धसति पाउति नहीं तीरे।
विजुरि तरङ्गे डराई, धनि भल करे जें आपस जाई ॥
झाखथि देव मुरारी, पहिनिशि कोनपरि आओत गोआरी।
भनहि विद्यापति वानी, तोंहे तरुए कान्ह नारिसयानी ॥

---

१२८ तिरहुति।

राधा कथन सखीसँ:—

कोमल कमल कियै विधि सिरजल, मोर चिन्ता पिअ लागी।
चिन्तहिं सखी निन्द नहि सूतिय, रइनि गमाविय जागी ॥
वरकामिनि हे काम-पिआरी, निशि अन्हिआरि डेराही।
गुरु नितम्बभरे चलहुने पाविय, कामक पोड़लि जाही ॥
साओन मेघ झिमिक झिमि वरिसिय, वहल भमय जल पूरे।
भनहि विद्यापति विजुरिरेह चक, दीठिने परसय दूरे ॥

---

१२९ तिरहुति।

जखन जाइय पिआशयनक पास, मन रहे मान करव कते रास।
पहुकर परश ने रहय गेआन, नीवि फुजय कखने नहिं जान ॥

आपस=लैटि; कोनपरि=कोना; गोआरी=राधा; तरुण=समर्थ; सयानी=युवती ॥

वरकामिनि=सुन्दरि; काम पियारी=कौतुकवती; नितम्ब=डाँरक नीचाक भाग; विजुरिरेह=विजुरीक रेखा; दीठि=दृष्टि; परसय=जाय ॥

मान=हठ; परश=छुवि; नीवि=डरकसना;

कोन परि पियासँ करब सखिमाना, मनमोर हरथि चतुर पंचवान।
भनहि विद्यापति मन नहिं थीर, कामक आरति तरुनि शरीर॥

---

१३० तिरहुति।

(श्री कृष्णक प्रति राधाजीक कथन)

* लोचन अरुन बुझल बड़ भेद, रइनि उजागर गरुअ निवेद।
ततहि जाह हरि ने करह लाथ, रइनि गमौलह जनिके साथ॥
कुच कुंकुम माखल हिय तोर, जनि अनुराग राजि कुरु गोर।
भनहि विद्यापति धजवहु बाध, बड़क अनय मौन गइ साथ॥

---

१३१ तिरहुति।

श्री कृष्णक राधाजीक प्रति कथनः—

आरेआरे भमरा तोहीहित हमरा, बौंसि आनह गजगामिनि रे।
आजुक रुसलि काल्हि जौं बौंसब, तीति होइति मधुयामिनि रे॥

कोनपरि=कोना; पञ्चवान=काम; तरुनि शरीर=युवतीक शरीर॥

लोचन=आँखि; अरुन=लाल, उजागर=जागल; गरुअ=भारी; निवेद=ज्ञात होइछ; कुच=पयोधर; राजि=रंगि; बाधा=रोक; अनय=अन्याय; साध=अवलम्ब॥

गजगामिनि=हाथी कचालि चलतिह ारि; मधुयामिनि= कामपूर्ण राति;

---

* मूलपद श्रीजयदेवकविक देखू।
रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिवेपम्।
वहति नयनमनुरागमिवस्फुटमुदितरसाभिनिवेशनम्॥
(देखू गीत ३०३)

तीति रजनिश्रा तिन जुग जनिया, दिठिहुंक श्रोट देशान्तर रे।
सरोवर माझ कमल अलसायल, नगर उजरि भेल पांतर रे॥
एकसर मन्मथ दुइ जिव मारे, अपन अपन भिन वेदन रे।
दुहु मन मिलिय कवने वेकताएव, दारुन प्रथम निवेदन रे॥
मानक भञ्जन जस गुन रञ्जन; विद्यापति कवि गाश्रलो रे।
लखिमा देइपति शिवसिंह नरपति, पुरुवजनम तपे पाश्रोल रे॥

---

१३२ तिरहुति।

दूतीक कथन श्री कृष्णक प्रतिः-

माधव ई नहिं उचित विचारे।
जनिफ एहन धनि कामकला सनि, से किय करु व्यभिचारे॥
प्रानहु ताहि अधिक कै मानब हृदयक हार समाने।
कोनपरि युवति आनकैं ताकब, की भेल हुनक गेश्राने॥
कृपन पुरुष के केओं नहि भल कहे, जग भरि करे उपहासे।
निजधन अछइत नहि उपभोगब, केवल परहिक आसे॥
भनहि विद्यापति सुनु मधुरापति, ई थिक अनुचित काजे।
मांगि लायब वित से यदि हो नित, अपन करब कोन काजे॥

---

१३३ तिरहुति।

श्री राधाक कथन सखी सँ वियोगसूचक-

जनम होश्रए जनु-जौं पुन होय, युवती भे जनमै जनु कोय।

बेदन=पीड़ा; वेकतायब=प्रगट करब; दारुन=कठिन; भंजन=टूटब॥
धनि=स्त्री; कामकला=रतिप्रिया; व्यभिचारे=परस्त्रीरामन; वित=धन।

होय युवति-जनु हो रसवन्ति, रस बूझय-नहिं हो कुलवन्ति ॥
ईश्वर मांगु विधाता तोहि, थिरता दिहह अवसानहु मोहि ।
मिलि स्वामी नागर रसधार, परवस जनु होए हमर पिआर ॥
होए जँ परवस-बुझय विचारि, पाय विचार हार कोंने नारि ।
भनहि विद्यापति अछि परकार, दन्द समाप जीव जौं पर ॥

१३४ तिरहुति ।

अपथ सपथ कै कह कत रूसि, खनहि मगन खन जाइछ रूसि ।
हम ने जायव माइ दुरजन सङ्ग, नहिं सरलासय सामर रङ्ग ॥
अवलोकव नहिं माधव रूप, आँखि अछति कोना डूबव कूप ।
विद्यापति कवि मान बुझाव, बहुत हठहिं सँ मन पछताव ॥

१३५ ऐजन ।

जतहि प्रेम अछि ततहि दुरन्त, पुनकरु पलटि पिरित गुनमंत ।
सबठाँ सुनिय एहन व्यवहार, पुन टूटय पुन गाँथिअ हार ॥
हे हरि हे हरि अहाँ सयान, विसरिय कोप होउ समधान ॥
प्रेमक अङ्कुर अहँ जल देल, दिन दिन बाढ़ि महातरु भेल ॥
तुअगुने गुनल ने सौतिनि आछ, रोपिने काटह विषहुँकगाछ ॥
जगत विदित भेल तुअ मोर नेह, एक परान कयल दुइ देह ॥
भनहि विद्यापति करव उदास, वड़क वचन मैं करु विश्वास ॥

दुरन्त=क्षणिक विसंवाद; सयान=बुधियार; समधान=होश में; कोप=क्रोध; महातरु=वड़कागाछ; रोपिने…गाछ=विषवृक्षं समारोप्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् । विदित=ज्ञात; वड़क=पैघलोकक ।

१३६ ऐजन ।

गगन गरज घन यामिनि घोर, रतनहु लागि ने सञ्चर चोर ।
तखनहु तेजि अयलहु निज गेह, अपनो ने देखिये अपनहु देह ॥
तिल एक माधव परिहरु मान, तुअ लागि संशय पड़ल परान ।
दुसह जमुनतरि अयलहु भागि, कुचयुग तरलतरनि हैं लागि ॥
दिय अनुमति जे जुझिय पञ्चवान, तुअसन नगर नागर नहि आन ।
भनहि विद्यापति नारि स्वभाव, अपनहि अनुमत उकुति सुनाव ॥

---

१३७ ऐजन ॥

(दण्डक)

कुसुमवान विलास कानन केस सुन्दर रेह ।
निविड़ नीरदरुचिर दरसय अरुन जनि निज देह ॥
आजु देखु गजराजगति वरजुवति त्रिभुवन सार ।
काम देवक विजयवल्ली विहित विहि संसार ॥

रतनहुँ···चोर=तेहन अन्हार ओ मेघ अछि जे रत्न, हीरा इत्यादिहुंक लोभें चोरहु नहिं चलैछे; तिल एक=कनिके; दुसह=बहुतकठिन; तरि=हेलि; अनुमति=आज्ञा, पंचवान=कामदेव; उकति=कथा ॥

कुसुमवान=काम; कानन=वन; केस=केश; रेह=रेखा; निविड़=सघन; नीरद=मेघ; रुचिर=सुन्दर; अरुन=लाल; गजराजगति=मत्तहाथी सनि चलनिहारि, वरयुवति=सुन्दरि युवती, त्रिभुवनसार=तीनलोक में परमसुन्दरी, राधा, विजयवल्ली=विजयलता, विहित=कैल, विह=ब्रह्मा;

शरदशशधर सरिस सुन्दरि वदन लोचन लोर ।
विमलकंचन कमल चढ़ि जनि खेलु खञ्जनि जोर ॥
अधरपल्लव नव मनोहर दसन दाड़िम ज्योति ।
विमल विद्रुमदल सुधारस सींचि धरु गजमोति ॥
मत्तकोकिल वेनु वीनानाद त्रिभुवन-भास ।
मधुर हास पसाहि आनल करय वचन विलास ॥
अमरभूधर सन पयोधर महघ मोतिमहार ।
हेमनिर्मित सम्भुशेखर गंग निर्मल धार ॥

---

१३८ ऐजन ।

कानन कान्ह कान हम सूनल, भै गेल आनक आने ।
हेरइत शङ्कररिपु मोहि हनलन्हि, की कहु तनिक गेआने ॥
चानन चान आँग हम लेपल, तैं वाढ़ल अति दापे ।
अधर लोभ वश विषधर ससरल, धरै चाह पुन सापे ॥
भनहि विद्यापति दुहुक मुदित मन, मधुकर लोभित केलि ।
असह सहत कत कोमल कामिनि, यामिनि जिव दै गेलि ॥

---

१३९ ऐजन ।

छलहुँ एकाकिनि गथइत हार, ससरि खसल कुचचीर हमार ॥

शरद शशधर=शरदकचन्द्रमा, सरिस=बराबरि, लोर=नोर, अधरपल्लव=ठोरकदल; विमल=शुद्ध, विद्रुमदल=मूँगा, सुधारस=अमृत, गजमोति=गजमोतिक माला; भूधर=पर्वत, महघ=अमूल्य ॥

शङ्कररिपु=मदन, दाप=थाह, विषधर=सर्प, असह=परमदुःख ।

एकाकिनि=एकसरि, कुचचीर=आँचर,

तखन एकाएक आएल कन्त, कुच की झाँपब निविहुँक अन्त ॥
की कहु सुन्दरि कौतुक आज, पहु राखल मोर जाइत लाज ॥
भेल भावभर सकल शरीर, कतेक यतन कै राखल थीर ॥
धसमस करति धरिय कुच जाँति, सगर शरीर कपय कत भाँति ॥
भनहि विद्यापति तखन हुलास, मूनल कमल वेकत भेल हास ॥

---

१४० ऐजन ।

सखीक कथन सखीसँ राधाकृष्णक प्रतिः—

हरि धरु हार चिहुंकि परु राधा, आध माधव कर गिम रहु आधा ॥
कपट कोप धनि मुख धरु फेरी, हरि हंसि रहल वदनविधु हेरी ॥
मधुरिम हास गुपुत नहिं भेल, तखन सुमुखि मुख चुम्बन लेल ॥
करधरु कुच आकुलि भेलि नारी, निरखि अधरमधु पिवय मुरारी ॥
चिकुर चमर झरु कुसुमक धारा, पिवि कहुँ तम जनि उगिलयतारा ॥
विद्यापति करु सुन्दर बानी, हरि हंसि मिललि राधिका रानी ॥

निविहुँक अन्त=कोचवन्दो फुजि गेल, कौतुक=तमासा, भावभर=रोमाञ्चित, जाँति=दावि कै, हुलास=आनन्द, वेकत=देखार ।

धरु=पकड़लन्हि, गिम=माला, कपटकोप=झुठक तामसँ, वदनविधु=मुखचन्द्र, हेरी=देखि, चिकुर......नवतारा=केशलट रूपी चँवर सँ गाथल फुल सब झरै लागल जेना अन्धकार तारा (फुल) सबकें उगिलैतहो, वानी=कथा ।

१४१ ऐजन ।

राधाक विलापः—

आव मथुरापुर माधव गेल, गोकुल-मानिक के हरि लेल ॥
गोकुल उमरल करुनाक रोर, नयनक जल देखु वहय हिंडोर ॥
सुन भेल मन्दिर सुनभेल नगरी, सुन भेल दशदिशसुनभेलसगरी।
कवने जायव हम यमुनाकतीर, कवने निहारब कुञ्ज कुटीर ॥
सहचरि सँ जहँ कयल फुलवारि, कवने जियव हमताहि निहारि॥
विद्यापति कह करु अवधान, कौतुक मुनि रहु तँ दुहुकान ॥

---

१४२ ऐजन ।

एहन करम मोर भेल रे, पहु मोरा दुरदेश गेल रे ॥
दै गेल वचन क आस रे, पलटि आयव तुअ पास रे ॥
कतेक कैल अपराध रे, पहु सँ छुटल समाज रे ॥
कवि विद्यापति भान रे, पुरुष क नहिं परमान रे ॥

---

१४३ ऐजन ।

यौवन-रूप अछल दिन चारि, से देखि आदर कैल मुरारि ॥
आव भेल झार कुसुम सब छूछ, वारि विहुन सबकेओ नहिं पूछ ॥
हमरि विनति सखि कहुगय रोय, सुपुरुष वचन झूठ नहिं होय ॥
जाधरि धन रह अपना हाथ, ताधरि आदर कर सँग साथ ॥

गोकुलमानिक=गोकुलक प्रान, रोर=शब्द, निहारव=देखव, कवने=कोना, सहचरि=सँग २, अवधान=श्रवण ।

धनिकक आदर सब ठाँ होय, निरधन जन कँ पुछे ने कोय ॥
भनहि विद्यापति राखव शील, कोकिल तेजल विपिन करील ॥

---

१४४ ऐजन ।

मोहि तेजि पिया गेल विषम विदेश, कोनपरि खेपव वारि वयेस ॥
सेज भेल परिमल फुल भेल वास, कतै भमर मोर पड़ल उपास ॥
सुमरि सुमरि चित नहिं रह थीर, मदनदहन तन दगध शरीर ॥
भनहि विद्यापति कवि जयराम, कि करत नाह दैव भेल वाम ॥

---

१४५ ऐजन ।

हरि गेल मधुपुर हम कुलवाला, कुपथ पड़ल जँ मालतिमाला ॥
की कहु की पुछु सुनु प्रिय सजनी, कोनपरि जायत दिनओरजनी ॥
नयननिन्द गेल वचनक हास, सुख गेल पिअ सँग दुख मोर पास ॥
भनहि विद्यापति सुन वरनारि, सुजनक कुदिन दिवस दुइ चारि ॥

---

१४६ ऐजन ।

एहि जग नारि जनम लेल, पहिलहि वयस विरह भेल ॥
कथि लै दव जनम देल, कठिन अभाग हमर भेल ॥
अपनहि कमल फुलाएल, से देखि भमर लोभाएल ॥
विद्यापति कवि गाओल, उचित करम फल पाओल ॥

---

१४७ ऐजन ।

सुन्दरि विरह शयनघर गेल, किये विधाता लिखि मोहि देल ॥
उठलि चेहाय वैसलि शिरनाय, चहुदिशि हेरिहेरि रहलि लजाय ॥

नेहक बन्धन सेहो छुटि गेल, दुहुकर पहुक खेलाञान भेल ॥
भनहि विद्यापति अपरुब नेह, जेहन विरह हो तेहन सिनेह ॥

---

१४८ ऐजन ।

गगन गरज घनघोर, हे सखि, कखन आओत पहु मोर ॥
उगलाह पाँचो बान, हे सखि, आवने बचत मोर प्रान ॥
करब कओन परकार, हे सखि, यौवन भेल जिव काल ॥
भनहि विद्यापति भान, हे सखि, पुरुषक नहिं परमान ॥

---

१४९ ऐजन ।

जँ हम जनितहुँ, तनि तट उपजत मदन बेआधि ।
बाहु फास लै फसितहु, हँसितहु अभिमत साधि ॥
सनमुख भ हम हेरितहु, फेरितहु सखि तन खेद ।
मनसिज शर नहिं सहितहुँ, रहितहुँ हम निरभेद ॥
परसनि भै रति सजितहुँ, बजितहु लाज निवारि ।
कँ परिरम्भन भवितहुँ गवितहुँ, गुण अवधारि ॥
अयश सुयश कै गुनितहुँ, सुनितहुँ नहिं उपहास ।
मन नहि हरि परिहरितहुँ, करितहुँ मन ने उदास ॥
नारि मनोगत अभिमत, शत शत रहस अनूप ।
कवि विद्यापति गाओल, रस बुझ शिवसिंह भूप ॥

---

१५० ऐजन ।

रंजन जगत बसन्त कँह बैसल रे, प्यारे,
कुसुमित तरुअर बास मदन चुप-पैसल रे ॥

रञ्जन जगत=संसार के शोभित कनहार॥

नवरसाल दलपूर दूर कत माधव रे, प्यारे,
कोकिल कुहुकि सुनाव कतेक जिउ साघव रे ॥
अलक कनय धरि पएर सिमन्त समारल रे, प्यारे,
कमलकोप दुहु नयन सकल रस गारल रे ॥
वयससन्धि थिक अवसर मनसिज अनुचर रे, प्यारे,
विरह विपमशर हनल जरल तन सरसिज रे ॥
फुलल नवल सब डारि कुञ्ज कुसुमित भेल रे, प्यारे,
दछिन पवन वहु मन्द अनल कन दै गेल रे ॥
के पाँती लै जायत जाय वुझाओत रे, प्यारे,
तुअ विनु जगत अन्हार दिवसमनि आओत रे ॥
कथिलै कयल दुलार प्रेम मन माखलरे, प्यारे,
कुमर विरह ज्वर वढ़ल वैद नहिं आयल रे ॥

---

१५१ ऐजन ।

की कहु हे सखि रातुक वात, विदति सहल जे कुपुरुप हाथ ॥
चिकुर वान्हि आचर कै दूर, एकसरि छलहु मान भेल चूर ॥
उजरल वेनी काजर आँखि, सवटा उजरल ठामहि साखि ॥
वसन समेटि विहुसि पहिराय, आँचर तर से रहल नुकाय ॥

नवरसाल=नव २ आमक, साधव=दाबिकै बचाय राखव, अलक=केशक लट, सिमन्त=सिउँथ, वयससन्धि=१२ स सँ १४ हम वर्पक अवस्था, अनुचर=पाछु २ चलनिहार, मनासिज=कामदेव, तनसरसिज=शरीररूपी कमल, नबल=लिवल, अनलकन=आगि क अँगार, दिवसमनि=सूर्य, माखल=ग्रहण कैलक ।

चिकुर=केश, बेनी=खोपा, ठामहिं साखि=सब ठामहिं गवाही दैत अछि ।

भनभन भमर परम रसराय, कोमल दल पर दशन गराय ॥
कथि लै याँचत मानिनि मान, अयलहुँ लै कोनहुना जान ॥
निठुर तोहर हिय अयलह त्यागि, वज्र केवाड़ ने अयलहु भागि ॥
कुमर भनहि की होयत कानि, पुरुष विश्राहल की मनमानि ॥

---

१८२ ऐजन ।

वड़ घर वेटी तैं वड़ मान, हुनक कयल सखि वड़ अपमान ।
सखि सब कहल करब व्यवहार, तैं हम कैलहुं हठक पसार ॥
भमर उड़ावल पाँखि उठाय, ओजाइते मोहि देल जगाय ॥
सगरि रइनि हम रुदन पसार, झट दै अयलहुँ तमसि वहार ॥
भमर रुसल मोरसखि चल गेल, जाइत किछु कहिओ नहि भेल ॥
स्वर दोसर पाँचम मिलि गाय, हम धनि पिक भै गान सुनाय ॥
कन्त दुरन्त कते करु बास, से सखि करथि आव उपहास ॥
कुमर करह हठ अपन विचारि, अतिशय हठ सँ होय विगारि ॥

---

१८३ ऐजन ।

कठिन परम निशि विगत वितल रे, चारि पहर हम विदति सहल रे ॥
अभरन दुइ चारि टुटल फुटल रे, हार टुटल जे सजनि गुथल रे ॥
काजर नयनपुन भिजल चुअल रे, आँचरविमल छल रंगहि भरलरे ॥
तनभरि कुसुमक विशिख गड़ल रे, वजइत हसइत रइनि वितल रे ॥

हुँनक=स्वामीक; स्वरदोसर='आ' पाँचम=उ; आउ, पिक=कोइलि; विगारि=झगड ॥

निशि=राति; विगत=काल्हुक; सजनि=सखी वहिनया; तनभरि=सम्पूर्ण देह; विशिख=वान;

परसल विरमल रभसि भमर रे, छुन पर छुन तन पुलक सगर रे ॥
सुरस मदन पुर रहनि फुटल रे, केहन सुखक दिन विदति कहल रे॥

---

१५४ ऐजन ।

सरोवर तटपर भमर वैसल रे, अरुन उगल रवि वुझि हरपल रे ।
नयनहि जलभरि वनि सरवर रे, हलंचल जल में सव जलचर रे ॥
भट दै उठल कमल पर झुक रे, कमलिनि फुजइछ लहुक लहुकरे ॥
शयशय कैलक विनति भमर रे, रसिक अलिक के करे परतर रे ॥
इत उत घुमय रहय भरि सर रे, कमलिनि मुँहपर आँचर लयलरे॥
एहिक्रम दिनमनि दिवस विगत रे,फुलिए कमलिनी सबे सकुचतरे॥
से वुझि रसिक रभसि प्रविसल रे, रमनि सुदल लै भसर झापलरे॥
भनहि कुमर भरिनिसि छल वंदरे, रसिकभमर कतकरे छलछंदरे ॥

---

१५५ ऐजन ।

गरल नयन रस कुमुदिनि ठोर, झामर वसनक उठत हिलोर ॥
कुन्तल धय उतरय खल काम, मुख पर खेलि करय अनुपाम ॥
झनझन सुनिय सतत हमकान, कुसुम विशिख झनकै कततान ॥
देखल नभमें धनु निज आँखि, ताहि झपाओल आँचर राखि ॥

परसल=स्पर्श कैलक; विदति=दुःख ॥

अरुन उगल रवि=भोरुक सूर्य उगलाह; जलचर=पानिक जीव; सर=सरोवर, क्रम=प्रकारें; प्रविशल=पैसल; छलछन्द=प्रीति रीति ॥

गरल=चूअल; हिलोर=झोंक; कुन्तल=केश; खल=दुष्ट; अनुपाम=सुन्दर; कुसुमविशिख=फूलक वान; नभमें धनु=इन्द्रधनुष;

सकल जगत नीरस जनु भेल, विरह वियोग कन्त किय देल ॥
एकसरिनीर भिजाओल देह, नयन निन्द कैलक परहेज ॥
सुपुरुप सुनलहु नागर भाव, दुहु मिलि रमन चलाओलनाव॥
से रहि कतै रहल नुकि आर, हम अवला पड़लहुँ मझधार ॥
नीरसि भेलि पड़लि पथ माँझ, निरदिस एकसरि तारक साँझ ॥
औपधि करथि कतेक पितु माय, विरह रोग तैयो नहि जाय ॥
किछु दिन वितने जायत प्रान, नहि होयत एहि ठाम मिलान ॥
माधव निठुर सुनल नहिं कान, झट पिअ आओत कुमरकभान॥

---

१५५ (क) ऐजन ।

दिन दिन समय वसन्त, हे सखि, दुरहिं वसथि मोर कन्त ॥
आजु कियै मन मन्द, हे सखि, तैं दरसन मुख चन्द ॥
यौवन भेल जिवकाल, हे सखि, ताहि लै रुसल गोपाल ॥
भनहि विद्यापति भान, हे सखि, पुरुपक नहि परमान ॥

---

१५६ चौमासा ।

छन्द=नवल नव नव विमल तरुअर, खेत धान पथार ए ।
क्रूर भानुक ताप लाघव, रइनि केहनि उजार ए ॥
एहन अपरुव योग हे सखि, कह कतै रह कन्त ए ।

दुहु...नाव=तैं दुहू गोटे मिलिकै प्रेमक नाव चलाओल; आर=नुकायल; निरदिश...साँझ=सांझक एकस्वर तारा अशुभ मानल जाइछ तैं निरदिश; भान=कथन ॥

तरुअर=गाछ सव; क्रूर=प्रचंड; भानु=सूर्य; लाघव=थोड; उजार=इजोत;

वारि वयस विताय बाला, कन्त बसल दुरन्त ए ॥
आरे अगहन शीत पड़ल दिछुआध, हमसखि पड़लहुँ विरह अगाध

सगर जगरस वरिस हे सखि, सुरस वारिस भेल ए ।
आज वसि पिक कुंज में सुन, राग पञ्चम देल ए ॥
सगरि राति विताय जागय, हमहि अवला नारि ए ।
झटिति आयब लिखब पाँती, गेल कहि परनारि ए ॥

पूसहिं आयल जारक मास, सँग सँग शयन करब छल आस ॥

शीत अविरल झरल नभ से, तनक ताप बढ़ाय ए ।
नवल पात रसाल पाओल, हमर कमल सुखाय ए ॥
पीतपट तर संग शयनक, भाग नहि विह देल ए ।
जाउ कहुगय चलह पामर, रमनि झामर भेल ए ॥

माघक शीत लगय बड़ जोर, लेत कखन पिउ जामिनि कोर ॥

मास फागुन रंगल तरु सव, जगत रंग पसार ए ।
अविर आओर गुलाव कुंकुम, भरल जगत पथार ए ॥
पहुक सङ्ग खेलाय सखि सब, निहत हमरहु आस ए ।
कुमर वरपक सारि में इहो, पोस चारिहु मास ए ॥

ऋतु पति फेकल कुसुमक पास, रसमय आयल फागुन मास ॥

वारिवयस=युवावस्था, दुरन्त=बहुतदूर; सगर=सम्पूर्ण; सुरसवारिस=कामक वर्षा; अविरल=सवछन; नभ=आकाश; रसाल=आम; कमल=तारु, हाथ पैर, मुँह इत्यादि; पीतपटतर=पीताम्बर तर; वरपक...मास ए=वर्ष जे थिक से चौपडि ताहि में ई चारिहु मास तेकर पास थिक ।

१५७ तिरहुति ।

आयल वसन्त पति वस दुरन्त, मनसिज शर मारय करय अंत ॥
मुखकमल झुरल झामर मलान, जरजर तन राखल लुबुधि प्रान ॥
की आयब हे पति मरन बाद, कर मलि मलि रहता सहि विषाद ॥
अपनहि कैलन्हि कत कत दुलार, से कैलन्हि प्रेमक कत पसार ॥
वड़ भार गनल की हमर भार, अपने कॉँ होयत पहु उधार ॥
केहन विरहक दुख कुमर भान, जानय जग में के अनत आन ॥
मनसिज धै आनहु करब घात, से भागि नुकय वरु पात पात ॥

---

१५८ ऐजन ।

हे सखि तेजह विरह क घाट, विरह घाट कैलक जिउ आँट ॥
दिनभरि भानु गगन मँह फूल, डरसँ घर वसु कमल ने फूल ॥
जाइय नहि हम फल-फुलवारि, भमर करत सखि हमर उघारि ॥
सरनहिं जाइय हो वड़ त्रास, शशिमुख भागिने करु सर-वास ॥
तें डर दिनभरि राखिय गोए, कहितहि सुन्दरि कानलि ठोए ॥
साँझक शशिडर होइछ चित्त, अनल कुवट शशि करत अनीत ॥
आठ पहर हम कुमर वखान, मन करु सखि हे माधव ध्यान ॥
वयस कुसुमदल झरत विशेष, के वुझ के वुझ विरहिनि लेख ॥

दुरन्त=विदेश; मनसिज=कामदेव; अन्त=मृत्यु; लुबुधि=लोभवश; कर=हाथ; विषाद=शोक; उधार=अयश ॥

शब्दार्थः—विरह क घाट=विरह क अवलम्बन; आँट=अकच्छ; भानु=सूर्य; गगन=आकाश; उघारि=देखार; सर=सरोवर; सरवास=जल में वास करय; गोय=नुकाय; अनल=आगि; कुघट=दुष्ट बासन; अनीत=अधलाह। लेख=वृत्तान्त ॥

१५९ गजन ।

मदनसदन कंचनमय देखल, तें वाढ़ल अनुरागे ।
तपल सकलतन घामहि से छन, केहन शीतल लागे ॥
माधव हरल वसन मुख परसँ, हम धनि मुइलहुँ लाजे ।
पुरुष विनय नहि मानथि किछुओ, आन्हर अपनहि काजे ॥
हार टुटल जँ समटि मोति सब, चुपचुप कैलक ओरे ।
चुप भै हम धै जँ लै लेलहुँ, हरलक चोरक चोरे ॥
खेल पसारल हठ कै दुहु जन, से नागर की माने ।
झट दै बूझिय की तोहर मनः पहिनहि कै अनुमाने ॥
कै लहुँ सहसकला हम नागरि, केवल भेल देवारे ।

भावार्थः—हे सखि ! आव विरह कें की हो, आव विरहो स्नागव एहि कारण अकच्छ भै गेलहुँ । भरि दिन सूर्य आकाश में रहैछ तें वश एहि डर जँ वाहर होयव तँ मुख रूपी कमल फुला जाएत, हम वाहर नहिं होइ छी, गाछी फुलवारी नहिं जाइ छी कैथक तें शङ्का होइछ कतहु भ्रमर सब हमरा फूल मानि डँसि ने लेथि; सरोवर स्नान हेतु नहिं जाइ छी एहि डर कहीं हमर मुखचन्द्र अपन तात जलक कोरा में भीतर नहिं चल जाथि: ताही सब डरें देह कें नुकौने रहै छी इ कहैत राधा कानै लगलीह एवं प्रन कहै लगलीह, संध्याकाल क चन्द्रमा क परमभय होइछ कैथक तें ओ आगिक दुष्ट वासन थिकाह कतहु दुख ने देथि, आठो प्रहर हे सखी श्रीकृष्णक हम ध्यान में रहै छी । आव वयसरूपी फूलक दल झरल जाइछ ॥ १५८ ॥

शब्दार्थः—मदनसदन=कामदेवक घर तात्पर्य रति, कंचनमय=सोनामय; अनुराग=प्रीति; ओर=एक कात; सहसकला=बहुत चतुरपना ॥

अपन कएल अपराध सुनहु सखि, झट सन चतुर सँभारे ॥
नहिं नहिं करिय तदपि से हठकै, ठकि ठकि रमन पसारे ।
वहुत रसिक मधुवन के वासी, वहुविध करय दुलारे ॥
मन कहि मान करव हम सुतलहुँ, भै गेल आनक आने ।
पहु कर परसि परसि मति हरलक, कुमरक वीतल भाने ॥

---

१६० ऐंजन ।

आँचर फारि सुखाय वनाओल, कोमल वल्कल पाते ।
काजर मसि नख कमल वनाओल, लीखल अन्तक वाते ॥
कीर पढ़ाओल शैसव सँ हम, से पेखल हम दूते ।
चित्रित कयल पत्रपट अधदिशि, विरहचित्र अजगूते ॥
शिव लिखि धयल मनोजक आँगा, रति मुरछाइलि वीचे ।
ऋतुपति फरक फटल सिर आँकल, शोणित लागल कीचे ॥
सुन्दर मदन धधह धह जरइछ, तीन नयन वर रोषे ।
उमा तते एकसरि छलि वैसलि, पहुक करथि परितोषे ।
माधव पुरवक नेह विसारल, रसिक वधिक धरि आनू ॥
कुमर भनहि सखि वान्हह हरि कें, हतमति हमरा जानू ।

शब्दार्थः—वलकलपात=भोजपत्र; कागज; अन्तकवात=मरणकथा; कीर=सूगा; शैशव=नेना सँ; पेखल=पठाओल; चित्रित=तस्वीर; पत्रपट=कागजक, अधदिशि=नीचा में; शिव=महादेव; मनोजक=कामदेवक; रति=कामदेवक स्त्री; ऋतुपति=वसन्तऋतु; परितोपे=सन्तोप, धैरज; वधिक=हत्यारा हतमति=वताहि ।

नोटः—एक वेरि महादेव क्रोध कै कामदेव कें डाहि देने छलाह ॥

१६१ ऐंजन।

आधराति जँ बीतलि सजनिगे, नागर उठल चेहाय।
कर धै तखन उठाओल सजनिगे, आँचर देल हटाय॥
उठु उठु सुन्दरि एहि खन सजनिगे, हम जायब परदेश।
भमर रमनिरमि तेजलक सजनिगे, कनइत चलल विदेश॥
आजु विछोह क अवसर सजनिगे, दुहुजन होयब फराक।
वरह व्यथा सँ वेधलि सजनिगे, कतगुन बुन्दह आँक॥
किछुदिन विरमि रहत जँ सजनिगे, वारि वयस थिक मोर।
दुहु मुख हेरइत आयल सजनिगे, कठिन कुमर छल भोर॥

---

१६२ ऐंजन।

आँचर धै हमरा हरि हकलन्हि, वैसु कदम जुरि छाँहे।
दुहु जन राग अलापव मिलिकै, एकहि वसने नुकाहे॥
पुहुप चुनल दुहुजन मिलि मिलिकै, हार वनाओल दोई।
पहिरिय दुहुजन अधर नियोजल, ललिता रहु पथ जोई॥
ललिता आवि समारल सेजहिं, हमधनि छलहुँ लजाये।
दछिनक कंचुकि अपनहि फूजल, रतिपति भरम गमाये॥
कर्णफूल-वेसरि सीरटीका, भूपन सव पहिराये।
नूपुर गढ़लकुसुमचय गाथल, कंचन कुसुम वनाये॥

नागर=पति; रमनिरमि=स्त्री प्रसङ्ग कै; विछोहक=वियोगक; कतगुन आँक=पीड़ारूपी आँक पर जतेक बुन्ना दी अर्थात् बढ़ावी॥

जुरि=ठंडा; नियोजल=एकण्ठा केल; जोई=तकैत; रतिपति...गमाये=रमन क्रोडा कैलन्हि; वेसरि=बुलाकी; सिरटीका=माँगटीकी; कुसुमचय=फूलक समूह;

कुमर जुगल जोरी ललिता सह, रचल मनोजक वासा।
कदमक तर अभिमत परिपूरल, पूरल कान्हक आसा॥

---

१६३ ऐंजन।

कमलनयन आँचर, धै पुछलन्हि, दुरि करु हठ व्यवहार।
आबहुँ सुन्दरि किछु तँ वाजिय, दुरि करु लाज विचार॥
नयन फोलि किछु आधहुँ हेरू, भोरहिं होयब फराक।
विरह व्यथा एखनहिं शर मारै, सिरधरि डुबलहुँ पाँक॥
साँझ प्रात वरु सुमिरब हमरा, पिअ नहि देब विसारि।
जखन तखन निज कुशलक लीखब, पाँती आखर चारि॥
कखन मिलन पुन होयत ललिता, फेरि हेरब सुख चान।
कखन कुमर पुन दुहु जन भेटब, मान गमौलक मान॥

---

१६४ ऐंजन।

पिउ गर भेलहुँ पुहुपक माल, पहिरथु पहिरथु यशुमतिलाल॥
कंदुक सनि भेलहुँ रहि पास, केलि करथु पूरथु सविलास॥
भेलहुँ जँ पुन मलयज-वास, आँग लगाबथु रमन विलास॥
अगर होय पीताम्बर लाग, लोहित पीत हरित रँग जाग॥
वंशी वनि अधरक रस लेल, वदला में अधर क रस देल॥
माधव सुतलाह आँग लगाय, मन्मथ रहला आँग दवाय॥
सखि रति कैलन्हि टहल अनेक, सखा वसन्तक विमल विवेक॥
फुलडाली जनु कुञ्जक रूप, सब जनि रमलहुँ सखि चुपचूप॥

मनोजक वासा=काम देवक घर; कान्हक=श्रीकृष्णक॥

कमलनयन=श्री कृष्ण; सिरधरि=माथतक; हेरब=देखब।

चान दीप डाहल भरि राति, विरह परायल पौलक साति ॥
कुमर भनहि से रजनिक हाल, सुजनि सुनायब सुजनक ताल ॥

---

१६५ गेजन ।

सुऋतु वसन्तक आगम सजनिगे, पहुक सन्देशा भेल ।
सुनितहि मन चबड़ायल सजनिगे, हंस हमर उड़ि गेल ॥
*दशदिन जखन गुदस्त भेल सजनिगे, पहुआ आएल पास ।
हम बाला अबला छी सजनिगे, तँ छी अधिक उदास ॥
सुरजक किरन गुदस्त भेल सजनिगे, पहुक ओछावन भेल ।
दशपाँच सखि सब सङ्ग भेल सजनिगे, पहुक निकट लै गेल ॥

भावार्थः—राधा कह लगलथिन्ह, जे हे सखी, ताहि राति हम फुलक माला भेलहुँ तँ ओ प्रसन्न भै पहिरिलेलन्हि; गेन जकाँ लगभै बैसलहुँ तँ ओ खेलाय लगलाह, चानन भेलहुँ तँ श्री कृष्ण शरीर में लगावै लगलाह; अगर भेलहुँ तँ हुनक पीताम्बर में लागि रहलहुँ; जाहि कारणें पीताम्बरक लाल, पीयर, हँरियर ३ रङ्ग भेल; वन्शी भै रसलेवाक हेतु हुनक ठोर लगलहुँ तँ वदला में ओ सवरस वन्शीक लै लेलन्हि; मन्मथ=कामदेव; रति=कामक स्त्री; सखा=मित्र; साति=दण्ड; रजनिक=रातुक; सजनि=राधा; सुजनक=चतुर श्री कृष्णक ॥ १६४ ॥

सन्देशा=आएवाक वार्त्ता; हंस=होश; गुदस्त=व्यतीत; पहुआ=पति;

---

* दश दिन जखन बीति गेल सजनि गे, प्रीतम आएल पास । (संशोधक) ।

आँगुर धै पहु लै गेल सजनिगे, कैलक अन्तक बात।
हम धनि वाला मुइलहु सजनिगे, हिय भेल पिपरक पात॥
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनागरि, ई नहिं थिक किछु अन्त॥
पहिने दुख पाछाँ सुख सजनिगे, नाह तोहर गुनवन्त॥

---

१६६ ऐजन।

रमनक गेह सुपट छल लागल; असनिक वनल केवारे।
फूलक वनल शयन कोमल कत, मनमथ पहरु दुआरे॥
माधव वल कै करय विहारे।
जत छल अभरन पट परिधन तन, टारल साँझ, सकारे॥
कर कोमल युग धै अङ्कम गनि, कर माँगय सरकारे॥
तन मन धन सव पहिनहि अर्पल, वचि रहु एक नकारे॥
अधर अमिय रस चिवुक समर्पल, ओ पुन नयन विकारे॥
भ्रूलतिका, फल, कमलक सौरभ, रमन रभस रस सारे॥
नहिं नहिं करव हाँस लहु लहु पुन, मधुमय वचन उचारे॥
ई सव तँ पहिनहिं नागर कर, वेचल सलजि, विचारे॥

अन्तक वात=रमन; वाला=नवयुवती; हिय पात=हृदय भयसँ पिपरक पात जकाँ काँपे लागल; गुनवन्त=गुणी॥

रमनकगेह=कोवरघर; असनिक=पाथरक; मन्मथ=कामदेव; विहारे=रमन, अभरन=गहना; पट=कपड़ा कर=हाथ; युग=दुहु; कर=मालगुजारी; नकारे=नहि जायव; नहि करव, अधरअमियरस=ठोरक अमृतरस; नयन-विकारे=कटाक्ष; भौंहक लीला; कमलक सौरभ=पयोधर सँ सुख देव; रमन-रभसरससरि=केलि; मधुमय=मधुर; सलजि=लजाइलि,

आव रहल की शेष कहह सखि, उजरल रचल सिंगारे ॥
कुमर रहल आँचर धर अरपल, कर दै कर धै हारे ॥

---

१६७ ऐजन ।

शैशव में हम तरुअर रोपल, कैलहुँ मन वड़ आसे ।
नयन नीर लै अहि निसि सिंचल, बढ़ि तरु लागल अकासे ॥
शाख प्रशाख बनाओल तेकर, नव नव आयल पाते ।
वहुत यतन कै गाछ बचाओल, अन्धर-जल-उत्पाते ॥
विगत वसन्तक चैत मास सखि, कुसुमित से तरु भेले ।
कतिपय रंग मढ़ाइय पुहुपहिं, सुभग बास विह देले ॥
कोकिल कुञ्ज वैसि सुर तानथि, साँझ प्रात करि आसा ।
हम धनि तरुतर वैसि गमाविय, आठ पहर करि वासा ॥
कुमर कीर हरि से दिन आयल, कैलक परम अलापे ।
राहि नेह तरुअर तर वैसलि, कत कत करथि विलापे ॥

शेष=बाँकी; कर दै कर धै हारे=हाथ में आचर दैत प्रन टारि धरैछ ।

शैशव=नेना में; तरुअर=गाछ; नयननीर=नोर; अहिनिसि=रातिदिन; सिंचल=सींचल; शाखप्रशाख=डारि; विगत=वितल; कुसुमित=फुलायल; कतिपय=कतेक; सुभगवास=सुगन्धि; कीर हरि=सूगारूपी श्रीकृष्ण; अलापे=कथन; राहि=राधा; नेह तरुअर=प्रेमरूपी गाछ ॥

१६८ ऐंजन ।

(मालवरागे–एकताले–अष्टपदी)

राधाक कथन सखी सँ:—

* चल चल हे सखि हरिक दुआरे ।
रमन करावह मुरलीधरसौं, नासह मदनविकारे ॥

---

* मूलपद श्रीजयदेवकः—

निभृतनिकुंजगृहंगतया निशि रहसि निलीयवसन्तम् ।
चकितविलोकितसकलदिशा रतिरभसभरेण हसन्तम् ॥
सखि हे केशिमथनमुदारम् ।
रमय मया सह मदनमनोरथभावितया सविकारम् ॥ ध्रु० ॥१॥

प्रथमसमागमलज्जितया पटुचाटुशतैरनुकूलम् ।
मृदु मधुरस्मितभाषितया शिथलीकृतजघनदुकूलम् ॥
किसलयशयननिवेशितया, चिरमुरसि मयैव शयानम् ।
कृतपरिरंभकचुम्बनया, परिरम्भ्य कृताधरपानम् ॥
अलसनिमीलितलोचनया पुलकावलिललितकपोलम् ।
श्रमजलसिक्तकलेवरया, वरमदनमदादति लोलम् ॥
कोकिलकलरवकूजितया जितमनसिजतंत्रविचारम् ।
स्थलकुसुमाकुलकुन्तलया नखलिखितघनस्तनभारम् ॥
रतिसुखसमयभरालसया दरमुकुलितनयनसरोजम् ।
निःसहनिपतिततनुलतया, मधुसूदनमुदितमनोजम् ॥
श्रीजयदेवभणितमिदमतिशय मधुरिपुनिधुवनशीलम् ।
सुखमुत्कंठितगोपवधूकथितं वितनोतु सलीलम् ॥८॥

शब्दार्थः—मदन विकारे=कामक वेग;

एकलि पुष्पित कुञ्जहि से, हम आइलि आसलि कुंजे ।
रतिसुख भरलि दिशादश हँसइछ, अकचक हेरु निकुंजे ॥
प्रथम समागम हमहि लजाइलि, कहि कत चातुरि वाते ।
मधुर हँसैत दुराओत लाज, अचल परिधन करि काते ॥
नवदल कोमल सेज सुताओत, कत छन अंकम लाये ।
कै आलिंगन चुम्बन ओ रमि, अधर अमियरस पाये ॥
रतिक समय दृग मम अलसायत, पुलकत हरिक कपोले ।
सिक्त स्वेदतन हमर परसि से, करता काम कलोले ॥
मदन पटल जीतल जे हरि, नख लै उरजहिं कर रेखे ।
कच वान्हल पुहुपावलि वाजत, कलरवकोकिल भेखे ॥
मणिमय नूपुर धुनि सँ गुञ्जत, रमन सुरसभर गेहे ।
वेसरि कटि-कसना फुजिते, धरि कच चुम्बन कर नेहे ॥
रमनसमय रस सँ दृग आलस, थिर भै रहत शयाने ।
मनमथ भरल कमल सन माधव, निपतित लता समाने ॥
माधव कमल मनोजक खेलि, सुजन जयदेव वखाने ।
ग्वालिनि कुमर गाव सुख वर्णन, चकमक पूर्निमचाने ॥

एकलि=एकसरि; पुष्पित=फुलायल; रतिसुख भरलि=केलिक सुख सँ परिपूर्ण; अकचक=आश्चर्य कै; दुराओत=हटाओत; अचल=स्थिर; परिधन=वस्त्र; नवदल=नव पातक; अङ्कम=पाँज; लाये=आनि; अधरअमियरस पाये=ठोरक अमृत पीवि; रतिक=केलिक; दृग=आँखि; कपोले=गाले; सिक्त=भीजल; स्वेद=पसेना; कामकलोले=केलि; मदन पटल=मदनकयुद्ध; नख=नह; उरजहिं=स्तनपर; कच=केश; पुहुपावलि=फूलक गाँथ; कलरव=धुनि; सुरसभर=सुन्दर; गेहे=घर में; शयानि=सूतलि ॥

१६९ ऐजन ।

चलुचलु हे सखि आजुक राति, सब जनि माधवकें देव साति ॥
चिकुर दाम थिर बान्हव देह, थिर नहिं पाविय माधव नेह ॥
आँचर लै बान्हव भुजपाश, चल सखि शशि ऊगल अकाश ॥
सब जनि धरब करब दुरि हाल, तखन फसायब कञ्चनजाल ॥
कदमक तरू लै बान्हव तानि, तखनहि निरदय रहता कानि ॥
सब जनि तखन करब हुनि होल, बहुत बजौलन्हि माधव गाल ॥
ओ एकसर की करता रारि, लटकल रहता रेशम सारि ॥
सबजनि मिलिमिलि पारब गारि, आँचर सबकेओ अपन सँभारि ॥
कुमर बुझायब विदतिक हाल, करह कदमतर सुन्दर ताल ॥

---

१७० ऐजन ।

आब जिवन कोन काजे-हे सखि, सबहिं गमाओल लाजे ॥
पति भेल डुमरिक भूले-हे सखि, कान्ह वधिक समतूले ॥
कहि गेल फागुन मासे-हे सखि, रचब करब हम रासे ॥
बीतल से अनजाने-हे सखि, निकसथु हमर पराने ॥
पहिलुक प्रीति बिसारे-हे सखि, कुबुजिक आँग सिंगारे ॥
के जायत लै पाती-हे सखि, विहरय कोमल छाती ॥
कुमर कराय उधारे-हे सखि, निरदिश बुझि परतारे ॥
पुरुपक की परमाने-हे सखि, बरष वितल अनजाने ॥

शब्दार्थ=साति=दंड; चिकुर=केश; दाम=रस्सी; भुजपाश=बाँहिक भरे; दुरि=दुर्दुट; कञ्चनजाल=मोह; बजौलन्हि गाल=ठकलन्हि ॥

१७१ ऐजन ।

हे सखि हम रचलहुँ आराम, माधव कयल उजारि उदाम ॥
प्रीतिक लता गेल छल पाटि, माधव देलन्हि जडि सँ काटि ॥
प्रीतिपुहुप जत डारि फुलाय, माधव चुनिचुनि तोड़ि खसाय ॥
हम गढ़लहुँ सखि प्रेम तड़ाग, माधव भरलक हमर अभाग ॥
हम रचलहुँ सखि प्रेमक गेह, हुनक स्थापल मूरति नेह ॥
हे सखि कर धै देल उजारि, माधव कैलक हमर उघारि ॥
हम निजकर सँ गाथल हार, माधव तोड़लन्हि हारक तार ॥
शयन बनाओल कुसुमक साज, सेज उजारति हुनि नहिं लाज ॥
हे सखि माधव हृदय पखान, कारी पुरुषक नहिं परमान ॥
अवला हम मुइलहुँ उपहास, आब देव की, कैल ने रास ॥

---

१७२ ऐजन ।

के कह अभरन शीतल लाग, विरहिनि कँ अँग अँग सब दाग ॥
के कह शीतल बसन दुकूल, आगिक चादरि से समतूल ॥
के कह कुसुम हरै अनुताप, तन परसय तन थर थर काप ॥
के कह चानन शीतल थीक, डाहय तन विरहिनि विरहीक ॥
के कह काजर भल थिक आँखि, आगि चेन्ह नयना गेल माखि ॥

शब्दार्थः-आराम=फुलवारी; उदाम=शून्य; तड़ाग=पोखरि; गेह=घर; उघारि=देखार; पखान=पाथर; परमान=विश्वास; रास=केलि ॥

शब्दार्थः-अभरन=गहना; शीतल=ठंढा; दुकूल=पहीर; समतूल=बराबरि; केकह.......आँखि=ईके कहै छ जे काजर नीक थिक; ओतँ विरहरूपी आगि के मखलें कारी चेन्ह थिक ।

के कह चिकुर परम छवि देय, नागिनि भै से दंशन लेय ॥
के कह आरत अपनय ताप, विरहिनि काँ थिक बड़ सन्ताप ॥
के कह निशि थिक चैनक वेरि, से हमरा कैलक बड़ भेरि ॥
के कह शशि थिक अम्मृतकाय, डाहय दुहुदल हिय धधकाय ॥
के कह पिउ चरचा भल लाग, के कह रमन रभस भल लाग ॥
कुमर भनहि मन झामर भेल, नागर हमर चैन हरि लेल ॥

---

१७३ ऐजन ।

हे सखि चलह कुञ्ज दरवार ।
मदन वान्हि के दिढ़ मनिमालहिं लैचल जहँ सरकार ॥
मदन सदन महँ चुपचुप पैसल दीपक कएल अन्हार ।
नखसँ शिख धरि मारल शरचय, भरिघर पुहुप पथार ॥
कलवल कर धै पाओल हे सखि, वान्हल आँचर गेंठ ।
चल चल माधव हाथ समर्पंव, गौरव सब होउ हेठ ॥
दुहु जनि चललि जतै मनमोहन, करथि परम सत्कार ।
माधव गेठ फोय मनसिज कैं, शिवगुरु भै परतार ॥

चिकुर=केश; छवि=सुन्दरता; नागिनि=सापिनि; दंशन=डाँस; आरत=आलक्त; अपनय=दूर करैछ; भेरि=वेहोश, अमृतकाय=अमृतक भंडार; हरिलेल=ले गेल ॥

शब्दार्थः—दिढ=मजवूत; मदन=काम; सदन=घर; शरचय=वानसमूह; समर्पव=समर्पणकै देव; सत्कार=आदर; फोय=खोलि; शिवगुरु=महादेवकगुरु ।

१७४ ऐजन।

रमन रभस कै दुहु जन सुतलहुँ, एकहि आँग बनाय।
पुनिम राति छलि, महमह चउदिशि, निशि निशीथ छल आय॥
सुरति समापि कलेवर थिर कै, सुतलहु दुहु जन साथ।
सुनसुन सखि हे मदनक चातुरि, रचलक अपरुब लाथ॥
शिवक हतल छल अमृत पीउल उठल शयन सँ जागि।
सुन्दर तन सुन्दर शर कुसुमक, मकर चढ़ल नभ भागि॥
नभ महं जाय बनावोल निज छवि, मदसँ देह भिजाय।
चकमक चानमदन शर मारल, शशि कर शयन तकाय॥
जे शर से कर वातायन पथ लहु लहु परसल सेज।
हम धनि कोमल मुरछित भेलहुँ छक दै लागल तेज॥
सेकर परसल हमर सगर तन, मदन परम रस जोर।
कुमर उठल पहु रमन समारल जागि कयल निशि ओर॥

१७५ ऐजन।

(पावस)

पावस परम उछाह सघन घन आयल रे,
प्यारे, नयनक रस गरि खसल सरोज सुखायल रे॥

शब्दार्थः-रमन रभस=केलि; पुनिमराति=पूर्णिमाक राति, निशि=राति; निशीथ=दुपहरिया, लाथ=छल, मकर=गोहि, नभ=आकाश, शशिकर=चन्द्रमाक किरण, वातायनपथ=खिड़कीक बाटैं; सेकर=चन्द्रमाक किरण, निशि ओर=प्रात॥

पावस=वर्षाऋतु, सरोज=कमल, मुँह,

अभरन जत छल, झामर, पति मोर पामर रे,
प्यारे, चिकुर वनल शतनाग करथि तन सामर रे॥
से दिन सुमिरन आवय सेज ने भावय रे,
प्यारे, करतल वदन समेटि साठि पल कालय रे॥
जेठ हेठ नव वादर, युवतिक आदर रे,
प्यारे, दछिन पवन वहु मन्द करथि अति कातर रे॥
मास अषाढ़क वारिस मदरस पाटत रे,
प्यारे, हृदयक दल दुहु फाटत शशि कर काटत रे॥
साओन परम भयाउन कठिन मिलाओन रे,
प्यारे, एकसरि रुदन अटारि कठिन निशि साओन रे॥
भादव आयल मादक, दादुर वाहक रे,
प्यारे, दिशि दिशि रवथि मयूर विरह तन वाढ़त रे॥
कुमर कखन पिउ आओत विरह नसाओत रे,
प्यारे, उजरल सदन समारत प्रीति पसारत रे॥

---

१७६ ऐजन।

पहिरावथि से पुहुपक हारे, मुख सँ आँचर छुन छुन टारे॥
दुहुकर झापल हम वरु नारी, कर टारथि हरि कहि परतारी॥

पामर=निर्दई, चिकुर=केश, सामर=विप सँ कारी, करतल=हाथपर, वदन=मुँह, समेटि=धै, साठिपल=दिनराति, कातर=दुखित, वारिस=वर्षा, शशिकर=चन्द्रमाक किरण, अटारि=कोठा; निशि=राति, मादक=निशाकैनहार; रवथि=शब्द करैछ, उजरलसदन=टूटल घर, उदास चित्त॥

शब्दार्थः—पुहुपकहारे=फूलक माला, कर=हाथ;

नयनक पलक लगाओल नीके, पलक उघारथि चैन ने जीके ॥
भूपन साजथि से वरजोरी, श्याम किरन सहि श्यामलि गोरी ॥
चलकै पुहुपक शयन सुताये, हम धनि मुइलहुं सहमि लजाये ॥
उरसर फूल भमर कर पाने, जत छल मान कयल हम दाने ॥
कुमर कठिन निशि वीतल आजे, परम निठुर थिक पुरुष समाजे ॥
कथिलै कहव हम किछु भल मन्दा, मनसिज हतव हतव हम चन्दा ॥

---

१७७ ऐजन ।

एकसरि छलहुँ सुतलि हम सजनिगे, मन्दिर मुनल कपाट ॥
विरह व्यथा सँ वेधलि सजनिगे, आठ पहर जिव आँट ॥
युवक वयस कत सुन्दर सजनिगे, अभरन अनुपम साज ॥
धनुष वान कर पुहुपक सजनिगे, सपनहि देखल आज ॥
कुंडल वलय हार पुन सजनिगे, कुसुमहि देह सजाय ॥
पांच वान पुहुपक तनि सजनिगे, लहुक लहुक लग आय ॥
नख शिख ताप मदन वहु सजनिगे, धधकल विरहक आगि ॥
कुमर कठिन छल सपनक सजनिगे, कामिनि बैसलि जागि ॥

---

१७८ ऐजन ।

पुरुष हिया थिक कमलक पात, परय प्रीति जल होअय कात ॥

श्यामकिरन=श्रीकृष्णक श्यामवर्णक किरणक स्पर्श, श्यामलि=पिण्ड श्याम स्वरूपा, उरसर=हृदयरूपी सरोवरछाती, भलमन्दा=नीक अधलाह ॥

शब्दार्थः-कपाट=केवाड़, वलय=माठा, कामिनि=सपनेनिहारि स्त्री ।

शब्दार्थः-प्रीतिजल=प्रेमरूपी जल,

वहुत यतन सँ आँकल रोय, प्रेम लिखल तहि आखर दोय ॥
नयनक काजर काढ़ल नाह, प्रेम विकायल प्रेम वेसाह ॥
पहिने कयल प्रीति उपचार, हम धनि अवला भेलहुँ देखार ॥
के वुझ के वुझ विरहक वाट, कुमर विरह जिउ कैलक आँट ॥

---

१७९ ऐजन ।

(पतिक आगमन वार्त्तासुनि)

कतेक दिवस पर सुनल सुनल रे, सुनितहि तिख शर कुसुम गड़लरे॥
मदन हरल सुधि किछुक अछल रे, टक वक पुतरि किलिखलअचलरे॥
कर छल चमर टुटल उछरल रे, नख शिख फरकि फरक उछरल रे॥
उठव की चलव, सुतव नहिंवुझ रे, पुरव की पछिम कतहु नहिं सुझरे॥
जिवनक धन दृग देखव कखन रे, विरहक दुख दुरि होयत कखनरे॥
कुमर भनहि धनि गहल लगनरे, दुहु जन रहवह मगन मगन रे ॥

---

१८० ऐजन ।

कन्त कयल हम कत अपराधे ।
कत दिन संग गमाओल दुहुजन हेरल नहि दृग आधे ॥
वसन हटाय कहल मुख देखव लेलहुं वदन नुकाए ।
कर परसल तँ कर हम टारल दुहु कर लेल झपाये ॥
कर धै समुख करै अँह चललहुं ससरलि सुतलहुँ काते ।

प्रेम वेसाह=प्रेमकें वेंच प्रेम खरीदल ॥

शब्दार्थः—कुसुमशर=फूलक वान, कामदेवक वान, मदन=कामदेव, अचल=निश्चल, स्थिर, चमर=विअनि, जिवनकधन=स्वामी; मगन=प्रसन्न ॥

झूठ सदृत कैलहुं हम गौरव केहन कैलहुँ लाथे ॥
कतेक प्रबोधल कहलहुँ बाजे रहलहुँ अधर मिलाये ।
कहल सन्देश दिय कामिनि किछु हम फर धयल फसाये ॥
से दिन सुमरि काप मन थरथर नैनहि जल बरसाये ।
कुमर केहनि कामिनि मानिनि से अपनाह अपन सताये ॥

---

१८१ ऐजन ।

ससरि चललि सब सखि गन ना, गड़ल कुसुमशर भरितन ना ॥
उठइत उठल चलल लहु ना, विहुसि लगाओल पट पहु ना ॥
धक दै उठल कदलि हिय ना, परसय कर पहु लहु लहु ना ॥
देलक वैसाय निकट निज ना, उगलाह मुंहजरु मनसिज ना ॥
आधनयन हम देखल ना, नेह पाश लै वेढ़ल ना ॥
दुहुक हृदय दुहु काढ़ल ना, नेह लता पुन बाढ़ल ना ॥
अंकम गहि पहु पूछल ना, छन हुलसय छन रूसल ना ॥
आँचर भाँगि धयल कर ना, धल कै सब मति हरलक ना ॥
आध आँग वनि सुतलहुं ना, केहन विरह विसरलहुं ना ॥
कुमर कमल पर अलि वस ना, पीबि भ्रमर सूतल रस ना ॥

---

१८२ रास ।

वंशी वजाये ओहि ठाम श्याम जहाँ रासरचे ॥
मधुर मृदंग धुम किट किट बाजे, वंशी करय अनोर ।
नाचथि सखिसँग करथि कुतूहल, चहुदिशि कुहुकय मोर ॥
केओ सखि पुहुपमाल पहिरावथि, चानन आँग लगाय ।

शब्दार्थः—अनोर=शब्द, कुतूहल=केलि,

केओ सखि कर धय चमर डोलावथि, नैना रहय जुड़ाय ॥
जगमगाय कति दामिनि यामिनि, सखि गन कंठक हार ।
साओन घटा श्यामतन सुन्दर, कुंजहिं करथि विहार ॥
इन्द्रसहित इन्द्रासन डोलल, पातालहुँ नहिं चैन ।
शिवसनकादिक ध्यान छुटल जँ, पलकोने लागै नैन ॥
साहेबराम रास वृन्दावन, तोहे छाड़ि भावे ने आन ।
जहाँ वसथि त्रिभुवनपति ठाकुर, लागल तहि ठाँ ध्यान ॥

---

१८३ ऐ० ।

मुरली में किछु किये हो श्याम मोरा प्रान हरे हो ।
वृन्दावन के कुंजगली में, श्याम चरावथि गाय ।
मुरली टेरि फिरथि यमुना तट, मोहिगृह रहलो ने जाय ॥
विरह उठल मुरली धुनि सुनि सुनि, चितमोर चंचल डोल ।
कंठ सुखाय दरद होए हिय में, मुखहुँ ने आवय बोल ॥
काहि कहव किछु भावे ने सखि हे, टोना कयल गोपाल ।
घर दारुण ननदो गरिआवथि, प्रीति लागल नन्दलाल ॥
साहेबराम रास वृन्दावन, तोहे छाड़ि भावेने आन ।
जहाँ वसथि त्रिभुवनपति ठाकुर, लागल तहि ठाँ ध्यान ॥

जगमगाय……हार=सखिक माला नील साड़ीमें तेना जानि पड़ैछ जेना राति में मेघ चमकैत होय, घटा=मेघ, भावे=नीक लागे, त्रिभुवनपति ठाकुर=श्रीकृष्णजी ॥

शब्दार्थः-काहि=केकरा, दारुण=दुष्ट ॥

१८४ ऐ० ।

आजु पड़ल मोरा कोन अपराधे, किये ने हेरह हरि लोचन आधे ॥
आन दिन गरधय आनिये गेहे, बहुविधि वचन बढ़ाविअ नेहे ॥
हे सखि रूसि रहल पहु सोय, पुरुषक हृदय पहन नहिं होय ॥
भनहि विध्यापति नीतिक भान, सुपुरुष माधव गुणक निधान ॥

१८५ ति: ।

प्रथम एकादश दै पहु गेल, सेहोरे वितल कते दिन भेल ॥
ऋतु अवतार वयस मोर भेल, तैयो नहिं पहु मोरा दरशन देल॥
चान किरन तन सहलो ने जाय, चानन शीतल मोरा ने सोहाय ॥
आवने धरम सखि बाचत मोर, दिनदिन मदन दुगुन शर जोर॥
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि, धैरज धै रहु मिलत मुरारि ॥

१८६ ऐ० ।

नागर अटकि रहल दुर देश, केओ ने कहए सखि कुशल सन्देश॥
मइल वसन भसम लेपि लेल, तन दूषरि अभरन तेजि देल ॥
छनछन आँखि रहिय मनमारि, कोन दोषें तेजि गेल मदन मुरारि॥
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि, धैरज धै रहु मिलत मुरारि ॥

शब्दार्थः-हेरह=देखह, लोचनआध=कनडेरियो, गरधय=गर लगाय, नेहे=प्रेम. नीतिक=उपदेशक ॥

शब्दार्थ-प्रथम एकादश='क' 'ट'=कट, अवधि; ऋतुअवतार=६+१०=१६ सोलह वर्ष, मदन=कामदेव ॥

१८७ ऐ० ।

मोहि तेजि पियागेल विषम विदेश, कोन परिखेपव वारिवयेस ॥
दरकि खसल सखि धनिक शरीर, नैन सरोवर काजर नीर ॥
सैंजभेलपरिमलफुलभेलवास, कोनदेशपियासखिपड़लउदास ॥
भनहि विद्यापति सुनु व्रजनारि, धैरज धै रहु मिलत मुरारि ॥

१८८ ऐ० ।

दुइ गुन भमर चरन तजि गेल, चारि मिलाय वयस मोर भेल॥
आखर तीन नाम एक फूल, तासँ वनद भेल समतूल ॥
सिपमसुतासुत उपगत भेल, तैयो ने पहु मोरा दरशन देल ॥
आज अमद्द पड़ल अछिहाथ, से देखि हम सखि भेलहुसनाथ॥
कह करनाट योगिनि कर भेष, पहुक अछैत पहन कहुँ देख ॥

१८९ ऐ० ।

माधव हमरो रहल दुरदेश, केओ ने कहे सखि कुशल सन्देश ॥
जिवथु जिवथु वसथु लाखकोश,हमर अभाग हुनक कोन दोष ॥
विसरल माधव पुरविल प्रीत, हमर करम छल विह विपरीत ॥
हृदयक वेदन मान समान, आनक कष्ट आन नहिं जान ॥
भनहि विद्यापति कवि जयराम, की करत नाह दैव भेल वाम

शब्दार्थः-विषम=अत्यन्त दूर, वारिवयस=युवावस्था, परिमल=फूल, फूल भेल वास=फूल सैह सुगन्धि ॥

१९० तिः ।

कते रटल मोर माधव ना, तनिबिनु कते जिउ साधव ना ॥
हरि हरि करे व्रज नागरि ना, चिकुर फुजल लट आरल ना ॥
शिर सँ खसल कारि नागिनि ना, चिहुकि उठल नवकामिनि ना ।
फुलल कमल उर लागल ना, यौवनकाल चेसाहल ना ॥
भनहि विद्यापति गाओल ना, देवसिंह रस बूझल ना ॥

---

१९१ ऐ० ।

माधव मास तीथि छल माधव, अवधि करिअ पहु गेल ।
कुचयुगशंभु परसि हँसि कहलन्हि, तँ प्रतीत जिउ भेल ॥
अवधिओर भेल समय नियरायल, जिउ मँह रहि गेल आसे ।
तखनुक विरह युवति मरि जायत, की करत माधव मासे ॥
छन छनके हम दिवस गमाओल, दिवस दिवस के मासे ।
मास मासकै वरष गमाओल, आव जिवन नहिं आसे ॥
भनहि विद्यापति सुनु व्रजनागरि, हरिक चरण करु सेवे ।
परल अनाइत तँ छल अनंते, पहुक दोष की देवे ॥

---

१९२ ऐ० ।

माधव तेजि गेल विषम विदेश, नयन वरसि गेल मघ अशरेश ।
कतेक दिवस पर पाहुन भेल, रतन सिंहासन वैसक देल ॥
पचो ने भेटल अपन फल काँच, पहुलेखे मधुरस मोर मन काँच॥
सेसुनिकानचललरिसिआय,हसिहसि हम धनिराखललोभाय ॥

शब्दार्थः-माधवमास=वैशाख, माधव=कृष्णपक्ष, अवधि=कट, कुचयुग शंभु=स्तन दुहू महादेव मानि तनिका छूवि, शपथ जकाँ, अनाइत=दुर्ग्रह ॥

काँचसाँच फल तोंहे धरु खाह,हम दुख सहय विमुख जनु जाह॥
आगन मोरा लेखेचाननक गाछ, तेहिपर भमर मोर परलउपास॥
भनहि विद्यापति कवि जयराम, की करत नाह दैव भेल वाम ॥

---

१९३ ऐजन ।

माधव माधव करु समधाने, तुअ विनु भवन करव ऋतुपाने ॥
प्रथम पचीस अठाइस भेल, तासँ वदन हेम हरि लेल ॥
पचिस अठारह विस तनुजार, क्षितिसुत तेसर सेहो जिउ मार ॥
विसरल माधव से दिन नेह, जाहिदिन मिन गेल सिंहक गेह ॥
भनहि विद्यापति आखर लेख, बुधजन होथि से कहथि विशेख ॥

---

१९४ ऐजन ।

माधव-सबविधि थिक मोर दोषे ।
वयस अलप अछि, तन अति कोमल तँ नहिं दरस परोसे ॥
तुअ अभिशेष रोस हम चललहुँ जाय सहव दुख देहे ।
सखि सब हेरि घेरिकै राखल, एखनहिं एहन सिनेहे ॥
काँचकली जँ हरि तोड़व तँ, पुन से होयत उदासे ।
होयत कली से रंग सुरंगित, दिनदिन होयत प्रकासे ॥
निकसि सुवास आस तोहि पूरत, पिविहह रहि रस पासे ।
किछुदिन और धीर धरु मधुकर, जखन होयत सुविकासे ॥
विद्यापति भन अरज कर कामिनि, ने करु एहन गेआने ।
दिनदिन तोहि सुवास बढ़त हरि, पुरत सकल मन कामे ॥

---

१९५ ऐजन ।

माधव माधव मोहि कहि गेल, माधव चितल माधव पुन भेल ॥
माधव तूल माधव नहि ठाम, माधव बिसरल माधव नाम ॥
माधव सुधि माधव नहि लेल, माधव तैं जिउ परबस भेल ॥
माधव बिनु जीवन नहि थीर, कह शंकर माधव हरु पीर ॥

---

१९६ ऐजन ।

माधव तुअ गुन बूझल आजे ।
पचगुन दसगुन ओ दससैगुन, सेह देलह कोन काजे ।
चालिस कोटि चारि चौठाई, सेन हँसे पहु कोरा ।
कपटी कान्ह केलि नहिं जानल, कैलन्हि जन्मक ओरा ॥
साठि कोटि दह बुन्द बिवरजित, से कै सहे उपहासे ।
पहुक निपेद सहेके पायेअ, दुइ गुन गरब गरासे ॥
नव बुन्दा दै नवो वाम कर, से उर हमर पराने ।
से हरषित हरि हेरिओने होअय, कारन के नहिं जाने ॥
भनहि विद्यापति सुनु चरयौवति, क्यों नहिं करइछ वाधा ।
अपन बचन कैँ आप बुझाओल, कमलनाल दुइ आधा ॥

---

१९७ ऐजन ।

तीनि आठ छल गमन हमार, जखन वरहिं छल नन्दकुमार ।
एकादश आदि छला मोर पास, किये यदुपति मोहि केल निरास॥
सोलह अठाइस वाइसतन मोर, मधुसूदन बिनु नैन ढरे नोर ।
कहशंकर तन मन सँ वजाये, चानन राखत कोन छपाय ॥

---

१९८ ऐंजन ।

भरल भवन तेजि गेलाह मुरारि, जत दिनगेलाह तकर गुन चारि॥
प्रथम एगारह फेरि दि पाँच, तीसक तेगुन थोड़ दिन साँच ।
चालिस काटि आध हरि लेल, तैँ पुन जीव एहन सन भेल ॥
सय मह चौगुन लियने विचारि, तैँ तोहि भल नहिं कहल मुरारि।
भनहि विद्यापति आखर लेख, बुधजन होथि से कहथि विशेष ॥

---

१९९ तिरहुति ।

माधव मन जनु राखिय रोपे ।
अवसर तेजि कते चल गेलहुँ, ताहि हमर कोन दोपे ॥
तिनसै साठि आध भिनहादे, से कै गेलहु ठेकाने ।
तादोगुन तकरो पुन तेगुन, अयलहुँ तेकरो निदाने ॥
विरह उदाप ताप तन झाझर, करै चाह जिउ अन्ते ।
आव करव की लै तुअ आदर, प्रेम पदारथ कन्ते ॥
कुचयुग कमल उत्तंगभार भर, से कुम्हिलायल फूटी ।
गरगर चुअय अमिय बिन्दु आँचर, आव रहल भै सीठी ॥
ई सुनि वचन सुनिय मथुरापति, बिहुसि हँसल मुख फेरी ।
धन यौवन थिर रह नहि कौखन, ककरा नहिं एक वेरी ॥
अजय वेन कमलमुनु कामिनि, वूभल तुअ सद्भावे ।
सुखल सारिजँ नीर पटाविअ, काज समय पर आवे ॥
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजयौवति, ई थिक नवरस रीती ।
अपन पुरुषकेँ प्रेम जनावह, विसरि जाह सब रीती ॥

---

२०० तिरहुति ।

मधुपुर गेल मन मोहन रे, कत विहरय छाती ।
गोपी सकल विसारल रे, छल जत अहिवाती ॥
सूतलि छलहुं भवन बिच रे, निन्दू में सपनाई ।
करसँ खसल परसमनि रे, के लेल अपनाई ॥
बिछुड़ि मिलल दुहु जोड़ी रे, भेल परम अनन्दा ।
गोकुलवासि चकोरक रे, चोरी गेल चन्दा ॥
काहि कहब के बूझत रे, हम मरिय गलानी ।
आनक धनलै धनवन्ति रे, कुबजा महरानी ॥
भनहि विद्यापति धिर धरु रे, तुअ पुरत सोहागे ।
माधव मधुपुर आओत रे, तोहि पूरत भागे ॥

---

२०१ तिरहुति ।

सखीक कथन श्री कृष्णा सँ, श्री राधाक विरह वर्णन ॥
*सखिक कहू की माधव हाले ।
तुअ विरहे से भेलि बेहाले ॥ ध्रु० ॥

(देशकि रागे एक ताली ताले अष्टपदी)

*मूल पद श्रीजयदेवकः—स्तनविनिहितमपि हारमुदारम् ।
सा मनुते कृशतनुरतिभारम् ॥
राधिका विरहे तव केशव, माधव, विष्णो ॥ ध्रु० ॥ १ ॥
सरसमसृणमपि मलयजपंकम् ।
पश्यति विषमिव वपुषि सशंकम् ॥

उरसर कमल उपर रम हारे, कतदूवरि नहिं सहइछ भारे ॥
भरितन लेपल चन्दन पंके, सजनि जरे जनु विष थिक शंके ॥
मदन ज्वाल से झामरि भाने, जारय तन निज सांस बहाने ॥
झर झर नयन नीर वहु काते, हटल डाँट सँ द्रुग जलजाते ॥
देखय धनि जनु कोमल सेजे, धह धह जरय आगि कत तेजे ॥
साँझक शशिसन देखल आजे, सखि कपोल करसँ नहिं त्याजे ॥
विरहक दुख मरनक अनुमाने, तैं वश मुख सँ हरि हरि भाने ॥
हरिक सुयश जयदेव वखाने, कुशल करथु पुन कुमरक भाने ॥
एहि विधि सखि तहँ कहल बुझाये, माधव सहमि रहल अरुझाये ॥

श्वसितपवनमनुपमपरिणाहम् ।
मदनदहनमिव वहति सदाहम् ॥

दिशि दिशि किरति सजलकणजालम् ।
नयननलिनमिव विगलितनालम् ॥

नयनविषयमपि किसलयतल्पम् ।
कलयति विहितहुताशविकल्पम् ॥

त्यजति न पाणितलेन कपोलम् ।
बालशशिनमिव शायमलोलम् ॥

हरिरिति हरिरिति जपति सकामम् ।
विरहविहितमरणेव निकामम् ॥

श्रीजयदेवभणितमिति गीतम् ।
सुखयतु हरिप्रसादमुपनीतम् ॥

२०२ तिरहुति ।

(राधाक कथन सखीसं पश्चात्तापसूचक ।)

* हे सखि करु जे हरि संग केलि,
जाहि हरिक दृग चंचल भेल,
विरह आगि की जानै गेलि ॥
फुलल कमलमुख लालिम देल,
ताहि कमलमुख चुम्बन लेल,
काम हनल सर फुटलोने गेलि ॥
हरिक अमृतभर करइत खेल,
सजनि कथा हरषित सुनि लेल,
दछिन पवनसँ जरलोने गेलि ॥

(देशीकरागे रूपकताले अष्टपदी)

* मूल पद श्री जयदेवकः—
अनिलतरलकुवलयनयनेन । तपति न सा किसलयशयनेन ॥
सखि या रमिता वनमालिना ॥ ध्रु० ॥ १ ॥
विकसितसरसिजललितमुखेन । स्फुटति न सा मनसिजविशिखेन
अमृतमधुरमृदुतरवचनेन । ज्वलति न सा मलयजपवनेन ॥
स्थलरुजलहरुचिकरचरणेन । लुठति न सा हिमकरकिरणेन ॥
सजलजलदसमुदयरुचिरेण । दलति न सा हृदि विरहभरेण ॥
कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन । श्वसिति न सा परिजनहसनेन ॥
सकलभुवनजनवरतरुणेन । वहति न सा रुजमतिकरुणेन ॥
श्रीजयदेवभणितवचनेन । प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन ॥

हरिक चरन दुहु थलरुह भेल,
एहन पति परिरंभन देल,
शशिकर दुख की जानै गेलि ॥
जलभर-घनचय-सन-संग केलि,
जे कैलन्हि धनि धन्य नवेलि,
विरहानल की जानै गेलि ॥
हेम सदृश पट धर सह केलि,
सखिकृत हास कि जानै गेलि,
सहि उपहास उसारने लेल ॥
त्रिभुवन सुन्दर संग नवेलि,
हर्षित अंकमजे रमि लेल,
दुखित हिया से कहियो ने भेलि ॥
श्री जयदेवक जे कथ भेल,
गावि भक्त हरि वश कै लेल,
कुमर भाव किछु गाविय देल ॥

---

२०३ तिरहुति ।

(अष्टपदी)

श्रीराधाक भर्त्सना श्रीकृष्णक प्रति:—

* सकल राति तोंहे जागल, हे हरि—अलस नयन किय भेले ।

---

* मूलपद:—

रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिमेषम् ।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदितरसाभिनिवेशम् ॥

सैह नयन कहि देथ करह, पर रमनि, प्रेम रति-खेले ॥
हे हरि, माधव, केशव की कहु जाउने, विनतिक काजे।
कमल नयन तनिके ठाँ जाइय, राखल जनिकर लाजे ॥
काजर राँजलि नयनक चुम्बन कै अधरो कय नीलै।
दसन-वसन तुअ हरि उदास श्यामल से श्याम कथीलै ॥
तोहर तनभरि कामक रन मे, तिख नख खत लस भेखे।
मरकत शिल पर हेम अंक थिक, पौलह रति जय लेखे ॥
देखिय तुअ हिय चरनकमल लगि आरत, चेन्हक लेखे।

हरि हरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम् ।
तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विपादम् ॥ध्रु०॥१॥
कज्जलमलिनविलोचनचुम्बनविरचितनीलमरूपम् ।
दशनवसनमरुणं तव कृष्ण तनोति तनोरनुरूपम् ॥
वपुरनु हरति तव स्मरसङ्गरखरनखरक्षतरेखम् ।
मरकतशकलकलितकलधौतलिपेरिव रतिजयलेखम् ॥
चरणकमलगलदलक्तसिक्तमिदं तव हृदयमुदारम् ।
दर्शयतीव वहिर्मदनद्रुमनवकिसलयपरिवारम् ॥
दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम् ।
कथयति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदम् ॥
वहिरिव मलिनतरं तव कृष्णमनोऽपि भविष्यति नूनम् ।
कथमथ वंचयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनम् ॥
भ्रमति भवानवलाकवलाय वनेषु किमत्र विचित्रम् ।
प्रथयति पूतनिकैव वधूवध-निर्दयवालचरित्रम् ॥
श्रीजयदेवभणितरतिवंचितखंडितयुवतिविलापम् ।
शृणुत सुधामधुरं विबुधा विबुधालयतोऽपि दुरापम् ॥

बूझि पड़ै जनु बाहर मदन, विटप नव पातक भेखे॥
से रमनी तुअ अधर पियल, बुझि बुझि मोहि होइछ तापे।
सेह अधर कहि देछ हमर तुअ वीचक भेदहुँ आपे॥
तैं वश निश्चय जानल हे हरि, जस तन तस हिय भामे।
विषम कामशर-घात कराउलि सँ, कत कैतव नामे॥
जग कानन विच तियहत्या हित रह न करह नहिं चित्रे।
वालहिं छलह मारि पुतनाकँ, प्रकटित कयल चरित्रे॥
रात सँ वंचि, खंडिता युवतिक, सुनु जयदेवक भाने।
स्वर्गहु प्राप्य ने कुसर सुनू, अमृतमय अनुपम गाने॥

---

२०४ ऐजन।

(गुर्जररागे रुपकताले अष्टपदी)

सखीक प्रोत्साहन श्रीराधासं अभिसार निमित्त—

* ऋतुपतिसमय अनिल वहु धीरे

---

* मूलपदः—

हरिरभिहसति वहति मधुपवने, किमपरमधिकसुखं सखि भवने॥
माधवे, माकुरु मानिनि मानमये॥

ताल फलादपि गुरुमति सरसम्।
किं विफली कुरुषे कुचकलशम्॥
कति न कथितमिदमनुपदमचिरम्।
मा परिहर हरिमतिशयरुचिरम्॥
किमिति विषीदसि रोदिपि विकला।
विहसति युवति सभा तव सकला ३

हरि चल जाइछ रतिगृह तीरे ॥
से सुख हे सखि की थिक थोड़े,
सुन्दरि करु करु निज हठ ओरे ॥
युवति, तालफर सन कुच पीने,
कथिलै विफल करह दृग मीने ॥
सेह वचन हम कत दोहराऊ,
सुन्दर पहु छथि उठियोने जाऊ ॥
कथिलै रुदन शोक सखि तोरा,
सखि सब हँसे लाज होय मोरा ॥
कमलक दलसन शीतल शयने,
पिअकाँ देखि सफल करु नयने ॥
हे सखि कथिलै कैलह तापे,
हमर कहल करु छुटितहु तापे ॥
पहु लग जाय कहब मधु बाते,
हियसँ शोक करह सखि काते ॥

मृदुनलनीदलशीतलशयने ।
हरिमवलोकय सफलय नयने ॥
जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदम् ।
शृणु मम वचनमनीहितभेदम् ॥
हरिरुपयातु बदतु बहु मधुरम् ।
किमिति करोषि हृदयमति विधुरम् ॥
श्रीजयदेवभणितमति ललितम् ।
सुखयतु रसिकजनं हरिचरितम् ॥

कुमर कहल जयदेवक भाने,
हरिकृत खेलि रसिक अनुमाने ॥

२०५ ऐंजन ।

(बसन्तरागे रूपकताले अष्टपदी

अभिसारक समय सखी क कथन नायिका सँ—

* हे सखि पहु तुअ कुंज भवन गत, जाह जाह बुधिआरि ॥ध्रु॥

---

*मूलपद श्री जयदेवकविक :—

विरचितचाटुवचनरचनेन चरणरचितप्रणिपातम् ।
संप्रति मंजुलवंजुलसीमनि केलिशयनमनुयातम् ॥
मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसर राधिके ॥ ध्र० ॥ १ ॥
घनजघनस्तनभारभरे दरमंथरचरणविहारम् ।
मुखरितमणिमंजीरमुपेहि विधेहि मरालविकारम् ॥
शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुरिपुरावम् ।
कुसुमशरासनशासनबंदिनि पिकनिकरे भज भावम् ॥
अनिलतरलकुवलयनिकरेण करेण लतानिकुरम्बम् ।
प्रेरणमिव करभोरु करोति गतिं प्रतिमुञ्च विलम्बम् ॥
स्फुरितमनंगतरंगवशादिव सूचितहरिपरिरम्भम् ।
पृच्छ मनोहरहारविमलजलधारममुं कुचकुम्भम् ॥
अधिगतमखिलसखीभिरिदं तव वपुरपि रतिरणसज्जम् ।
चंडरणितरशना-रवडिंडिममभिसर सरसमलज्जम् ॥
स्मरशरसुभगनखेन सखीमवलम्ब्य करेण सलीलम् ।
चल वलयक्वणितैरवबोधय हरिमपि निजगतिशीलम् ॥

बहुत भाँति तुअ विनय कयल शिर तुअ पदपर धै हारि ।
सम्प्रति से वेतक निकुञ्ज मँह रतिथल जाय निहारि ॥
कठिन पीन कुचवती देखि गजआलि चलहु अनुहारि ।
तुअपद नूपुर मनिमय धुनि सुनि, राजहंस कल हारि ॥
हरिमुख मधुर वजै वंशी से तरुनिक मान उखारि ।
कोकिल पंचमराग अलाप मदन शुभ गान विचारि ॥
करिशिशुशुंडसमान लतागत, वातप्रकंपित वाज ।
हे करभोरु कहै चलु झट करि, किछु ने विलम्ब काज ॥
सुन्दर माल सुवारिक धार पयोधर पर हिल डोल ।
मानु अनंग तरंग वढ़े हरिरसन ध्यान धै तोल ॥
क्रोधित छह सखि तदपि लखी तुअ तनरति रनदिशि साज ।
लाज तेजु चलु चंडि ततै, वरधनि कटि डिम डिम वाज ॥
कामक शरसन नखध हे सखि, हमरा धै चलु आज ।
निजकर कंकन शब्द करू जे हरिक श्रवण धरि वाज ॥
श्रीकृष्णक गुनगान कुमर भन हरिजन ग्रीव ने त्याग ।
श्रीजयदेवक गाओल ई माला जनु युवति छुतान ॥

---

२०६ तिरहुति ।

कमलनयन मनमनोहनरे, कहि गेलाह अनेके ।
कतेक दिवस हम खेपवरे, हुनि वचनक टेके ॥
जँह जँह हरिक सिंहासनरे, आसन तेहि ठामे ।
तहाँ कते ब्रजनागरिरे, लै लै हरि नामे ॥
आङन मोर लेखे वृजवनरे, भेल दिवस अन्हारे ।

श्रीजयदेवभणितमधुरीकृतहारमुदासितवामाम् ।
हरिविनिहितसरसामधि तिष्ठतु कंठतटीमविरामम् ॥

सेज लोटय कारि नागिनिरे, कोना सहु दुखभारे॥
मलिन वसन तन भूषनरे, शिर फूजल केशे।
नागरि पुछथि पथिक सँ रे, कहु हरिक उदेशे॥
के पाती लै जायत रे, जहाँ वसे नन्दलाले।
लोचन हमर विकल भेलरे, छाती देल शाले॥
साहेवराम रमाओलरे, सपना संसारे।
फेरि नहि एहि जग जन्मवरे, मानुप अवतारे॥

---

२०७ ऐजन।

कमल नयन मनमोहनरे, वसु यमुनाक तीरे।
वसिया वजाय मन हरलकरे, चित रहे नहिं थीरे॥
खन मोहन वृन्दावनरे, खन वंशि वजावे।
खन खन रहय अहिर संगरे, वंशीबट धावे॥
जँ हम जनितहुँ एहन सनरे, तेजि जायत गोपाले।
अपन भवन हम तेजितहुँरे, सेवितहुँ नन्दलाले॥
*जनु एते क्यो जल भरुरे, यमुना निकट नन्दलाले।
गहि वहिया भिकभोरथरे, सँग लेने ब्रजवाले॥
जँ यदुपति नहिं आओतरे, दइ यमुनाक तीरे।
हमहु मरव हरि हरि कैरे, छुटि जायत पीरे।
साहेवराम रमाओलरे, सपना संसारे।
हरिक चरन विन व्याकुलरे, हम होयव बेहाले॥

---

*जाह न क्यौ यमुनातट रे, छथि निकट गोपाले।
वाँहि पकड़ि झिकझोड़थि रे, सँग लै ब्रजबाले॥ (संशो०)

२०८ तिरहुति ।

दछिन पवन तोहँ जाइ, जहाँ रे बसै मोर नाह ।
जाइत देखब पथ कान्ह, मदन साजल पचवान ॥
नयन ढरकि भिज चीर, पिया बिनु दगध शरीर ।
परदेश रहल कन्हाइ, रमनि खसलि मुरछाइ ॥
कहबन्हि हमरो विनती, बड़ जन नहि तेजै प्रीती ।
विद्यापति कवि भाने, पुरुषक की परमाने ॥

---

२०९ तिरहुति ।

की कहब आहे सखि तनिक गेआने । सगरो रैनि गमाओल माने ॥
जखन हमर मन प्रमुदित भेल, दारुन अरुन तखन उगि गेल ॥
जागल गुरुजन की करब केलि, तन झपइत मन आकुल भेल ॥
अधिक चतुरपन भेलहुँ सयानि, लोभक लोभ मुरछु भेल हानि ॥
भनहि विद्यापति तखनुक रीति, कुंभी जल बिच जेनहु प्रीति ॥

---

२१० बड़गवनी ।

एक सरि कोन परिखेपब सजनिगे, युग सन यामिनि याम ।
कतकत हृदय निरोधिय सजनिगे, कतहुने हो बिश्राम ॥
जतेक अछल गुन गौरव सजनिगे, तनि बिनु सब दुरि गेल ।
कि कहब अपन कर्मफल सजनिगे, तेओने दरशन देल ॥
काहि कहब दुःखके बुझ सजनिगे, सपनहु बिसरल हास ।
कतेक यतन करि शशि बिनु सजनिगे, कुमुदिनि होयन प्रकास ॥
जइयो अनेक शपथ करि सजनिगे, ककर पुरुष वर माँग ।
भीजो बरष लछ सागर सजनिगे, कुमुदिनि होयत पखान ॥

भानुनाथ कवि मनगुनि सजनिगे, करिअ हृदय अभिराम।
महेश्वरसिंह रस बिन्दक सजनिगे, पुरत सकल मनकाम॥

---

२११ ऐजन।

एकसरि कोने परिहरिहर सजनिगे, तरब विरह नदि पार।
कतहुने देखिय यदुपति सजनिगे, जनि विन जिवन अन्हार॥
ककर जगत हम की केल सजनिगे, के कैलक उपचार।
तन सँ तन अवसन भेल सजनिगे, परल विरह दुख भार॥
तनि हम तिलहु ने अन्तर सजनिगे, दुहुक प्रान छल एक।
परदेश गेल परवश भेल सजनिगे, की कहु तनिक विवेक॥
सुकवि भनथि परमावधि सजनिगे, उचित ने होय वखान।
क्यो प्रनरस वुझि वश होय सजनिगे, क्यो विहसे रस जानि॥

---

२१२ ऐजन।

अवधिमास छल माधव सजनिगे, निज कर गेलाह वुझाय।
से दिन आबि तुलायल सजनिगे, धैरज धैल ने जाय॥
अति आकुलि भेलि पहुविन सजनिगे, सुन्दरि अति सुकुमारि।
उकछि हिया पथ हेरथि सजनिगे, अजहुँ ने आएल मुरारि॥
खन खन मदन दहो दिश सजनिगे, विरह उठय तन जागि।
से दुख काहि वुझायव सजनिगे, वैसव ककर लग जाय॥
हरिगुन सुमरि विकल भेल सजनिगे, के वूझत दुख मोर।
विद्यापति कवि गाओल सजनिगे, आओत नन्दकिशोर॥

---

२१३ ऐजन ।

कतेक यतन भरमाओल सजनिगे, दै दै सपथ हजार ।
सपथहुं छल जँ जनितहुँ सजनिगे, नहिं करितहुं अंकार ॥
आव जगत भरि भामिनि सजनिगे, क्यो जनु करे प्रतीति ।
मुखसँ अधिक वुझावथि सजनिगे, पुरुषक कपटी प्रीति ॥
वाजथि वहुत भाँति सँ सजनिगे, वचन राखथि नहिं थीर ।
तनुक हिया मोर दगधल सजनिगे, जस नलिनी दल नीर ॥
गुन अवगुन सव वुझलहुँ सजनिगे, वुझलहुं पुरुषक रीत ।
भनहि विद्यापति गाओल सजनिगे, पुरुषक कपटी प्रीत ॥

---

२१४ ऐजन ।

जखन सुधाकर विहुसल सजनिगे, हिया दगध करे मोर ।
शरद निशाकर जागल सजनिगे, वढ़ल विरह तन जोर ॥
राजिव केशर भूपन सजनिगे, अयलहुँ पहुक समाज ।
कपट सुतल पहु पाओल सजनिगे, तेजल सकल मनलांज ॥
मधुर वचन हँसि पुछलन्हि सजनिगे, किय पहु रहलहु रूसि ।
तखन पिया हंसि वाजल सजनिगे, दीप वराओल फूकि ॥
सहस्रराम भन मन दै सजनिगे, पुरत सकल मनकाम ।
पहु सँग सुन्दरि मन भरि सजनिगे, शोभित चारू याम ॥

---

२१५ ऐजन ।

सरस वसन्त समय भेल सजनिगे, चकमक चाननि राति ।
चललि केलिगृह सुन्दरि सजनिगे, मदन मनोरथ माति ॥
अधरसुधारस पीउल सजनिगे, कपट सुतल पहु हेरि ।

विहुसि उठल पहु हेरि हेरि सजनिगे, लाजे वदन लेल फेरि ॥
निजकर वसन दूरि कै सजनिगे, अभरन सकल उतारि ।
कुचजुग परशि विहँसि पहु सजनिगे, पिवै अधर अवधारि ॥
निजकर धरि अंकम गहि सजनिगे, शयन सुताओल नाह ।
दामिनि जलद नेह वश सजनिगे, करै देह एक चाह ॥
नख खत भरल पयोधर सजनिगे, निरखि एहन होय भान ।
कनकलता पर गिरि युग सजनिगे, झमकि उगल दश चान ।
हर्षनाथ कविशेखर सजनिगे, रसमय मन दै गाव ।
रसिक हरीश्वर रस बुझ सजनिगे, समुचित अभिमत भाव ॥

---

२१६ ऐजन ।

चानन भरम सेवल हम सजनिगे, पुरत सकल मन काम ।
कन्तक दरस परस नहिं सजनिगे, सोभर भेल परिनाम ॥
एकहि नगर वसु माधव सजनिगे, परभामिनिवश भेल ।
आव हम एहन कलावति सजनिगे, गुन गौरव दुरि गेल ॥
फूल कतेक फुलायल सजनिगे, रस दै फुलल दुचारि ।
से फुल ततहि सुखायल सजनिगे, दोना नीमक ठारि ॥
कोन परि होयत समागम सजनिगे, तकरो नहिं परकार ।
ओतहि विमुख भै सल सजनिगे, की विह लिखल कपार ॥
भनहि विद्यापति गाओल सजनिगे, प्रेम सहित अनुराग ।
पहु विन जीवन झुठ थिक सजनिगे, नारिक परम अभाग ॥

---

२१७ ऐजन ।

तरुन वयस मदमातलि सजनिगे, सरस मदनशर नारि ।

सरस=रसमय, मदनशर=कामक क्रीड़ा;

रचल रसिक संग मन दै सजनिगे, रति विपरीत विचारि ॥
ललित पयोधर ऊपर सजनिगे, तनुलतिका संचार ।
मेरु युगल लै थिर भै सजनिगे, दामिनि करै विहार ॥
फुजल चिकुर कलित मुख सजनिगे, स्वेद बुन्द रस ताहि ।
फुजल मोति निजकर लै सजनिगे, जलधर शशि अवगाहि ॥
नाह वदन चंचल छवि सजनिगे, पिउय अधर अति मन्द ।
पंकजरंजनिकर जनु सजनिगे, बन्धु जीव पिव चन्द ॥
सुरति समापि लाजवश सजनिगे, हँसलि नारि मुख फेरि ।
जनि दुअ कुचभर खेदित सजनिगे, सीच सुधारस हेरि ॥
हर्षनाथ कविशेखर सजनिगे, रसमय मन द गाव ।
रसिक हरीश्वर रस बुझ सजनिगे, समुचित अभिमत भाव ॥

विपरीतरति=पुरुषक स्थान रतिक समय स्त्री लैछ और स्त्री के स्थान पुरुष, उनटा रति, ललित=सुन्दर, पयोधर=स्तन, तनुलतिका=शरीर रूपी लती, संचार=चलैछ, मेरु=पर्वत क चोटी, दामिनि=मेघ, चिकुर=केश, कलित=फुलायल, प्रसन्न, स्वेद=पसेना, जलधर=मेघ, अवगाहि=झाँपि, वदन=मुख, पङ्कज=कमल, रञ्जनिकर=शोभित कैनहार, पङ्कज रञ्जनिकर =सूर्य, सुरति=काम केलि, समापि=समाप्त कै, खेदित=कुम्हिलायल, सुधारस= अमृत, अभिमत=यथार्थ ॥

अर्थः—तरुनी स्त्री उत्तम रसवती भेलि मदमातलि अपन रसिक स्वामी क सँग प्रसन्ना भै विपरीतरति प्रारंभ कैलन्हि। हुनक स्तन क ऊपर हुनक शरीर केहन जानि पड़ै छल मानू लत्ती हिलैत हो; मेघ जनु (स्तनरूपी) दुइ पहाड़ पर अटकि विहार (क्रीड़ा) करैत हो; हुनक केश फुजल छलैन्ह,

२१८ ऐजन ।

तरुनि वयस मोर बीतल सजनिगे, पहु बिसरल मोर नाम ।
कुसुम फुलिय फुल सउलल सजनिगे, भमरो ने लेय विश्राम ॥
शिर सिन्दुर नहिं भावय सजनिगे, मुरुछि खसलि एहि ठाम ।
उठइत परम बेआकुलि सजनिगे, कियेक दैव भेल वाम ॥
कोकिल कुहुकि सुनाओल सजनिगे, नयन ढरकि खस वारि ।
अधरस ओतय गमाओल सजनिगे, दै गेल सौतिनिक सारि ॥
युगल नयन मन व्याकुल सजनिगे, थिर नहिं रहै गेआन ।
विद्यापति कवि गाओल सजनिगे, ई थिक दुखक निदान ॥

---

२१९ ऐजन ।

भाँगहि चाह चिकुरभर सजनिगे, सहजहिं दूबरि * देह ।

मुख प्रसन्न छलन्हि ताहि पर पसेनाक बुन्द पसरल छल से केहन बुझि पड़ैत छल मानू मेघ हुनक मुखरूपी चन्द्रमा कें अपन जल बुन्द पसेनाक मोती लै झापि देने हो; पुन रमनी स्वामीक चुम्बन लै हुनक अधर रसपान करै लगलीह से तेहन जानि पड़ैत छल जेना, मुखरूपी कमल क शत्रु चन्द्रमा मुख कमलक क्षोभें सूर्थ पिबैत होथि । विपरीत रति समाप्त कै रमनी लज्जित भै मुँह फेरि हँसलीह मानू रति–मर्दित मुरझायल दुहु स्तन कें अपन मुखक मुसकान अर्थात् अमृत छीट सँ ओकरा पुनर्जीवित कैल । हर्षनाथ कवि कहै छथि जे एकर रस और एकर यथार्थ भाव रसिक हरीश्वर सिंह जानैत छथि ॥ २१७ ॥

---

* एहि ठाम "दूबरि" शब्द नायिकाक विशेषण थिक । दूबरि देह

प्रथमहि पहुक समागम सजनिगे, बाढ़ल परम सिनेह ॥
दुरभै सुतलि विमुख भै सजनिगे, विरह वसन मुख झाँपि।
अभिनव केलिक नामे सजनिगे, नहि नहिके उठ काँपि ॥
नयन नीर भरि बाजल सजनिगे, भेल शपथ निर्वाह।
पुरुष ने माने नारि दुख सजनिगे, केवल निज सुख चाह ॥
नूपुर काढ़ि नराओल सजनिगे, हरल वसन अवशेष।
भावभरल छल नागर सजनिगे, अति उन्मत भेल देख ॥
भनहि विद्यापति गाओल सजनिगे, क्यो जनु नेह लगाव।
भाव एकर हम की कहु सजनिगे, जे सुन से दुख पाव ॥

---

२२० ऐजन।

आसक लता लगाओल सजनिगे, नयनक नीर पटाय।
से फल आव तरुन भेल सजनिगे, आँचर तर ने समाय ॥
काँच साँच पहु देखि गेल सजनिगे, तसुमन अछि से भान।
दिन दिन फल तरुनत भेल सजनिगे, हुनि मन होय ने गेआन ॥
सभक पिया परदेश सँ सजनिगे, आयल सुमरि सिनेह।
हमर कन्त निरदय भेल सजनिगे, मन नहि होय विवेक ॥
विद्यापति धैरज धरु सजनिगे, मन नहि करिय उदास।

अर्थात् देहक दूवरि। छन्द क अनुरोध सँ विभक्ति क लोप अछि। "देहव दूवरि मान क मोटि, वुद्धि क नम्हरि वयस क छोटि।" इत्यादि प्रयोग लोक करैत अछि। क्यौ महानुभाव "दूवरि" शब्द कैं देहक विशेषण मानि देह शब्द कैं स्त्रीलिङ्ग कहैत छथि से परम असङ्गत थिक। इति (सीताराम झा चौगमा) ॥ २१९ ॥

ऋतुपति आवि मिलत तोहि सजनिगे, पुरत सकल मन आस॥

---

२२१ ऐजन।

चहुदिशि हरिपथ हेरि हेरि सजनिगे, नयेन वहय जलधार।
भवनो ने भाव दिवस निसि सजनिगे, करब कोन परकार॥
एतदिन परमप्रेम छल सजनिगे, दुहुक प्रान छल एक।
पियापरदेश निरदयभेल सजनिगे, की कहु तनिक विवेक॥
कुदिवस रहत कतेक दिन सजनिगे, के ओहि कहत वुझाय।
विह विपरित भेल सहजहिं सजनिगे, के मोहि होएत सहाय॥
भनहि जयानन्द गाओल सजनिगे, मन जनु करिय मलान।
धरज धरह कमलमुखि सजनिगे, भमर करत मधुपान॥

---

२२२ ऐजन।

चन्द्रवदनि नवकामिनि सजनिगे, यामिनि अति अन्हिआरि।
सखि सङ्ग चलिलि केलि गृह सजनिगे, कर पंकज दिप वारि॥
पवन झकोर जोर वहे सजनिगे, तैं धरु आँचर झाँपि।
देखि उरज अति सुन्दर सजनिगे, दीपरासि उठ कांपि॥
थप थप करय झुकर कर सजनिगे, भालधुनै शिर माथ।
कथिलै दैव जन्म देल सगनिगे, चतुरानन विनु हाथ॥

---

२२३ ऐजन।

चललि शयनगृह सुन्दरि सजनिगे, नीलवसन तन साजि।
कनकलता जनु लुवुधल सजनिगे, अभिनव मधुकरराजि॥
कटिक विन्दु ओ सिन्दुर सजनिगे, विन्दुविराजित भाल।
जनु पंकजदल रवि शशि सजनिगे, उदित भेल तेहि काल॥

चरन युगल अनुरंजित सजनिगे, ललित युगल उर शोभ ।
कर युग पानि पसारल सजनिगे, जनि नव पल्लव लोभ ॥
कुचकनकाचल गंजित सजनिगे, तासु अमल अभिलाख ।
दारिम दड़ि मधु पीब्य सजनिगे, जनि अवनत मुख राखे ॥
ललित वदन छुमि के कह सजनिगे, अरु नवीन तनराज ।
जनि वंधक कुसुमक तरु सजनिगे, विकसित कुञ्जसमाज ॥
जगत जननि पदसेवक सजगिगे, हर्षनाथ पद गाव ।
सुरस रमेश्वरसिंह बुझ सजनिगे, समुचित अभिमत भाव ॥

---

२२४ ऐजन ।

की कहु पहु परदेश गेल सजनिगे, की कहु किछुने सोहाय ।
फूजल केश नीर वहु सजनिगे, काजर गेल दहाय ॥
कंकन वसन भार भेल सजनिगे, यौवन भेल अति भार ।
आँगन मोरा लेखे वृजवन सजनिगे, घर भेल दिवस अन्हार ॥
हरि विनु सेज सून भेल सजन्गि, तकिया मोहिने सोहाय ।
जँ प्रियतम नहिं आओत सजनिगे, मरव जहर विष खाय ॥
विद्यापति कवि गाओल सजनिगे, मन जनु करह उदास ।
तकर कतेक अभिलापव सजनिगे, दै गेल मोहि विश्वास ।

---

२२५ ऐजन ।

अँकुर तेजि पर्वत सँ निकलल, सेहो अपयश मोहि भेल-सखीहे,
व्रज में अचरज भेल ॥
वारिवयस वालमु परदेश गेल, सेहो अपयस मोहि भेल-सखीहे।
वड़ दुख मोहि दै गेल ॥

खोलि केबाड़ मन्दिरघर पैसल-सेहो अपयश मोहि भेल-सखीहे,
भरम हमर लै गेल ॥
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरसके-सेहो अपयश मोहि भेल-सखीहे,
भेड़ अपयश मोहि भेल ॥

---

२२६ ऐजन ।

लिखि आनल योगक पाँती-हे उधो ॥
जखना श्याम गेल मधुपुरमे दृग बरिसय दिन राती ॥
निशि नहिं चैन वैन नहिं भावय-कखन देखब भरि आंखी ।
सुन्दर श्याम युगल चरणागत-कुबुजि हरल हुनि मती ॥

---

२२७ ऐजन ।

परबस पड़ल कन्हैया रे दैया ।
आयल जेठ हेठ भेल बरषा-मदन दहन तन सहिया ।
निश दिन छुन छुन हर मन जापत-नयना सुरति लगैया ॥
निन्द रहित भेल पियापर चितगेल-चितलेल मदन गोपाल ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु हरिक चरणाचित लैया ॥

---

२२८ ऐजन ।

मोहन मुरली बजैया रे दैया ।
चैत वैशाखक धूप लगतु हैं-शीतल बिअनि डोलया ।
जेठ अषाढ़क बुन्द परतु हैं-भीजल लाल चुनरिया ॥
साओन भादव केर उमरल नदिया खेवहु न जान कन्हैया ।
आसिन कातिक केर पर्ब लगत है सखि सब गंगा नहैया ॥

अगहन पूस केर जाड़ पड़त हैं आनि देह लाल तुरैया ।
माघ फागुन केर रंग मनतु हैं सुकविदास पद गैया ॥

२२९ ऐजन ।

ऊधो ककर नारि हम बाला ।
हरि मधुपुर गेल-परम कठिनभेल, दै गेल विरहक भाला ॥
बड़ अनुचित भेल सुपुरुष तेजि गेल, तेजि गेल मदन गोपाल ।
निन्द हरित भेल पहुपर चित गेल, चितगेल मदन गोपाला ॥
वारिवयस भेल, पहुपरदेश गेल, ततहि रहल नन्दलाला ।
सुकविदास प्रभु तोहर दरशकय, तुअ बिनु भमर बेहाला ॥

२३० ऐजन ।

सखि हे, विसरल मोहि मुरारी ॥
प्रथम अषाढ़ तेजल मन मोहन, कोना खेपव अन्हियारी ।
रिम झिम रिम झिम साओन वरिसे, सोचथि नारि अटारी ॥
मदन बुन्द घर वरिसे भादव, गोपी गन जिव हारी ।
हरि दरशन के कारण गिरिधन, आसिन आस पुकारी ॥

२३१ ऐजन ।

सखिहे, विसरल कुंज विहारी ॥
आयल अषाढ़ विरह मदमातल, घर नहिं छथि गिरिधारी ।
ककर संग झुलव हिडोर सखि, साओन तेजल मुरारी ॥
भादव यामिनि युगसन वीतल, दिवस पड़ल अन्हियारी ।
आसिन विनति करे कवि दुखरन, गोपिहि भेटल मुरारी ॥

२३२ ऐ० ।

सखिहे वहुरि कान्ह नहिं आयल ॥
तन मन विलखय सब गोपिनिकेर, कुवजा कान्ह लोभायल ।
मधुपुर जाय रहल मन मोहन, गोकुल नगर विहायल ॥
गोकुल विकल पड़ल नर नारी, कुवुजी हरि मन भायल ।
रास विलास सवे हरि विसरल, गिरिधारी नहि आयल ॥

---

२३३ ऐ० ।

मधुकर पहन प्रीति के रीती ॥
मद देहरे परायल सरवस, करथि कपट के प्रीती ॥
जँ पटपद अम्बुजके दल में, वसे निशा अति माने ।
दिनकर उदय अनत उठि भागल, फेरि ने करै मधुपाने ॥
भवन भुजंग विहारे पिउलहु, जँ जननी तिय ताते ।
कुलकरतृति जानि नहि पौलहु, सहजहिं सुनलहुं वाते ॥
कोकिल काकक रंग श्यामके, छुन छुन सुरति जगावे ।
सुकविदास प्रभु मूरति देखल, निसि दिन आनने भावे ॥

---

२३४ चौमासा ।

मधुकर जाय रहल हरि ओतही, फिरिने आयल ब्रजनगरी ।
चढ़ल मास अषाढ़ सखी रे, कारि घटाघन विजुरि झरी ।
मानहु इन्द्र कोपि दल आयल, गोकुल घेरि लेल सगरी ॥
साओन सुसुकि सुसुकि सब सखिगन, कानथि ऊधोकेचरनपरी।
श्याम विना अति झूठ जिवन, धिक, चलहु सवहिं मिलियोगकरी॥
भादव भरमि रहल हरि ओतही, केओने कहे सखि हरि खवरी ।
योगिनि भै चलु पहुक उदेशवा, अङ्ग भसम जँ लेपहु धरी ॥

आसिन अवधि वितय नहिं आयल, कारन कोन भये विगड़ी।
सुकवि आस छाड़ि सब सखिगन, श्यामश्याम कहि रहत पड़ी॥

---

२३५ ऐ०।

प्रथम मास अषाढ़ सुन्दरि श्याम गेल मोहिं तेजियो।
कोन विधि हम मास खेपव हरत दुख मोर कोन यो॥
साओन चमकय विजुरि छिटकय, हृदय कड़कय मोर यो।
आज नहिं नन्दलाल आओत, जीवन मोर कोन काज यो॥
भादव अति अन्हियारि चहु दिशि विविध रङ्क शब्द यो।
श्यामसुन्दर कुवुजि वश भेल, रहल मोहिं अव तेजि यो॥
आसिन आस लगाय आव हम, व्यतित कैल चहु मास यो।
राम कृष्ण मुरारि भजु मन, पुरत आस तोहार यो॥

---

२३६ बारहमासा।

(ग्वालरी)

साओन साखा कुञ्जबन में, ग्वालरी दधि बे...
करत बाद विवाद हम सँ, देहु कंस दोहाय री॥
भादव भरम गमाय ग्वालिनि घूरि घर तोहें जाहु री।
घाट जमुना दान लागे, देहु दान चुकाय री॥
आसिन राधा हरि सँ विनती, दान कवहुँ ने लागरी।
जँ हम जनितहुँ दान लागे, दितहुँ दान चुकाय री॥
कातिक कञ्चन मुकुट सोहे, ओ पिताम्बर काछिनी।
देखु सुन्दर रूप मोहन, नयन पटतन छाय री॥

मास अगहन विहसि राधा, ठाढ़ि भै विनती करी ।
छाड़ि देहु अड़ाड़ि मोहन, जाहु गोकुल भागि री ॥
पुर्सहिं नेह सनेह ग्वालिनि, काहे तुम बन जाहुरी ।
सदा लोचन रहत नाही, देहु दान चुकाय री ॥
चढ़ल माघ वसन्त गहि गहि मास ओ चतुरावड़ी ।
जाय अहिरा बात कहि कहि सुनह यशुदामाव री ॥
फागुन फन्द पसारि ग्वालिनि उड़त अबिर गुलाल री ।
दौड़ि दौड़ि सखा सब घेरत, ग्वालिन धूम मचाय री॥
चैत चिन्ता करह ग्वालिनि कृष्ण राधा साथ री ।
लेहु दान प्रभु अधिक गोरस करह यमुना पार री ॥
वैशाख राधा गेलि मधुपुर, हरि सँ कहथि बुझाय री ।
ज्ञान तोहरा लाज ककरा, सङ्कष्ट प्रान गमाय री ॥
जेठ प्रभु जी सँ भेट भै गेल, ओहि कदम जुरि छाँह री ।
छीनि लेल प्रभु चीर चोली, ग्वालिनि करत कलोल री ॥
आषाढ़ राधा रास ठानल, कृष्ण राधा साथ री ।
सुकविदास इहो पद गाओल, राधाकृष्ण विलापरी ॥

२३७ ऐजन ।

साओन सर्व सोहाओन सखि रे, फुललि वेलि चमेलि यो ।
रभसि सौरभ भमर भमि भमि, करय मधुरस केलि यो ॥
आरे केलि करथु पहु मनदै ।
सखि अधिक विरह मन उपजै ॥
भादव घन घहराय दामिनि, गरजि गरजि सुनाव यो ।
बरस घन झरे बुन्द रिमझिम, मोहि किछु नहिं भाव यो ॥
आरे भामिनि भै हम दम सम ।
मुरछि मुरछि खसे महि भर ॥

मास आसिन अधिक ज्वाला, विरह दुःख अपार यो।
परिनाम कोन उपाय हे सखि, करव कोन परकार यो॥
आरे कतेक सहब दुख पहु विनु।
सखि फफरो नाह बिछड़ जनु॥
नाह बिछुरल मोर हे सखि, भेल जीवन अन्त यो।
योगिनि भै हम जगत जोहव, जतै लुबुधल कन्त यो॥
अरे कन्त औतै हम जायव।
सखि जत उपदेश हुनि पायव॥
अगहन हे सखि सारि लुबुधल, नवल यौवन मोर यो।
योगिनि भै हम जगत जोहव, जतै नन्द किशोर यो॥
आरे युक्ति सँ जँ पहु औताह।
सखि करधै कंठ लगौताह॥
पूस धैरज धरिय चाहिय भमर रहल विदेश यो।
हुनि विदेशी सुखहिं खेपताह हमर वारि वयेस यो॥
आरे विदेशी वैसि गमौताह।
सखि हमर गृह नहि औताह॥
माघ रिम झिमि पवन डोलय, देह झामर मोर यो।
हसथि वदन उघारि सखि सब, कहथि मोहि विजोर यो॥
आरे शोक वियोग मनहि मन।
सखि चित थिर नहि एक छन॥
अङ्ग अङ्कित देह मज्जित विरह कम्पित गात यो।
आवि पहुँचल मास फागुन करव हम जिवघात यो॥
आरे राखल प्रान विषम सम।
सखि यौवन जोर विकल मन॥

यौवन जोर चकोर प्रभु विनु, चैत चञ्चल अति घना ।
कोइल कुहूकय मयूर शब्दय, करय कुतुहल उपवना ॥
आरे कड़कि पत्र लै लिखतहुँ ।
सखि प्रियतम ताहि पठवितहुँ ॥
कड़कि कलम मसिहानि विरहिनि पत्र लिखल वनाय यो ।
आयल मास वैशाख हे सखि उपम सहलो ने जाय यो ॥
आरे आजुक रइनि नहि औताह ।
सखि प्रात काल नहिं पौताह ॥
जेठ हे सखि उपम पिय विनु आब हम नहिं जाव यो ।
आनु यम हम हिय लगायब विपहु घोरि हम पीव यो ॥
आरे पिय विनु विपकेँ घोरि घोरि ।
सखि विनती करु कर जोरि जोरि ॥
करजोरि विनती मोरि हे सखि, हमर की अपराधयो ।
कौन विधि आषाढ़ खेपव, परम दुःख अगाध यो ॥
आरे ग्रुक्ति रमनि सँग रङ्ग कर ।
सखि हम धनि पड़लहुँ सरोवर ॥
जाहि सरोवर थाह कतहु ने, नयन बहे जलधार यो ।
भनहि कुलपति रसिक अनुमति चित धएल अवधारयो॥
आरे पल पल प्रान विकल अति ।
सखि कुवुजा हरल पहु गति मति ॥

---

२३८ ऐ० ।

चैत हे सखि फुलल वेली, भमर लेंल निज वास यो ।
तेजि मोहन गेल मधुपुर, हमर कोन अपराध यो ॥
वैशाख हे सखि कोइल चहुदिशि, कुहुकि मदन जगाव यो ।

सुमिरि हरि विनु जीव कड़कय, उठत विरहक ज्वाल यो ॥
जेठ चहुदिशि श्याम बादरि, हेरि मोहि डर लागु यो ।
जानि मोहिं अनाथ विरहिनि, गरजि गरजि डेराव यो ॥
मेघ गरजे बिजुरि छिटके, चमकि मास आषाढ़ यो ।
मोर रवकरे शोर करे घन, घोर सहलो ने जाय यो ॥
साओन सननन पवन सनकय, दादुर अति रव शोर यो ।
बुन्द झहरय भमर भनकय, नयन टपकय नोर यो ॥
भादव हे सखि भरलि नदिया, घेरि चहुदिशि देश यो ।
के लै जायत मोर पाँती, कन्त देत बुझाय यो ॥
आसिन हे सखि आस लगाओल, आसो ने पुरत हमार यो।
कैल हे सखि भोग भोगलहुँ, भेलहु आव देखार यो ॥
कातिक हे सखि निठुर प्रियतम, हिय ने चैनक लेश यो ।
हमर करम सखि येह लीखल, हुनक किछु नहिं दोष यो ॥
मास अंगहन देखि प्रिय सङ्ग करिय बहुत कलोल यो ।
साजि विविधि शृङ्गार सखि सभ, लेल प्रिय गृह प्रवेशयो ॥
पूस हे सखि मास आयल, भेल विह मोर वाम यो ।
विना प्रियतम भवने ने भावय, नोर वहु वसु याम यो ॥
माघ हारि पुकारि वैसलहुँ झाड़ि खराड वैद्यनाथ यो ।
विना प्रिय थिक नारि जीवन, विकव मरनक हाथ यो ॥
मास फागुन मानहु सखि सव, चित ने करह उदास यो ।
भनहि माधव आओत प्रियतम, पुरत मनहुक आस यो ॥

---

२३९ प्रभाती (पराती)।

आजु बृन्दावन वसियो ने बोले ॥
कहाँ ओ रामकृष्ण मनमोहन जनि लीला किय कुञ्ज कलोले ।

चरैं ने धेनु हरित तृन हरिनी धाजत विहङ्गम करत किलोले ॥
उगै ने रवि शशि गगन नखत सब, यमुना तीर समीर ने डोले ।
पापी प्रान सहत दुख साहेब, हरि विनु दारुन विरह झकोरे ॥

---

२४० ऐजन ।

प्रियतम प्रीति तेजल किय, तेजि गेल परदेशिया ॥
शून्य मसान भेल वृन्दावन, चरै ने धेनु रवै नहिं वसिया ।
विधि भेल वामश्यामगेल मधुपुर,सुमिरिसुमिरिविहरैंमोरछतिया
कोन अपराधजानि नहिं जाइछ,मोहि तेजि गेलमोहनरङ्गरसिया।
साहेबराम धन्य व्रजवसिया, कतके सहब पुरपरिजन हसिया ॥

---

२४१ ऐ० ।

श्याम विनु शून्य भवन भेल मोर ॥
के मोर आओत चारु कातसँ, लपकि झपकि लेत कोर ।
मधुर वचन मोहि केरे सुनाओत, किनक चुमब दुनु ठोर ॥
के मोर लाओत पर घर घर सँ, दधि माखन घृत घोर ।
व्रजक सखी सब धूम मचावे, किनका कहब हम चोर ॥
ककरा सङ्ग सखा सब खेलत, करत आँगन भरि शोर ।
कंस वँ मारि पलटि घर आओत श्रीमुखचन्द्रचकोर ॥

---

२४२ ति० ।

(राधाक कथन सखी सँ)

अलनिम वुझि सखि नयन फुजल रे ।
फलजोरि कमलिनि भमरे कहल रे ॥

दिनमनि लहु लहु पुरुब उगल रे।
जग जागल सब करे हलचल रे॥
कतजन तट पर करत मजन रे।
लाजो ने होइछ रसिक सजन रे॥
आँचर छोडु अलि अधर दशन रे।
सखी गन कहतिह सजन फेहन रे॥
रसन ससय नहिं एहन विहित रे।
जाउ झिड़य पहु सखिहिं सहित रे॥
दिनभार अनत रहव कोन गत रे।
आहे धनि तुअ विन भमर मरत रे॥
भमर हटल दुहु फरक फरक रे।
कुमर करव आश कथिलै परक रे॥

---

२४३ तिः।

सुनु सुनु कोइल पहिठाँ आइ, मधुमय पटरसभोजन खाउ॥
करुणाय काज हमर पहि राति, विनति करव तोहर कत भांति॥
पाँखि मढ़ायव झालरि हेम, युवती करतिह तोहर प्रेम॥
अधर मढ़ायव मोतिक रेख, अहंक वनायव सुन्दर भेख॥
लै लिय लै लिय लिखलहु पाँति, विते चहै पिक आधा राति॥
काजरमसि-नखसं लिख देल, हृदयक कागत फारिय देल॥
पवन पाँखिलै लहु लहु जाउ, मेघ चढ़ल अँह झट दै आउ॥
कहव बुझाय सुनव हरि वात, कथिलै कैलहुँ कामिनि कात॥
ओ धनि मरत विरह विष खाय, तिनसै पैंसठि राति विताय॥
सतत नयनसँ नोरक छोर, चलु चलु मरइछ, लियगै कोर॥

जँ नहि जायब आजुक राति, कामिनि देतिह जीवन साति ॥
कुमर पुरुप हिय परम कठोर, की कहु कीकहु कहलहुँ थोर ॥

गोपीक विनय उद्धवसौं—
(धुनि विहाग आदि)

कहब को ऊधो ! दुखसमुदाय ॥
जौं जनितहुं हरि कुबरि-खोरि-सँग, रहता नेह लगाय ।
तौं पहिलहिं निज कान कटवितहुं, लीतहुँ आँखि कढ़ाय ॥
जीवथु हमरहु सबक आयुसौं, युग युग यादवराय ।
कतहु रहथु सुख सौं दिन खेपथु, सुनि मन हमर जुड़ाय ॥
हुनक कुशल सौं कुशल एतै अछि, सब जन आस लगाय ।
मन मानन्हि तौं देथु दरश निज, मुरली मधुर बजाय ॥
कहवन्हि किछु नहिं कुमरकान्हकें, गोपिक विरहवलाय ।
जहिसौं रहथि मुदित मनमोहन, से अंह करब उपाय ॥
नयन अपन हम काढ़ि देत छी, कृपासहित लै जाय ।
माधव पथक निकट तरुवरपर, देब अहाँ लटकाय ॥
'सीताराम' सुमरि हरि ऊधव, सबकें धीर धराय ।
कहल वियोगक रोग हरब हम, श्यामक योग कराय ॥

---

२४९ तिः ।

नागर वैद्य चलल लै झोरी, सुन्दरि सुनु सुनु सामरि गोरी ।
सब व्याधिक औषधि मोर पास, तुरत छोड़ाविय दुस्सह त्रास॥
से सुनि सखिसवनिकसलिधाय, पहिलसजनि करकमलवढ़ाय।
कर धरि वैद्य बुझाय विचारि, रोग कठिन नहिं देब संभारि ॥
तुअ मुख हेरल हरिपथ माझ, सेज धयल अंह तेकरि साँझ ॥

दोसरि जनि कर आगु बढ़ाय, घोघट पट दै रहलि लजाय ॥
कुञ्ज टुटल वेसरि गिमहार, तखनहिं सँ चित दुख उपचार ॥
तेसरि ललिता नवज देखाय, कहथि चतुर बड़ वैद्य बुझाय ॥
बहुत विचारि वैद कहि देल, मनक कथा कोन गत बुझि गेल ॥
हरिसँग गेलहुँ निशि अहियारि, केओ किछु पढ़लक तिखसलिगारि॥
दुर दुर वैद्य झूठ तोर बात, झूठक गोटी झूठ बेसात ॥
हरिके थिक ओ परम गमार, हुनि सँग ललिता नहिं अभिसार ॥
सजनि राधिका बड़ दुख पाव, सेज सुतलि सँ आधि सुनाव ॥
हुनक साँचकहु दुख उपचार, झूठ कहब तँ थिकहु गोआर ॥
सब जनि कर धै आनल दाहि, कहु किय नागरि भेलि बताहि ॥
बहुत विचारि सोचि कहि देल, मनहुक कथा वैद बुझि गेल ॥
चारि राति सँ निन्दने आप, कान सतत बसिया झनकाप ॥
राधा सुनल सुमुखि मुख भेल, कर मुख झाँपि वैसि तन गेल ॥
कुमर सजनि सब देथि करताल,हरिथिक हरिथिक थिकथि गोपाल॥
चारि सजनि सह कैलन्हि केलि,माधव कैलन्हि सुन्दर खेलि ॥

---

२४६ उतरा चौरी ।

ओ दिन मोहन भूलि गयो हैं, भूखे के वनिहारी ।
दिना चारि के माखन वीतन, हमहिं खिला ओन आई॥
राधे, दीजिय दान चुकाई ॥
जाने नहि पाई ॥
ओ दिन मोहन भूलि गयो हैं, घर घर सहे उपहासी ।
दिना चारि के वास एक घर, एहि नगर के वासी ॥
राधे, दीजिय दान चुकाई ।
वैसे नहिं जाई ॥

ओ दिन मोहन भूलि गयो हैं, अम्बर लियो चोराई ।
अम्बर छीनो-विनती कीन्हा, जल बिच रहे छुपाई ॥
राधे, दीजिय दान चुकाई ॥
मोरे मन भाई ॥
नेना से तू बछरु चरावे, ओढ़े कमरिया कारी ।
घर धर के तू मखन चुरावहु, आज पिताम्वर धारी ॥
राधे, दीजिय दान चुकाई ।
वहु वात बनाई ॥
नेना से तू आँचर पेन्हे, आज कुसुम रंग सारी ।
चौर चौर बिरमहु गोपी सँग, जग भरि भई उघारी ॥
राधे, दीजिय दान चुकाई ।
सुन कंस के साली ॥
चोर वंस हवरो नहि कोई, वाप पुरुष वड़ दानी ।
त्रिभुवन पति के नाथ कहाई, देव कहे महादानी ॥
राधे, दीजिय दान चुकाई ।
जाने नहिं पाई ॥
कञ्चन कँगन नौरंगी चूरी, फूल भरम की साड़ी ।
तू परघर के पालित लालित, हम वृषभानुदुलारी ॥
राधे, दीजिय दान चुकाई ।
लेने नहिं पाई ॥

---

२४७ निरहुति ।

सकल किशोर वयस सम सखि गन, प्रमक करे प्रसारे ।
अपन अपन पहु सब सखि बरनथि, गत रातिक व्यवहारे ॥
मधुर विहँसि दृग वंकिम हेरथि, सुनथि श्रवन समधाने ।

कन्त निन्दि वरनथि निज चातुरि, विहसि विकचि मुखचाने ॥
से छुन माधव चुप चुप आयल, निरखल छवि उपचारे ।
प्रगटि हेरि मुख कहल विहसि हरि, लिय सलाम सरकारे ॥
से सुनि से धनि घोघट तानल, सखि सब रहलि लजाये ।
अहिनिसि कुमर केलि करु कौतुक, सब जनि मँगल गाये ॥

---

२४८ तिरहुति ।

प्रथमहि गेलि धनि प्रियतम पास, हृदय अधिक भेल लाज तरास॥
ठाढ़ि भेलि धनि आँगहु ने डोले, हेम मुरति सनि मुखहु ने बोले ॥
कर दुहु धै पहु पास वैसाय, रूसि रहलि धनि मदन जगाय॥
भनहि विद्यापति सब जनजाने, पुरुषक नहिं किछु अछि परमाने॥

---

२४९ तिरहुति ।

कत सँ आयल थिकहुँ वटोही, कते गमन कोन गामे ।
की थिक वंश पिताक नाम कहु, अपनेक की थिक नामे ॥
की निज कामिनि कयल अनादर, जँ वश रहह विदेशे ।
कोमल सोनलती सन तन तुअ, भामर सहलक क्लेशे ॥
की अपने वैसव किछु छुन लै, कहव अपन दुख हाले ।
कथि लै गृह तेजल सुनु सुन्दर, यतिजीवन जंजाले ॥
सुनु सुनु सुंदरि मथुरा घर थिक, वृन्दावन पथ गामे ।
वृष्णि वंश वसुदेव तात मोर, कृष्णचन्द्र थिक नामे ॥
परम पियारी प्रान दुलारी, श्री वृषभानु दुलारी ।
हुनिसँ वहुतदिवस भेल मिललहुँ, तेँ चललहुँ हिय हारी ॥
पथ कानन खोजइत हम चललहुँ, एकसर पड़लहुँ साँझे ।
सुनल गामई वृन्दावन थिक, धनि वृन्दावन माझे ॥

से सुनि राधा लज्जित भेलिह, हृदय भरल भरि छोहे ।
मुख आँचर दै नोर वहाओल, नीर निरज धरि जोहे ॥
कुमर भनत हरि कैल व्याज बड़, एकसरि की कर लाजे ।
वनिता-वशकी चलत चतुर पन, पुरुषक चतुर समाजे ॥

---

२५० तिरहुति ।

(श्री कृष्णक कथन)

मनमथ केहन पढ़ाओल पाठ, वान्हल दुहु हिय प्रेमक गाँठ ॥
तिलभरि अहिनिशि चैनने होय, धनि विनु जीवन हम वरु खोय ॥
कखन पड़ल धनि पुनिमकसाँझ, छपकिसुतल अलि पंकजमाझ ॥
कखन वसन्तक आगम होय, कोइलि चुप चुप तरु पर रोय ॥
कखनहु ध्यानल धनि लग ठाढ़ि, सुमरि नयन जल बाढ़ल वाढ़ि ॥
रुदन पसारल से दुइ वेरि, गञ्जन मधुर कयल हम हेरि ॥
शयनहिं पृथक पृथक हम ठाढ़, केहन पुरुषक हृदय पहाड़ ॥
ई सब सुमरि हृदय मोर काप, विरह व्यथा नखशिख लै झाप ॥
कुमर भनल फल प्रेमक तीत, जे थिक हित से गने अहीत ॥
नयन झुरत कहिया भगवान, देखब विमल धनिक मुखचान ॥

---

२५१ तिरहुति ।

मदनसदन चलु दुइ जन संग, देखब रति ओ रतिपति रंग ॥
अपन करे से करत सिंगार, झनझन ऋतुपति धुनल सितार
रमनी रति करइत अछि नाच, कुंजकेलि होय सुनलहुँ साँच ॥
करधै हम लै जायब राइ, आयल अछि हमरो धनि साइ ॥
नूपुर धुनि अँह करब मिलाय, रति सह हम नाचब अलसाय ॥

नाच देखायब तँ किछु लेब, अपन करक धनि कंगन देब ॥
शशि दीपक दुइ खेल पसार, फुलल फूल तँह विमल हजार॥
चुनि चुनि हार गुहय पहिराय, देब अहाँ के घर पहुँचाय ॥
चलु चलु सुन्दरि होइछि देरि, रइनि बीच थिक, भेल अबेरि ॥
कुमर करब प्रभु अपरुब नाच, कुसुमक शर लागल तन पाँच ॥

---

२५२ तिः ।

शशि की चलय चारि तारा विच, छिटति चलै मुख शोभा ।
शयनक घर वसु राहु देखि धनि, आनन शशि बुझि लोभा ॥
चमकि उठल की बिजुरी रे, भरि आँगन भेल इजोरे ।
सरिता तीर वसल भामर मन, वैसल भमर अगोरे ॥
नूपुर भन भन कायक शरकी, रति-कर-कंकन वाजे ।
नयनकज्योति छपकि विगलित भेल, भूपन भरल समाजे ॥
केथिक केथिक कहु हे मनमथ, पहरू ठाढ़ दुआरे ।
कुमर पहरुआ शशिकें पकड़ल, रति तन साजि सिगाँरे ॥

---

२५३ छन्दपरक ।

दछिन परिधन हिलय लहु लहु, पवन खेल पसार ।
जखन वसन उड़ाय देखल, पूर्ण चन्द्र उघार ॥
अलक साजल तिलक राँजल, नयन काजर शोभ ।
फुलल वदन सरोज सुन्दर, देखि मुनिहुँक लोभ ॥
मनक मनोरथ पूरल आज ।
कहय, कहति वरु होइछ लाज ॥
चन्द्र बंकिम भाल भूपन, चमक कंकन हाथ ।
विरह ज्वाल मिझाय लेपल, विमल कुंकुम लाथ ॥

नयन आध घुमाय कखनो, हृदय काटि खसाय ।
कखन चलइछ कखन घुमइछ, रभसि वाट खेलाय ॥
लहु लहु चललिह करिनिक चालि ।
अँग अँग उद्‌सल मनसिज मालि ॥
चिहुसि आँचर झापु मुख की, विजुरि मुख विलसाय ।
रक्त कुमुदक ठोर हासिनि, लहुक लहुक हिलाय ॥
दुइ कुसुम पर अलक सोहय, भमर सब रस पाय ।
शिव थिकथि मन मानि माला, साँप भै लेपटाय ॥
कनक पुतरि तन परसल छाह ।
दुरि कै देलक विरहक थाह ॥
हंस गामिनि पिक सुभाषिनि चन्द्रहासिनी कामिनी ।
चन्द्र ज्योतिक भ्रमहि फूललि कुमुदिनी तेहि यामिनी
कुमर मन मकरन्द सुरभित देत पति काँ भामिनी ।
सहस टुक धनि मान टूटत मन हरत पति मानिनी ॥
चल अभिसार राग भल छन्द ।
देरि जानि मन लागल धन्द ॥

---

२५४ वटगमनी ।

से दिन सुमिरह भामिनि सजनिगे, छलसँ लेल वजाय ।
अपनहि तरु जनु आयल सजनिगे, लतिका सँ लपटाय ॥
पितुगृह गरव सुनाओल सजनीगे, छल कैलहुँ कत भाँति ।
हम पहिराओल फूजल सजनिगे, अभरन कत से राति ॥
आतप व्याकुल चामर सजनिगे, देलहु तुअ कर राखि ।
मानिनि फेकल दुरिकै सजनिगे, कपट क्रोध किछु भाखि ॥
दीपक करजँ लगाइत सजनिगे, देलहुँ जखन मिझाय ।

रुदन पसारल बहुविधि सजनिगे, के तोहि देल कनाय ॥
मुख पर कर धै बोधल सजनिगे, कनितहिं बीतल राति ।
तखन हमहुँ कहलहुँ कत सजनिगे, तीत मीठ बहु भाँति ॥
से दिन ध्यानव कानव सजनिगे, दुहु जन कुमरक भान ।
नागर जानय की थिक सजनिगे, भाव पदक अनुमान ॥

---

२५५ ऐजन ।

शयनह शयनह शीतल सजनिगे, सुरभित सेज सुखाय ।
श्रम जल सिक्त दुहुक तन सजनिगे, छुन में देत भिजाय ॥
कथिलै पहिरल अभरन सजनिगे, शशि पर बादरि देल ।
कमल कली माला अलि सजनिगे, सबटा रस चुसि लेल ॥
नयन निन्द भयसँ जनु सजनिगे, काजर भै बसु ओर ।
हियसर कमल कली पर सजनिगे, परिधन वारि हिलोर ॥
सुमुखि होउ कलकंठिनि सजनिगे, लहु लहु बाजह बात ।
सकल सखी कौतुक कर सजनिगे, कोबर चारिहु कात ॥
शशिमुखि साजह डाली सजनिगे, पुहुप बास लै लेह ।
चलु चलु रति पद पूजब सजनिगे, मान अपन दै देह ॥
मनसिज माली सेवल सजनिगे, कमल कली हुलसाय ।
कर परसय मुख झापय सजनिगे, आँचर रहे मसकाय ॥
कुमर सरस रस पाओल सजनिगे, रसमय करि व्यवहार ।
युवा वयस, युवकक पुनि सजनिगे, युवतिक जीवन सार ॥

---

२५६ तिरहुति ।

ओंचर धरु अय अपन सँभारि, सुन्दरि जीवनधन सुकुमारि ॥
आज सुनल होय कमलक चोरि, काँच कमल केओ लेथिने तोरि ॥

आँचर तर राखव मुख गोय, पुनिम चन्द्र राहुक भय होय ॥
चलु अय कामिनि मन्दिर माझ, केलनि भयाउनि आजुक साँझ॥
अधर समटु अलि देखत आय, दशन उगत तँ घन ठनकाय ॥
कदलिजघन तनुक छह गोरि, पवन रसिक छथि देथि ने तोरि ॥
अलक नुकायब-मनसिज ताक, धै झूलत मुखचढ़ि ललनाक ॥
आधनयन कय हेरह नारि, कुमर चतुर पति रहे परतारि ॥

---

२५७ तिरहुति ।

सुनु सुनु सुन्दरि रहु मुख झाँपि, मदनक शर सँ रहलहुँ काँपि ॥
मन मन सुन्दरि होइछ त्रास, हित अनहित होय की विश्वास ॥
तु अ मुखशशि नहि नभ मह जाय, कुन्तल समटु तिमिरवनि जाय॥
नयन झापु मीनक भय होय, अधर मधुप भये राखह गोय ॥
फुललि पुहुप होउ ग्रीवक हार, वसनक तर दुहु करव विहार ॥
दुहुजन अंकम गहि हुलसाय, कुमर कन्त छल कयल बनाय ॥

---

२५८ तिरहुति ।

चिकुर झापि राखह मुख गोय, संपुट कर कै रहलिह सोय ।
अभरन जत छल तत सकुचाय, वेसरि वसन ने किछु ओ हिलाय
थिर मुनि राखह अधर मिलाय, विजुरि चौंक नहि दशन बुझाय॥
थिर कै वान्हह आँचर नारि, मुख नहिं वाजह थकलहुँ हारि ॥
कमलासनि कठपुतरि बुझाय, उरज सकुच माला अलसाय ॥
कर धै लाख कयल परबोधि, मुखहुक गति राखल अवरोधि ॥
उठु उठु सुन्दरि तरु अलसाय, फुललि लता नहि किय लपटाय ॥
कुमर तखन हसि तन पुलकाय, रमन रभस मुख वचन सुनाय ॥

---

२५९ तिरहुति ।

उठु उठु सुन्दरि करव सिंगार, कंकन नूपुर मोतिक हार ।
कर्ण फूल वेसरि झूल झूल, अलक भमर मुखनीरज तूल ॥
वसन समारव अपनहि हाथ, उठु उठु निन्दक करु जानि लाथ ।
कंचुकि दछिनक आँग लगाउ, शीत पडय धनि वसने नुकाउ ॥
आजुक दिन साजह सुख सेज, हठ कै भामिनि हट पुन तेज ॥
कैलहुँ हम की किछु अपराध, जँ नहि हेरिय लोचन आध ॥
मनसिजशर मन्दिर भरि पाट, तिखशर लागल जिउभेल आँट ॥
कुमर रहलधनिसुखविहसाय,विमुखिसुनलिधनिसुतु अलसाय॥

---

२६० वटगामनी ।

सेज सुतलि पुहुपक कलि सजनिगे, फूल फुलायल आध ।
कोमल सव दल भाँगल सजनिगे, दुइ दल वड़ अपराध ॥
एखनुक कुमुद फुलायल सजनिगे, सरस भरल भरि देह ।
लाजँ सुदल समटेल सजनिगे, वाढ़ल उनमत नेह ॥
कर लै कलहि उठाओल सजनिगे, हिय परराखल आनि ।
से छल कै हिय वेधल सजनिगे, हृदय हेराओल जानि ॥
शीश चढ़ाय नयन धरि सजनिगे, अंकम भरि भुज पास ॥
वसन झपाय कुमर भन सजनिगे, रमनि कुसुम सहवास ॥

---

२६१ तिरहुति ।

ललित फुलल वय रतनक कामिनि कैलह की अभिमाने ॥
मदन जखन शर कुसुम समारत, दुरि जायत तुअ शाने ॥
चानक सन मुख राहु गरासत, कमलनयन वह नीरे ।

अधर पलव दुइ तरसि सुखायत, आँचर कपत अधीरे ॥
तखन अहाँ भुजपास बनायब, विभ्रम रमनक बेला ।
पंकजमुख पंकज कर पर अय, कहब कतै पहु गेला ॥
शिथिल जघन माला उर काँपत, उर धरकत सुनु बाला ।
मदनक शर जँ लागत मानिनि, सुमिरब नाम गोपाला ॥
कुमर तखन बन रटन रटब धनि, विरहिनि द्वारहिं द्वारे ।
दुरि जायत अभिमान सकल तुअ, होयत परम देखारे ॥

---

२६२ बटगमनी ।

तुअ मुख दरशन छूटत सजनिगे, जखन जायब हम गामे ।
तखन मदन जिव लहरत सजनिगे, की देखि करब गेआने ॥
बिसरि देब नहिं बिसरत सजनिगे, तुअ मुखपंकज पाने ।
विरह विकल मन तलफत सजनिगे, दिन दिन भूर झमाने ॥
जँ हम जनि तहुँ एहन सन सजनिगे, होयत आनसँ आने ।
कथिलै नेह लगाओल सजनिगे, आब बचत नहिं प्राने ॥
भन यदुनाथ सुनह सखि सजनिगे, गुंजर थिक दुनि नामे ।
हमर कहल बुझि राखब सजनिगे, बोधि पुराओत कामे ॥

---

२६३ तिरहुति ।

माधव जाय केवाड़ छोड़ा ओल, जाहि मन्दिर बसु राधा ।
चीर उघारि अधर मुख हरेल, चान उगल जनु आधा ॥
कर करपूर पान हम ग्रासल, आओर साठल पकवाने ।
सगरि रइनि हम बैसि गमाओल, खंडित भेल मोर माने ॥
मथुरा नगर अटकि हम रहलहुँ, कियै ने पठाओल दूती ।
संग दुइ चारि सखी सँ मिललहुँ, आलस रहलहुँ सूती ॥

यौवन जोर कलागुन आगरि, से नागरि हम नाही।
जाहि हित लै तोंहे राति गमाओल, पलटि जाह पुन ताही॥
कमलनयन कमलापति चुम्बित, कुंभ कर्ण सन दापे।
हरिक चरन धय कह विद्यापति, राधा कृष्ण विलापे॥

२६४ तिरहुति।

सुन्दरि चललि शयन गृहना। चहुदिशि सखि सब कर धरु ना॥
जइतंहि भेल परम डरना। शशि जेना कानथि राहु डरना॥
हार टुटिय छिरि आय गेलना। भूषन वसन लोटाय गेलना॥
रोय रोय कजरा दहाय गेलाना। अदंकहि सिन्दुर मेटाय गेलना॥
विद्यापति कवि गाओलना। दुख सहि सहि सुख पाओलना॥

२६५ तिरहुति।

पुरविल प्रीति अयलहुं हम हेरी, हमरा अवैत वैसल मुख फेरी॥
दहिन वैसलि धनि उतरोने देल, नयन कटाख जीव हरि लेल॥
कमल बदन छल मन दुइ ठास, कोन अवगति मोरा रहल गेयान॥
आस धयल नहिं करह निरास, होउ प्रसन्न पुरावहु आस॥
अरुन उदय भेल निशि किछु थोड़, आब बुझल धनि स्वारसतोर।
विद्यापति कवि मन द भान, करतव नहिं पुरुपक अपमान॥

२६६ तिरहुति।

आब उचित नहिं मान गे, रमनी।
एखनुक ऋतु हम पहन देखै छी, जागल पै पचवान॥
जूड़ि रइनि चकमक करे चाननि, एहन समय नहिं आन।

यहि अवसर पड़ मिलन जेहन सुख, जेकरो हो से जान ॥
त्रिवलि-तरंग शितासित, संगम उरज शम्भु निर्मान ।
आरत भै रति दान मंगै छी, दिय धनि अधरक पान ।
हरषि हरषि अलि विलसि विलसि धनि, करह अधर मधुपान
अपन अपन पहु सबहि जेमाबय, भूखल तुअ यजमान ॥
कुसुमक रचित सेज दीपक देखि, थिर नहि रहय गेआन ।
संचित मदन वेदन तन दारुन, विद्यापति कवि भान ॥

---

२६७ तिरहुति ।

माधव, एखन दूरि करु सेजे ।
किछु दिन धैरज धरु मनमोहन, हमहि उमगि रस देवे ॥
काँचकमल फुलकलि जनु तोड़ह, अधिक उठत उदवेगे ।
एहन वयस रति योग ने थिक पहु, मानिय मोर उपदेशे ॥
राहु गरासल शशधर जेना, तेहन ने करिय गेआने ।
किछु दिन और विते दिय माधव, तखन होयत रसदाने ॥
भनहि विद्यापति सुनिय मधुरपति, धैरज धरिय सुरेशे ।
समय जानि तोहि होयत समागम, आव हठ छाडु नरेशे ॥

---

२६८ बटगवनी ।

कुंजभवन से निकललि रे, रोकल गिरिधारी ।
एकहि नगर वसि माधव रे, जनिकरु वटमारी ॥
छाडु श्याम मोर आँचर रे, फाटत मोर सारी ।
अपयश हैत जगत भरि रे, जनिकरिअ उघारी॥
संगक सखि अगुआइलि रे, हम एकसरि नारी ।
यामिनि आबि तुलायल रे, एक राति अन्हारी॥

भनहि विद्यापति गाओल रे, सुनु गुनवन्ति नारी।
हरिक संग किछु डर नहि रे, तोंहे परम गमारी॥

---

२६९ तिरहुति।

(सखी सँ नायिकाक कथन शयन-गृह जैबा काल)

आ हे सखि आहे सखि लँ जनु जाहे, हम अति बालक निरदय नाहे
बोल भरोस दै सखि गेलिह लेआय, पहुक पलंग परदेलन्हिवैसाय॥
गोट गोट सखि सब गेलि बहराय, बज्रकेवाड़पहु देलन्हि लगाय।
एहि अवसर सखि धैलन्हि कन्त, चीर सँभारति जिउ भेल अन्त॥
भनहि विद्यापति तखनुक रीति,युग युग बढ़ओ पहुक सँग प्रीति॥

---

२७० तिरहुति।

हम नहि रहब कन्त तुअ पासे।
कठिन हृदय भाँगह कोमल मुख, लागल परम तरासे॥
सखि सब ठाढ़ि देखि रहे कौतुक, प्रात करत बड़ हासे।
बज्र केवाड़ खोलु हम जायब, आब उचित नहिं वासे॥
कंचुकि टुटल फुटल वेसरि मुख, कंकन परल उदासे।
भाँगि अधर माला प्रभु तोड़लह, पुरुषक की विश्वासे।
प्रातहि देखि सजनि सब कर धै, विलखि करत कत हासे।
रमनक समय आब नहि देखिय, रवि उगि रहल अकासे॥
छोड़ु भमर आँचर मोर फाटत, खोलह निज भुज पासे।
कुमर कठिन निशि तिल नहि भावल, चानहिं राहु गरासे॥

---

२७१ तिरहुति ।

सुन्दरि हे तोहें सुबधि सयानि, मरब पियास पिया बह पानि ॥
के तों थिकाह कोन ग्राम गेह, बिनु परिचय तोंहे जोड़ह सिनेह ॥
थिकहुँ बटपन्थुक राजकुमार, धनिक बिरह सँ रटल संसार ॥
सुनि सुन्दरि देल पिढ़ही आनि, बैसु पथिक जल पिबलिय पानि ॥
एतहि रहह कतहु जनु जाह, जे तकवह से भेटत बेसाह ॥
ससुर भैंसुर मोर गेलाह विदेश, स्वामी गेलछथि तनिक उदेश ॥
गामक पहरु सेहो मोरा हीत, निरधन परोसिन सुतथि निचीत॥
भनहि विद्यापति गुनवत्ति नारि, धैरज धैरहु मिलत मुरारी ॥

---

२७२ तिरहुति ।

माधव तोंहें जनु जाह विदेशे ।
हमरो रंग रभस लै जयबह, लैबह कोन सन्देशे ॥
हीरा मनि मानिक लाल जमाहिर, आओर सोनामुखि साखी ।
जे अहाँ माँगब से हम आनब, सुन्दरि मन जनु झाखी ॥
ओतै जाय पहु होयत आनमति, बिसरि जायब पहु मोरा ॥
हिरा मनि मानिक एको न माँगब, फेर माँगब पहु तोरा ॥
जखन गमन करु नयननीर भरु, देखियो ने भेल मुख तोरा ।
एकहि नगर बसि पहु परबस भेल, एहन करम भेल मोरा ॥
पहु सँग कामिनि अधिक सोहागिनि, चन्द्र निकट बसु तारा ।
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजयौवति, मन करु अपन उदारा ॥

---

२७३ बटगवनी ।

सरस वसन्त समय भेल सजनिगे, दछिन पवन वहु धीरे ।
सपनहु रूप वचन एक भाषिय, मुख सँ दूरि करु चीरे ॥

तोहर वदन सन चान होथि नहि, जदपि यतन विह देथी।
कै बेरि काटि बनाओल नव कै, तदपि तुलित नहि होथी॥
लोचन तूल कमल नहिं भै सकै, से जग के नहि जाने।
तैं पुन जाय नुकायल जल भै, पंकज रहि अपमाने॥
मदन वदन पटतर नहिं पावथि, कोन तप तुलितहि तोही।
तैं पुनि मदन भेल छथि पाहुन, जगभरि तोहरहि जोही॥
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजयौवति, ई थिक लछिम समाने।
राउ शिवैसिंह रूपनरायन, लखिमा देइ प्रतिभाने॥

---

२७४ तिरहुति।

विस्मित भेलहुँ देखि नयान, लहु लहु चलै धरनि पर चान।
चिकुर फुजल शशि कारिख रेख, मुकुतागन की तारक भेष॥
जखन वसन मुख उड़ल घुमाय, दामिनि चमकल द्रुगचन्दुआय॥
हेमलता कँ पवन उड़ाय, नयन कटाखक साँगि चलाय॥
राधा जानि धैल हरि पाछु, बान्हल दिढ़ कै काछिनि काछु॥
नयन झपाय रहल हरि ठाढ़, अकचक तखन पड़ल दुखगाढ़॥
दुहु जन कैलन्हि कुंजनिवास, रंग रभस एकलि अवकाश॥
कुमर दुहुक दुहु खेल पसार, साँझ सुशीतल मास अषाढ़॥

---

२७५ तिरहुति।

(राधा कृष्णक सम्बन्ध में सखी सखी में कहैछ)

चन्द्रकला सनि सेज समारल, नागरि नागर वास।
सुरभित वसन पसारल ऊपर; प्रीति भरल सहवास॥

चन्द्रानानि कर पल्लवल दुहु, कोमल चमर हिलाय।
पवन झिकोरे अपनहि कामिनि, आँचर रहथि उड़ाय॥
प्रेम अलाप विलाप दुहुक छल, परम पियासलि नारि।
कन्त देल निजकर सँ सुललित, शीतल प्रेमक वारि॥
नहिं नहिं करथि पियव नहि जल हम, भेल कंत किछु ओट।
रइनि निशीथ रमनि प्यासलि अति, तैं कंतक मन छोट॥
भामिनि कहल पियल मनभरि जल, केहन कैलन्हि लाथ।
नागर कहल हमहुँ अति प्यासल, आनिय जल निज हाथ॥
कत सँ आनव आँगन जायव, नागरि पड़ल उदास।
कुमर अधररस पीवय मधुकर, लागल रमन पियास॥

---

२७६ बटगवनी।

केलि भवन नहि जायव सजनिगे, आतुर छथि मोर कन्त।
हम नागरि अति नाज़ुकि, सजनिगे, होयत प्रानक अन्त॥
तिलभरि पल नहिं लागय सजनिगे, शपथ कहिय हम तोर।
काचकली झिकझोरल सजनिगे, सहि ने सकय जिउ मोर॥
नहि नहि जँ हम भाषिय सजनिगे, तँ मानय मन रोष।
नागरि प्रीति ने मानथि सजनिगे, पुरुषक से बड़ दोष॥
रत्नपानि भन गाओल सजनिगे, ई सुनि रहि मन गोय।
हरि सँ नेह लगावह सजनिगे, दिन दिन अति सुख होय॥

---

२७७ बट०।

कौतुक चलिलि केलिगृह संजनिगे, सँग दश चहु दिशि नारि।
विच विच सुन्दरि शोभित सजनिगे, जेहि घर सुतल मुरारि॥

कहि षोड़स कहि अभिरन सजनिगे, पहिरल अपरुब चीर ।
देखि सकल रस उपजय सजनिगे, मुनिहुक मन नहि थीर ॥
दशन नाम दड़िम बिच सजनिगे, शिर लेल घोघट सँभारि ।
लहु लहु चलइत पथधै सजनिगे, सकुचय अंकम सारि ॥
लै करि भवनहि देलन्हि सजनिगे, घुरि आइलि सब नारि ।
कर धै पास बैसाओल सजनिगे, हेरल बसन उघारि ॥
चन्द्रनाथ भन मन दै सजनिगे, ई सभ बड़ विपरीत ।
वयस गुरू समुचित थिक सजनिगे, नहि मानह मन भीत ॥

---

२७८ तिरहुति ।

चललि शयन गृह सुन्दरि रे, नागरि कर लागी ।
जलद बिजुरि जनु बिछुरल रे, निज निज अनुरागी ॥
सुभग सुवासित पहिरन रे, कुसुमित वर चीरे ।
भाव तुलित निज पद दै रे, तैं गमन गम्भीरे ॥
सिन्दुर रेख चिकुर बिच रे, अनुरूप अकारे ।
उपगत भेल यमुना दह रे, जनि वाढ़ल धारे ॥
धवल वसन शिर शोभित रे, जनि श्यामल माले ।
नागरि पद शुभ नुपूर रे, जनि पूरथि ताले ॥
भानुनाथ कह मन गुनि रे, जँ दशि भगवाने ।
पाओत सतत एहन सुख रे, मिथिलापति जाने ॥

---

२७९ तिरहुति ।

चललि शयनगृह सुन्दरि रे, आनन्द उर वृन्दा ।
शिर सँ ससरल घोघट रे, जनु जागल चन्दा ॥

द्वितीयसर्ग ।

वजइत नुपूर किंकिन रे, दोउ रव दुहु काने ।
दुर सँ हंस शब्द करु रे, घर पिउ जिवसाने ॥
डरहु ने जानि चकवा शिशु रे, उरकुच युग छाजे ।
पवन परसि जनु आँचर रे, जनि झपटल बाजे ॥
नाभि विवरसँ निकललि रे, रोमावलि साँपे ।
से सौतिनि वध कारन रे, आँचर रहु झाँपे ॥
नव परिचय नव नागरि रे, अभिनव अनुरागे ।
कह अनुभव करि बादरि रे, देखति सुख लागे ॥

इति द्वितीयः सर्गः ।

मैथिली-गीताञ्जलि ।

तृतीय सर्ग ।

(विविध गीत)

माखन तस्कर नाम, सखी रे ॥

श्यामला घर सून देखि कै, आवथ से अन जान ।
सीक उधेसि मटुकि लै आनथि, परमचोर थिक श्याम ॥
नन्दकिशोर चोर चोरी करु, केहन सुन्दर नाम ।
नन्दक ओते जाइ कहवालै, बालक सूतल श्याम ॥
मथुरा उजरत केओ की बाचत, कत अपयश गुमनाम।
गोपीगन विच भनथि कुमर जन, अलख रटथि घनश्याम ॥

---

२८१ भजन ।

बान्हहु हे सखि श्याम लला कें ।
रभसि रहल नहि भय एकरा किछु, यदुकुल बोरलक नाम ।
कत उपराग नगर विच उपगत, चोर रसिक भेल श्माम ॥
छुन देखी छुन घुसरि पड़ाइछ, भरि दिन पाछु पुयान ।
लै ऊखरि सखि बान्ह लला कें, भरि दिन दैह सहान ॥
दास कुमर भन ओ त्रिभुवन पति, मायापति भगवान ।
तनिका यशुदा बान्हि उखरि लै, भक्तक वश घनश्याम ॥

---

२८२ ऐजन ।

मुरली धुनि मति करह श्याम हो ।
मुरलि टोनि टोन चित लागल, भावै घर नहिं अपन श्यामहो ।
[illegible] छुन झनझन वासुरि वाजत, जगितहुँ देखियसपन श्यामहो ॥
सासु ननदि दिठ परल हमहिपर, भरि घर होइछ हसन श्यामहो ।
मुरलि मनोहर मुरली तेजिय, अथवा रोधिय श्रवन श्यामहो ॥
दास कुमर मुरली विप लागल, छटपट हरिहरिजपन श्यामहो ।
तन सँ काढ़ि हिया ग्वालिनि के, मुरली धुनि करु रटन श्यामहो॥

---

२८३ ऐजन ।

सुनु सखिया, प्रभु कैलन्हि मोर वड़ हसिया ॥
मुरली धुनि सुनि घर हम तेजल, चललहुँ रमनक गछिया ।
ठाढ़ कदम तर लपकि पकड़ि लेल, वालक युदुपति रसिया ॥
विपुल पुलक मद रंग रङ्गल तन, दुहु जन कैलहुँ वतिया ।
कुमर विरमि दुहु जन रमि रहलहुँ, जागि गमाओल रतिया ॥

---

२८४ रास ।

वंशी लेलन्हि चोराय हे मा, मुरली लेलन्हि चोराय ।
यमुना नीर तीर वृन्दावन, संगहि गेलहुँ खेलाय ।
चंचल नारि चतुर गुण आगरि, छलकै लेलन्हि चोराय ॥
भृकुटि नयन सँ हेरइते उठली, उठली ठुमुकि चलाय ।
जँ प्रतीत नहि होय हमर वोल, चलु सँग दिय गे कहाय ॥
यशुमति जाय ताहि सँ कहुगय, ई के सहत नेआय ।
तो तरुनी मनमोहन वालक, कथि लै देलह कनाय ॥
वाँसक पोर वनल वासुरिया, अयला कतहु भुलाय ।

जा सँ प्रीति रीति रस बासल, ताहि कहू गय जाय ॥
लै वंशी कर मिलथि राधिका, घूघट बदन छुपाय।
सुकविदास प्रभु तोहर दरश कें, चरन कमल चित लाय ॥

---

२८५ भजन।

हे हर, धन तोहर व्यवहार।
सहस देवता याचन आवथि, अपने भाँग अहार ॥
गरल पियल, हरिकाँ श्री अरपल, हे हरि धन सरकार ॥
अभरन अहि यतिवर कानन वस, गिरि २ करह विहार ॥
सुत वनिता धन मन्दिर देलहुँ, याचक द्वार हजार ॥
हमर वेरि अवितहिं मुख मोड़ल, हिमपति कें तृन भार ॥
चानन जल वेलपात फूल ओ, अच्छुत पूजन साज ॥
आज दुहुक पद पूजब मन भरि, अयलहुँ पतबे काज ॥
अँह वरु भागव पाछु पधारव, आव ने अँहक उधार।
कुमर शरन राखब की तेजब, होयत आज देखार ॥

---

२८६ महेशवानी।

आजु नाथ एक वरत महासुख लागल हे, आहे
तोहें शिव धरु नटभेप कि डमरु वजावह हे ॥
भल तों कहह गौरा नाचय हम कोना नाचव हे, आहे
चारि सोच मोहि होए कवन विधि वाचत हे ॥
अमिय चुविय भुमि खसत वघम्वर जागत हे, आहे
होयत वघम्वर वाघ वसहा धय खायत हे ॥
शिर सँ ससरत साँप, दहो दिश पाटत हे, आहे

कार्तिक पोसल मयूर से हो धरि खायत हे ॥
जटा सँ छिलकत गंग भूमि भरि पाटत हे, आहे
होयत सहस्र मुख धार समटलो ने जाएत हे ॥
मुण्डमाल टुटि खसत मसानी जागत हे, आहे
तोहें गौरा जेवह पराय, नाच के देखत हे ॥
भनहि विद्यापति गाओल; गावि सुनाओल हे, आहे
राखल गौरिक मान, कि नाचि देखाओल हे ॥

---

२८७ ऐजन।

योगि एक ठाढ़ अंगनमा में हो भवनमा में ॥
वरगरा रुद्रमाल ओढ़न वघछाल, चित्र विचित्र हुनि ओढ़ना में।
सह सह साँप आँग तन कपड़त, क्यो नहि जाय हुनिलगवामें॥
भिखिओनेलेययोगीउठियोनेजाययोगी, शिवसननाहिभुवनमामें॥
गौरि निकालु अंगनमा में।
कहथि मुत्रंशलाल सुनह मनाइनि शिवसन नाहिं भुवनमा में ॥

---

२८८ ऐजन।

हे हर जानि ने पड़ल गरू दरवार।
असरन शरन धयल हम तोहि, अवला जानि बिसरलह मोहि॥
भाँगखाय शिव सुतलाह भोर, तैँ दिन दिन दुरगति भेल मोर॥
दाता हमरो सिंहेश्वर नाथ, तनिक सेवन कै भेलहुँ सनाथ ॥
भनहि विद्यापति सुनिय महेश, अपन सेवक के मेटह कलेश ॥

---

२८९ ऐजन।

गौरा तोर अङना, वड़ अजगुत देखल तोर अङना ॥

एकदिश बाघ सिंह करे हुलना, दोसर बड़द छहु सेहो बउना॥
कातिक गनपति दुइ चेगना, एक चढ़ेमोर पर एक मुसना॥
पैंच उधार माँगे गेलहु अङना, सम्पात देखल एक भंग घोटना॥
खेतिने पथारि करुभाग अपना, जगतके दानी थिका तीन भुवना॥
भनहि विद्यापति सुनु उगना, दारिद्र हरन करु धैल शरना॥

---

२९० ऐजन।

सुनु भुवनेश्वर नाथ अनाथक दोसर हे, हे
सभक पुरल मन काम हमर थिक अवसर हे॥
पाप कयल हम वहुत तकर फल पाओल हे, हे
तोहे प्रभु त्रिभुवन नाथ पतित कत तारल हे॥
तुअ पदपंकज छाड़ि अनत नहि जायब हे, हे
सुदृष्टि हेरिय एक बेरि कि यम सँ बाचिय हे॥
कह गोबिन्द कर जोरि विनय प्रभु मानिय हे हे,
तोहें प्रभु होउ सहाय दास कें राखिय हे॥

---

२९१ ऐजन।

पाहुन नन्दि भवानी माइ, पाहुन नन्दि भवानी।
माइ हे, वैसक देल बघम्बर आनि॥
घर नहिं सम्पति, वृतने परोस।
माइ हे, पाहुन आनल कोन भरोस॥
हर माला लै धरथि ध्यान॥
माइ हे, पाहुन जेमथु पहिले साँझ॥
माँगि चाँगि आनल तामाडुइ मिसिया।
माइहे हरके चरित्रदेखि हसथि परोसिया॥

भनहि विद्यापति सुनहु मनाइनि।
माइ हे एहन पाहुन घर नित दिन आनि॥

---

२९२ ऐजन।

हम सँ रुसल महेशे, गौरि विकल मन करथि उदेशे॥
तन अभरन भेल भारे, नयन वहै जल निर्मल धारे॥
पुछिय पथिक जगतोही, एहिपथे देखलह वूढ़ वटोही॥
अंग में विभुति स्वरूपे, कहव शिवक की सुंदर रूपे॥
भनहि विद्यापति ताही, गौरी हर विनु परम वताही॥

---

२९३ ऐजन।

योगिया हम एक देखल गेमाई, अद्भुत रूप कहल नहिं जाई॥
शिरवहु गंग तिलक भलचंदा, देखि स्वरूप मेटल दुख दन्दा॥
पाँचवदन तिननयन विशाला, वसन विभूति ओढ़न वघछाला॥
जाहि जोगियाले रहलिहरानी, सेह योगियामाइ आवि तुलानी॥
भनहिविद्यापति सुनहु भवानी, इहोयोगिया थिकत्रिभुवनदानी॥

---

२९४ ऐजन।

छोटि मोटि गौरी हटलो ने माने,
ठाढ़ि भेलिह ओहि वटिया पर।
वशि भेलि भवानी योगिया सँ-नौरंगिया सँ।
वशि भेलि भवानी भंगिया सँ॥
अनमोने खाय गौरी निनमोने सूतय,
भूलि रहल ओहि योगिया सँ॥

कानथि खीजथि माय मनाइनि,
कते योग कैलक धीया सँ ॥
सुवंशलाल भन सुनिय मनाइनि,
प्रीति ने करी ओहि योगिया सँ ॥

---

२९५ ऐजन ।

बुढ़वा हे रँग रसिया, जतै गौरी देखै तत हुलसिया ॥
बुढ़ारि वयस हर कँ वालक भेल, नहि घर उवटन नहिं घर तेल ॥
मँगनिक साड़ी देलन्हि ओछाय, चान सुरुज देल देहरि वैसाय ॥
भनहि विद्यापति सुनह महेशिया, हरक चरित देखि हसथि परोसिया ॥

---

२९६ ऐजन ।

देखल दिगम्बर गुणनिधी, पुरल मनोरथ सब विधी ॥
वसहा चढ़ल हर वुढ़ छथी, कान कुंडल सोहे गजमोती ॥
वेदि चढ़ि वैसलाह वुढ़ यती, जटा छिटकाओल मंडप अती ॥
विधि करै त हर घूमिखसु, ससरि खसल फनि गौरि हँसु ॥
केओ जनु किछु कहु हिनकहू, करम लिखल वर हमरहू ॥
भनहि विद्यापति गाओल, गौरि उचित वर पाओल ॥

---

२९७ ऐजन

उमाके वर अति वाउरि छवि छटा ।
भाल माल वघछाल वसन तन,
वूढ़ वड़द लटपटा ॥
भसम अंग शिर भंग तिलक शशि,
वाल भाल पर जटा ॥

तृतीयसर्ग ।

अति सुकुमारि कुमरि मोरि गिरिजा,
वर बुढ़वा पेटसहा ॥
कहे करनाट कि सुनह मनाइनि,
कथिलै करह जिउ खटा ॥

---

२९८ ऐजन ।

आइ तँ सुनिय उमा भल परिपाटी,
उमकल फिरे मुस झोरि मोरि काटी ॥
झोरि कँ काटिय मुस जटा काटि जिवे,
सिरम वैसल सुरसरि जल पिवै ॥
बेटा रे कातिक एक पोसल मयूर,
सेहो देखि देखि मोरा फनि पति झूर ॥
तँहू जे पोसल गौरी सिंह वढ़ गोटे,
सेहो देखि डरे मोर वसहा छोटे ॥
भनहि विद्या पति वाँसक सिङ्गा,
तपोवन नाचथि धतिङ्गा तिङ्गा तिङ्गा ॥

---

३०० ऐजन ।

उदनारे मोर कतै गेला ।
कतै गेला शिव कीदहुँ भेला ॥
भाँग नहिं वटुआ रुसि वैसलाह ।
जोहि हेरि आनि देल हँसि उठलाह ॥
जे मोरा कहता उदना उदेश ।
तनिकहु देव मह कँगना वेश ॥

नन्दनवन में भेटल महेश ।
गौरि मन हरषित भेटल कलेश ॥
भनहि विद्यापति उदनासँ काज ।
नहिं हितकर मोरा त्रिभुवनराज ॥

---

३०१ ऐजन ।

कोन गत होयत निवाह महेशिया ॥ ध्रु० ॥
पाँच वदन अपने प्रभु तोहें छह, आठ भुजा कखनहु थरु सतिया ॥
छवमुखकातिकगजमुखगनपति,सुनइतजगभरिभेलहरहसिया ॥
पोसथि हर एक वूढ़ वरद कैं, सिंह-पोसथि गउरी हुनि सहिया ।
कातिक पोसल मयूर मूसकैं, पोसल अजगुत शिशु गनपतिया ॥
गिरिक शिखर पर वास करह हर,घर अछइत वाहर घर रहिया ।
फल पकवान हिमत ऋषि देलन्हि, भांगचिवावथि हररंग रसिया॥
ऋषि मुनि वसथि देव सँग २ रहु, भूत प्रेत डाकिनि सह वसिया ।
द्वारपाल भैरव मन राखल, देखतहिं राक्षस खसथि मुरछिया ॥
कुमर भनथि अवरोधिविरोधल,अचरजपरिजनअचरजवसिया ।
सिंह वड़द जल पियव एकठाँ, उन्मत हर उनमत संग सथियां ॥

---

३०२ ऐजन ।

आजु महादेव कुटिअहिं सूतल , मन मन रहे पछताय गेमाइ ॥
अपने नाय उमा कहँ रहली, गेलिह घर विलटाय गेमाई ॥
अपन संग कातिक गनपतिकैं, कथिलै लेल लगाय गेमाई ।
ओ दुहु भाई विलटि बुड़िजायत, हमरा गेलिह कनाय गेमाई ॥
नन्दीकैं खोलि हाँकि कै गेलिह, विजया देल छिरिआय गेमाई ।
अपन सिंह कैं एतहि राखि देल, देखितहिं से फुफुआयगेमाई ॥

बड़रेविपति,भेल भाँग छुटल मोर, आव कोन करब उपाय गेमाई ।
कुमरसुतलशिव सपनहिआजथि.हुनिधनिसुनिबिहुसाथ गेमाई॥

---

३०३ मलार ।

बड़रे चतुर घटवरवा हे ऊधो ।
दुर सँ बजौलन्हि नाव चढ़ौलन्हि खेवि लै गेला मझ धरवा ।
नाव हिलौलन्हि मोहि डेरौलन्हि कैलन्हि अजब खेअलवा ॥
आँचर धैलन्हि मोहि झिकझोरलन्हि तोड़ लन्हि गजमोती हरवा ॥
सुकविदास प्रभु तोहर दरशको युग युग जिवे घटवरवा ॥

---

३०४ ऐजन ।

बरिसन चाह बदरवा हे ऊधो ।
खन बरिसय खन दामिनि, दमसय, खन खन बहै बयरबा ।
झिंगुर दादुर शोरे मचावत, विरह दगध मोर छतिया ॥
चारि मास हम आस लगाओल, घर नहिं मोर पियरवा ।
सुकविदासप्रभु तोहर दरशके, घुमि फिरि करत निहोरवा ॥

---

३०५ ऐजन ।

कहु ने सगुन के बतिया हे ऊधा ।
चारि मास वर्षा ऋतु गत भेल विरह दगध भेल छतिया ॥
आओन आओन पहु मोहि कहि गेल कहियो ने लिखे एक पतिया ।
सुकविदास प्रभु तोहर दरश विनु, कोना खेपव दिन रतिया ॥

---

३०६ चौमासा ।

हे रघुनाथ विश्वंभर स्वामी, कारन कवन फिरहु वन मे रे ॥

साओन सत्यकैल राज दशरथ, हरष भेल केकयि मन में रे।
विकल भेलि नर नारि अवधके, रोदन करे जननी घर में रे॥
भादव मास ठाढ़ तरुअरतर, बुन्द प्रहार लगे तन में रे।
निशि अन्हियारि कठिन अतियामिनि, दामिनि दमसि रहे घनमेंरे॥
आसिनधाय चलल मृग मारय, सीता सहित लछुमन सँग में रे।
मूर्च्छित खसे मृग प्रभुशरपीड़ित, शब्द सुनल सीता वन में रे॥
शंभुदास करुना करु सजनी, भरत जपय पुर परिजन में रे।

---

२०७ तिरहुति।

प्रथम समागम भेल रे, हठहिं रइनि विति गेल रे॥
नव तन नव अनुराग रे, विनु परिचय रस जाग रे।
से सँग पिय तजि गेल रे, यौवन उपगत भेल रे॥
आवने जियत्र विनु कंतरे, आव जिवन भेल अन्त रे॥
विद्यापति कवि भान रे, सुपुरुष ने करे निदान रे॥

---

२०८ सवैया।

हा रघुनाथ अनाथ जकाँ, दशकंठपुरी हम आइलि छी।
सिंहक त्रास महावन में, हरिनीक समान डेराइलि छी॥
चन्द्र चकोरि अहैंक सदा, हम शोक समुद्र समाइलि छी।
देवर दोष कहू हम की, अपना अपराध सँ काइलि छी॥

---

२०९ चौमासा।

साओन सदाशिव फेरत भटखी, बुन्द प्रहार लगे तन में रे।
निशि अन्हिआरिकठिनआलियामिनि, दामिनिदमसिरहेघनमेंरे॥
योगिया वनि कै रनवन फिरे, पारवती शिव के संग में रे॥

भादव सदाशिव वनबसु लंका, सोनाके खड़ाम हुनक तन मेंरे।
जो लंका तुलसी नहि साथी, भई अनाथ यही जग में रे ॥
आसिन शदाशिव बृन्दाबनमें, नाव खेवे मलहा वनि के रे।
दधि मक्खन आवेगोपी राधा, हसिहसि पारउतारे सवकैं रे ॥
कातिक सदाशिव भागीं रथे, गंग बहे हुनके तन में रे।
पापिन सखि सव कतै नहायत, धर्मक नीर यही जग में रे ॥

३१० ऐजन ।

केओ ने वुझाय कहै शिव शंकर, रूसि रहे अपने मनमें रे ॥
कातिक मास गगन उजियारी, तारा छिटकि रहै नभमें रे।
कातिक गनपति गोद हमारो, कैसे अकेलि गई बनमे रे ॥
अगहन अम्बर अंगरस छूटै, अधिक सन्देह भई मनमें रे।
छाड़ि गये मृग छाल डमरुआ, लै ने गये अपने संगमें रे ॥
पूस मास पाला बन पड़ि गेल, चहु दिशि छाय रहे वनमें रे।
हमहैव योगिनि शिवविनु भोगिनि, शिव २ रटन लगी मनमें रे ॥
शिशिरशिशिर सारि रहनिगमाई, पिया विनु माघ बड़ोरगरीरे।
मिलि गये श्यामसखा मेरो स्वामी, मन अभिलाष पुरीसगरीरे ॥

३११ ऐजन ।

कैसे खेपव विनु कामिनि दामिनि दमसत रे, सखि रे,
सुखक मास अषाढ़ आस नहिं पूरल रे ॥
दादुर करत पुकार झकार झिंगुर करु रे, सखि रे,
साओन चहु ओर घटा मोर वन कुहुकत रे ॥
भादव में मेघ घहरत मोर मन हहरत रे, सखि रे,
हरि विनु मन्दिर शून गून कते सुयिरब रे ॥

सुकविदास प्रभु गाओल सखि समझाओल रे, सखि रे,
धैरज धरु चहुमास आसिन हरि आओत रे ॥

---

३१२ फागुन ।

होरी केहन होय किछुओ ने जानी, सखी
होरी केहन होय हम नहिं जानी ॥
सब सुख लै हरि कुबुजिक संग बसे,
कह सखि कह सखि की सुख मानी ॥
उड़त अबीर गुलाल लाल सखि,
सखि सब संग हरि रमे जनुमानी ॥
केहन फागुन अबीर केहन थिक,
बुझि बुझि कै करबे बरु हानी ॥
कुमर अपन शिर विरह विपति अछि,
कुबुजिक छल हम किछु नहिं मानी ॥

---

३१३ फागुन ।

देखहु हे सखि फागु श्याम करे ॥
दश दुइ सजनि बीथि मिलि छेकय,
अबिर गुलाल व्योम उड़ि उड़ि भरे ॥
कर सँ परसि परसि कमलोपम,
सखि कपोल मृगत्रास चिहुकि धरे ॥
करथि केलि राधा नवेलि सँग,
सौतिनि से बुझि डाह भसम जरे ॥

कुमर श्याम अनमोल केलि करे,
हेरइत सुर मृग मनुज असुर तरे ॥

---

३१३ फागुन ।

हौरी आइ बुझल हमे, हरि की जान गमार ॥
वाँसक पोर वनल वासुरिया, से पिचकारि सँभार ॥
राधानयन कजल काढ़िय से, भरिभरि फेक फुहार ॥
प्रेम रंग ओ केलि वारि लै, क्रीड़थि करथि बिहार ।
अनुपम वचन कुसुम मालालै, सखिकाँ देथि उपहार ॥
हे सखि २ श्याम लला कैं, के के करे अनुहार ।
कुमर फागु अनमोल केलिकै, कत गुन करै दुलार ॥

---

३१४ लावनी ।

हँसि पुछत जनकपुर नारि नाथ, कैसे गज के फन्द छोड़ाये ॥
गज ओ ग्राह लड़त जल भीतर, लड़त लड़त गज हारो ।
सूढ़ पर्यन्त डुवन जव लागे, तव हरि नाम पुकारो ॥
भारत में भरदूलक अंडा, लै गजघंट छिपायो ।
द्रौपदि के पति राखु सभा में, चीर अमार लगायो ॥
भिलनि के वेर, सुदामा के तंडुल, रुचि रुचि भोग लगायो ।
दुर्योधन गृह मेवा त्यागो शाक, विदुर गृह पायो ॥
यह तीनों पग दियो वसुधा में, वलि पाताल पठायो ।
तुलसि दास प्रभु तुम्हरे दरशको, हँसि हँसि कंठ लगायो ॥

---

३१५ प्रभाती ।

देखोरी आली प्रेम के वश हरी ।
पूरन ब्रह्म अनादि निरंजन, उत्पति प्रलय करी ।

प्रह्लाद ताको प्रगट कीन्हो, खंभ से अवतरी ॥
भूप के गृह त्यागि मेवा, देखि ममता भरी ।
विदुर के गृह जाय प्रभुजी, भाजि भोजन करी ॥
जाहि चरनन लागु सुमिरन, से प्रभु अजतपकरी ।
ताहि ग्वालिनि कोर लै लै, मोद मंगल भरी ॥
जाहि चरनन निकसु गंगा शंभु निज शिर धरी ।
ताहि ग्वालिनि धूरि डारै, गारि दै दै लड़ी ॥
एक सर से वालि मारै, दुष्ट रावन दरी ।
ताहि यशुदा डर दिखावे, हाथ लै लै छड़ी ॥
तीन लोक तीन पग कीन्हो, भेष वामन धरी ।
ताहि यशुदा धाय पकड़े वान्हिते नहि डरी ॥
सवरि को जो सुगति दीन्हे, नारि गौतम तरी ।
हम ऐसो अधम अनेक तारो, शूर शरनन पड़ी ॥

---

२१६ ऐजन ।

श्रीगंगाजी तीरे वसु, गंगाजी के तीरे ।
करि स्नान ध्यान कै गुरुके, गावहु सिया रघुवीरे ।
आठ पहर लौ लाय निरखहु, शोभा लहरि गंभीरे ॥
कवहू खाकै शाक अलोना, कवहूँ खोआ खीरे ।
कवहू कवहू फाका परिकै, पिविकै निर्मल नीरे ॥
कवहूँ ओढ़े पाट पहम्वर, कवहू फाटल चीरे ।
जाचु कवहू न जाय काहू, राजा रंक अमीरे ॥
जसहू तसहू कसहू करिकै, धरिकै मन में धीरे ।
चारि वात कर जोरि के मांगत, लक्ष्मीनाथ फकीरे ॥

---

३१७ ऐजन ।

राखहु हो ब्रजराज लाज मोहि, राखहु हो ब्रजराज ॥
अन्धा के सुत हटलो ने माने, नगन करत मेरो गात ।
दुस्साशन मेरो चीर खिंचत है, दुर्योधन मुलकात ॥
भारत में भरदूल उवारो, आवा में मंजार ।
ग्राहग्रसित गजराज उवारो, सो गति भइ मोर आज ॥
की गरुड़ासन थकित भयो हैं, की पाशा खेलवाज ।
की रुक्मिणि संग विरमि रमतु हैं, काहे लगावतु वार॥
अगुन सदा गुन कवहुँ ने हमसे, जन्म दिये के लाज ।
सूरदास प्रभु तुहारे दरसके, हरिचरनन के आश ॥

---

३१८ ऐजन ।

अव ने चाहिये अति देरि, तुमहि प्रभु ॥
विप्र धेनु सव विकल होतु हैं, लिये असुरन गन घेरि ।
नन्द नन्दन तुअ शपथ हरीजीके, पलक हेरिय एक वेरि ॥
जेहि सुदर्शन हतौ वानासुर, ताहि सुयश लिय फेरि ।
साहेव शीर धुनत करुना करि, मिथिला होइछ अन्हेरि ॥

---

३१९ ऐजन ।

राखहू एहि ठौर प्रभु हो, राखहू एहि ठौर ॥
गहत केश कलेश वाढत, दुशासन अति जोर ।
पांचपति मोरा हारि वैठे, चीर खैंचत मोर ॥
भीष्म द्रोण कर्ण कुन्तीसुत, क्यो नहि करत निहोर ।
कपट पासा डार कौरव, राउरे हित मोर ॥

धनुष वाण हेराय कीदहुँ, गरुड़ पाँव भय खोड़ ।
चक्र काहु चोराय लीन्हे, वाहु वल भयो थोड़ ॥
सूर के प्रभु कृपासागर, चितय जनके ओर ।
वाढ़ि वसन अमार लागे, होत जय जय शोर ॥

---

३२० ऐजन ।

कौन वनगेल सिया लछुमन राम ।
कौशल्या रुदन करे शुन भेल धाम ॥
भरतमातु सुनि रामवन गेल ।
विधिक लिखल छल सेहो भै गेल ॥
इहो अपयश माता केकयि लेल ।
नृपति वुझाय राम वन देल ॥
नर अरु नारि सव तेजत प्रान ।
उजरल अवध शून भेल धाम ॥
साहेव कहाँ दुहू सुत गेल ।
तखन नयन दुहू आन्हर भेल ॥

---

३२१ ऐजन ।

जनि करु राम वियोग, माता जानकी ॥
सुतलि छलहुँ सपना एक देखल, देखल अवध केर लोक ।
दूइ पुरुष हम अवइत देखल, एक श्यामल एक गोर ॥
सेतु वान्ह हम वन्हइत देखल, समुद्र में उठत हिलोर ।
लंकापुर हम जरइत देखल, निशिचर करत कलोल ॥
तुलसिदास प्रभु तुह्मरे दरशको, मारल रावण चोर ॥

---

३२२ ऐजन ।

जानकि कौन हरै, भैया लछमन ॥
करिय इजोत कुटी भरि ताकल, आसन सून पड़ै ।
की हरि लै गेल लंकापति रावन, की बन भूलि पड़ी ॥
नितदिन आबि कुटी महँ ताकिय, जल लेने आगु खड़ी ।
तुलसिदास प्रभु तुह्मरे दरशको, बन महँ विपति पड़ी ॥

---

३२३ ऐजन ।

तीन देखल जात सखिरे ।
अरुन नयन विशाल मूरति, कंजलोचन गात ।
पिता बचन वन गमन कीन्हो, प्रोन मम लिये जात ॥
शोभो सकल बनाय विधि रचि, देखि मदन लजात ।
सुन्दर रूप कहाँ धरि बरनब, सुन्दरी एक साथ ॥
वेष मुनिवर द्रोण कटिशर, प्रवर धनु लिये हाथ ।
ऐसे सुत बनबास दीन्हो, कैसे जननी तात ॥
अवनी कठिन कठोर प्रभुजीक, चलत पाँव पिड़ात ।
आज मम पुर बसहु प्रभु जी, तुलसिमन पछितात ॥

---

३२४ ऐजन ।

भामिनि कमलनयन परदेश ।
रामलखन सिया बन के सिधारल, धैलन्हि तपसिक वेष ।
वनपत्र आसन वनपत्र भोजन, बन बन रहथि नरेश ॥
अवध अन्हार भेल रघुवर विनु, जैसे वन लागत कुहेस ।
मातु कौशिल्या करुणा करतु हैं, क्यो नहिँ करत उंदेश ॥
तुलसीदास प्रभु तुम्हरे दरशको, जाहि वन उगत दिनेश ॥

---

३२५ ऐजन ।

शिव शिव जपत मन आनन्द ।
जाहि सुमिरत विघिन विनशत ,कटत यम के फन्द ।
तीनिलोकदयाल दाता, हरत दुख ओ द्वन्द ॥
वसहा वाहन रुचिर राजित, अधिक छवि मकरन्द ।
तीन नयन विशाल राजित, भाल तिलक अरुचन्द ॥
हाथ डामरु त्रिशुल खप्पड़, जटा शोभित गंग ।
योगिया जगमगन विलसत, शैलसुता लिये संग ॥
पारवति शिव चरन वन्दत, गाय परमानन्द ॥

---

३२६ ऐजन ।

सुरसरि सेवि मोरा किछु नहिँ भेल ।
पवित्र गंगाजल भागिरथ लै गेल ॥
जखन महादेव कैल गंगा दान ।
सुन भेल जटा मलिन भेल आंग ॥
उसरल हाट ओ डाली दोकान ।
जाहि वाटै ओती, सुरसारि धार ॥
छोट मोट भागिरथ छितनि कारपर ।
सेहो कोना लौताह सुरसीर धार ॥

---

३२७ ऐजन ।

जय गंगा जी जय जग जननी, जय संतन सुखदाई ।
घोरधार निर्मल गंगाजल, कतेक अधम तरिजाई ॥
चारि पदारथ अहि जग जीवन, वेद विमल यश गाई ।
भक्त भगीरथ जनके कारण, प्रगटि अवनि महँ आई ॥

तेज प्रताप कहाँ धरि बरनब, शंकर शीश चढ़ाई।
हेम शिखर पर लाल मनोहर, उर जयमाल सोहाई॥
ताकर नाम लेत यमकिंकर, करुना करि फिरि जाई।
कान्हरदास आस रघुबर के, हरखि निरखि गुन गाई॥

---

३२८ ऐजन।

हमने जिउब बिनुराम, जननि हे
रामलखन सिया बनकेँ सिधारल, नृपति तेजल जगधाम।
होइतहिं प्रात हमहु वन जायब, जहाँ भेटत सिया राम॥
कपटी कुटिल बसे जेहि नगरी, आगि लगौ तेहि ठाम।
मात पिता हम एको ने सेवल, सेवल सीता राम॥
हे माता तोहि बेरि बेरि बरजल, भेल विधाता बाम।
सुरनर मुनि तोहि अयश देत सब, भेल घटी के काम॥
हे माता तोहें सापिनि भेलहु, के लेतहु तोर नाम।
सेवक जन भन राम दरश बिनु, आब जिवन को काम॥

---

३२९ साहेर।

प्रथम समय नियराल शुभ दिन पाओल रे। ललना,
देवकी वेदन वेयाकुलि दगरिन चाहिय रे॥
दोसरे वेदन जब भेल कि बसुदेव जागल रे। ललना,
तेसरे हरिक प्रवेश, कलेश निवारल रे॥
दगरिन जाय जगाओल केओ ननि जागल रे। ललना,
हरि देखि रहल लजाय छुअय नहिं पाओल रे।
कोर लै लेल बसुदेव की दरशन पाओल रे। ललना,

हरि लेल हृदय लगाय नाथ* गुन गाओल रे ॥

---

३३० ऐजन ।

उतरी साओन चढ़ु भादव चहु दिशि कादव रे । ललना,,
मेघवा झड़ी लगाय कि दामिनि दमसय रे ॥
रिमिक झिमिक बुन्द बरिसय दादुर हराबत रे ललना,
देवकी वेदन बेयाकुलि दगरिनि आनिय रे ।
एतै ने दगरिनि पाविय बिधिसँ मनाविय रे ॥ ललना,,
यमुना निकट एक गाम ततै वसु दगरिनि रे ।
जबे जनमल यदुनन्नन बन्धन छूटल रे । ललना,,
फुजि गेल बज्र केवाड़, पहरु सब सूतल रे ॥
कीट मुकुट श्रुति कुंडल, ओढ़न पितास्बर रे ललना,,
देवकी गेलिह डेराय दैव किय देलन्हि रे ॥
जनु तोहें देवकी डेराय कि जनु पछताबहु रे । ललना,,
इहोरे वालक दुखमोचन जगत निरंजन रे ॥
रामनाथ कवि गाओल गावि सुनाओल रे । ललना,
गोकुल भेल उछाह कृष्ण जी जन्मल रे ॥

---

३३१ ऐजन ।

भय अवतार महा प्रभु राजिव लोचन यो ।
अवध नगर दुखमोचन हरषित यगभरियो ॥
छन्द । जानि जग हर्षित कुसुम वर्षित गगन जय होय यो ।
रंग हेरि निशंक नाचथि नशल दुख सब आज यो ॥

---

* नाथ=रामनाथ ।

कनक हाथ राजा दशरथ शुभ घरि लेखलरे । ललना,
पुरइन सहित रघुनन्दन मुख सब देखल रे ॥
मुख जाय देखल भूप दरशथ, रूप कहलो ने जाय यो ।
जड़ित जमाहिर जामा जोड़ा देथि दान वजाय यो ॥
कोर कैल कौशिल्या रानी नार छिलाओलरे । ललना,
सगरि अयोध्याक दगरिन छेदाओन पावल रे ॥
पाविकै गज हेम हीरा लाल मोती माल यो ।
अवतरल रघुकुल नगर नायक शुभक दीन दयाल यो ॥
घर घर नगर क भामिनि मंगल गाओल रे । ललना,
पुलक भरल तनु देह दहोदिश धाओल रे ॥
दहोदिशसँ धाय याचक दानहिं भेल कुवेर यो ।
अवधपुर मँ वाजत डंका लुटथि अम्बर ढ़ेर यो ॥
सुकवि इहो पद गाओल गावि सुनाओल रे । ललना,
जन्मल रघुकुल वालक जन्म उधारन रे ॥

---

३३२ ऐजन ।

उतरिसाओन चढु भादव चहुदिशि कादव रे । ललना,
दामिनि दमकि सुनाव कि दादुर हर्षित रे ॥
पहिल पहर जँ वीतल पहरू सूतल रे । ललना,
सूतल नगर क लोक केओ नहिं जागल रे ॥
दोसर पहर जँ वीतल पहरू जागल रे । ललना,
देवकी वेदने वेयाकुलि दगरिन चाहिये रे ॥
एतै कतै दगरिनि पाविय विधिसँ मनाविय रे। ललना,
पुरविल जनम तप चुकलहुँ तँ दुख पाओल ॥
जव जन्मल यदुनन्दन वन्ध छूटल रे । ललना,

जन्मल त्रिभुवन नाथ अनाथक पालक रे ॥
गदा चक्र शुभ हाथ शंख ओ पंकज रे । ललना,
गर वैजन्तिक माल कान शोभे कुंडल रे ॥
जखन कृष्ण कैं वसुदेव शिर लै सिधारल रे । ललना,
यमुना नीर अथाह थाह नहिं पाबिय रे ॥
तखन कृष्ण भेल कोपित यमुना डेराइलि रे । ललना,
क्षमहु मोर अपराध पार भल जाइय रे ॥
धनि यशुमति तोर भाग कृष्ण सुत पाओल रे । ललना,
मोदनाथ कवि गाओल गावि सुनाओल रे ॥

---

२३३ ऐजन ।

नन्दघर नौवत वाजय सुख उपजावय रे । ललना,
जन्मल श्री यदुनाथ कि नयन जुड़ायल रे ॥
आयल उवटन तेल कर्कहिया काजर रे । ललना,
नौरि वयसवा के दूध कि हुलसि पिआवय रे ॥
वाजुवन्द वेसरि पैजनि रुनु झुनु वाजय रे । ललना,
लहरय लाल पटोर कि पहिरि घर जायव रे ॥
नाच करै नट नागरि सब गुन आगरि रे । ललना,
चिठुकुर हृदय लखाय कि पलना झुलायव रे ॥
लेव निछाउरि नन्द सँ गज-रथ मानिक रे । ललना,
केओ सुठौरापान कि सुवरन वेसरि रे ॥

---

२३४ ऐजन ।

आज गोकुल एक अचंभित सुनिय अनन्दित रे । ललना,
नगर जतेक छल शोक सभक भेल खंडित रे ॥

गृह गृह नारि उताहुल कखन देखव हरि रे । ललना,
परशहोयत एक वेरि सुफल कै बूझव रे ॥
तेल उवटन लै हाथ चललि सव नागरि रे । ललना,
पहिरन अनुपम चीर सकल गुन आगरि रे ॥
जाय सवहिं नृप आँगन पुछुल नृपति सँ रे । ललना,
अघमोचन जाहि नाम ताहि दिय देखन रे ॥
आनि यशोमति मोहन कोर कै देलन्हि रे । ललना,
कवि मतिराम विचारि चरणगहि धैलन्हि रे ॥

---

३३५ ऐजन ।

गिरि जनु गिरह गोपालजिके करसँ ।
गिरि ऐसो गरुआ गोपाल ऐसो कोमल ॥ ललना,
गिरि जनु गिरह गोपालजिके करसँ ॥
सात दिवस मेघवा झरि लाधल, ललना,
एकहु वुन्द ने पड़े गिरि परसँ ।
लै लठुरी चहुदिशि सब धावे, ललना,
होउ सहाय गोविन्द जी उपर सँ ॥
सुकवि दास प्रभु तुम्हरे दरश के । ललना,
राखि लियो यदुनाथ भुजवल सँ ॥

---

३३६ ऐजन ।

पहिल परन सियाठानल सेहो विधि पूरल रे । ललना,
माँगि लेल अयोध्या के राज जनकपुर नैहर रे ॥
दोसर प्रन सिया ठानल सेहो विधि पूरल रे । ललना,

माँगि लेल दशरथ ससुर सासु कौशिल्या रे ॥
तेसर प्रन सिया ठानल सेहो विधि पूरल रे। ललना,
माँगि लेल रामचन्द्र कन्त देवर लछुमन सन रे ॥
चारिम प्रन सिया ठानल सेहो विधि पूरल रे। ललना,
माँगि लेल भरत सन धीर सेवक अंजनिसुत रे ॥
तुलसिदास सोहर गाओल गावि सुनाओल रे। ललना,
युगयुग बढ़े अहिवात ललित सोहर गाओल रे ॥

---

३३७ आरती।

आरति करिय शीशधरि प्रभु के।
ओ प्रभु त्रिभुवन पति ठाकुर छथि, आरति करिय श्रीरघुवरके।
दश अवतार धारि भल कैलन्हि, धरनिक हरथि भार उपकरिकै ॥
जगतजनक वर छमाशील सब पाप विमोचन पद नरवर के।
आरति लेत तापत्रय मेटिय कुमर कमल पद धरि रघुवरके ॥

---

३३८ ऐजन।

आरति करिय जानकी माई।
घृत भल भक्ति प्रेम वर वाती ज्ञान वारि धरु कर हरषाई।
सुर नर मुनि दुर्लभ सेवन पद से पद जलज आरतीमाई ॥
सुनु जगमातु पापमय कर मम परशति पद सब पाप नशाई।
करह कृपा आरति स्वीकृत करु कुमर पूजि पद धरु शिर नाई ॥

---

३३९ गोचर।

गोचर हमर सुनह जग माया, निर्मल करह करह मन काया ॥
पापक दिशि नहिं मन चल जाये, पति पद भक्तिदेहुजगमाये ॥

सुन्दर ज्ञान भक्ति दिय मोरा, वाभिन कें बालक दिय कोरा ॥
नील कमल सन दुहु पद तोरा, हमर ध्यान महँ लेथि बसेरा ॥
पर निन्दा अपकारक ज्ञाने, सपनहु दिय नहिं मा अनजाने ॥
कुमर हमर मन भल दिश होए, मन मलान नहिं नहिं से रोये ॥

---

३४० तीर्थपद ।

(तिरहुति)

पतिक प्रेम थिक सुरसरि धारे, पति पूजा थिक स्वर्गक सारे ॥
पति पद काशी बाँहि प्रयागे ,पति सेवा सम नहिं जप जागे ॥
शिखा शिवक गिरि मुख पशुपती, नयन विष्णु जानह अनुमती ॥
चित्रकूट नासिका उपाम, विन्ध्या चिबुक देव वसु ठाम ॥
अधर त्रिवेणी दशनहि सिन्ध ,पति मुख रवि हम धनि अरबिन्द ॥
कन्ध हिमालय गिम हरिद्वार, शोभा कन्तक अपरम्पार ॥
हम धनि छाया पति मम काया, ओ छथि पुरुष हमहु धनि माया ॥
सब ठाँ बसथि सतत रहु आगू, जे किछु माँगब हुनि सँ माँगू ॥
पति त्रिदेव पति मोक्ष समान, हुनक कतहु नहिं हो अपमान ।
कुमर कन्त छथि शिवभगवान, हमधनि हुनकर सती समान ॥

अथ श्रीजगदम्बाविनय ।

चौगमानिवासि श्रीसीताराम झा ('राम' कवि) कृत:

(१)

जननी चरण शरण हम पेलहुँ ।
बहुत सुजन अपनेक पुत्र छथि,
एक अधम हम भेलहुँ ॥ जननी० ॥
देखि चलैत कुपथदिशि हमरा,
पकड़ि किये नहिं लेलहुँ ।
पहिने कैल दुलार बहुत पुनि,
आब निठुर की भेलहुँ ॥ जननी० ॥
तव पद विसरि कुसङ्गति वश हम,
व्यर्थ काज सब कैलहुँ ।
श्रम तजि कतहु भेल किछु फल नहिं,
हारि अहिंक पथ धैलहुँ ॥ जननी० ॥
सबदिशि तव पदचिह्न देखि पुनि,
जाउ कतै भुतिपेलहुँ ।
अपन दोष वश अति दुख पाओल,
आब बहुत अकुलैलहुँ ॥ जननी० ॥
जगदम्बा ! अपने एहि जग में,
ककरा की नहिं देलहुँ ।

'राम'क वेरि दीन-जन-तारिणि !
आँखि किये मुनि लेलहुँ ॥ जननी० ॥

---

(२)

सुमिरु काली काली, रेमन ! सुमिरु काली काली ॥
लै कर धूप अछिञ्जल अच्छत चानन फूलक डाली।
उद्यत पूजनहेतु जतै नित विष्णु-विरञ्चि कपाली ॥ रेमन० ।
आनक ध्यान करै छथि तौं पुनि हाथ रहै छन्हि खाली।
अम्बक सेवक वैसल पावथि दूध दही घृत छाली ॥ रे० ।
राखथि ने मन जे जन खप्पड़-खड्गवराभय-वाली।
तनिक जीवन सौं थिक सुन्दर कूकुर कीड़ा चाली ॥ रे० ।
'राम'क से कहिया दिन होएत देखत दृष्टि-मराली।
मानस-मानसराजित देविक पैर-सरोजक लाली ॥ रे० ॥

---

(३)

देखु दयादृगकोर, देवी ! देखु दयादृगकोर ॥
घेरल संकट आबि अचानक, हेरल चारू ओर।
भेटल क्यौ नहिं आन सहायक, एक विना पद तोर ॥ देवी० ॥
ब्राह्मण धेनुक ने दुख जानय, दुर्जनवृन्द कठोर।
अम्ब ! सनातन धर्मक ऊपर, आयल आपति घोर ॥ देवी० ॥
मारि अहाँ महिषादि महासुर-मण्डल लाख करोड़।
कैलहुँ सन्तक पालन, सम्प्रति की तहि सौं अछि थोड़ ॥ देवी० ॥
सेवक-संवक मानस-कैरव-पैरसुधानिधि तोर।
होएत देखि सुखी कहिया अति 'राम'क नैनचकोर ॥ देवी० ॥

---

(४)

ककरो मन हर्षित लाख करोड़ जमा घर में रुपया यदि हो।
वनिता-जन-सङ्ग पलङ्ग सुढङ्ग क तोसक ओ तकया यदि हो॥
ककरो मन तुष्ट दही घृत भोजन; तीर्थ प्रयाग गया यदि हो।
जगदम्ब ! सुखी हमरा सन के ? अपनेक कनेक दया यदि हो॥

---

(५)

तारिणि नीलसरोजनिभे सदये उरराजितमुण्डसुमालिके !।
ठाढ़ि सदा शव ऊपर शोभित-हस्त-वराभय-खड्ग-कपालिके !॥
'रामक' ई विनती अपने क पदाम्बुज में धरणीधरवालिके ! ।
भेलि रहू नित भूपरमेश्वरसिंह क सम्मुख दक्षिण-कालिके ! ॥

॥ शुभमस्तु ॥